नेपालक पत्रकारितामे अलग पहिचान स्थापित करयबला सुजीत कुमार झा मैथिली साहित्यमे सेहो निरन्तर कलम चलारहल छथि । एकर उदाहरण अछि तीन महिना भित्तर दोसर पुस्तक आयब । हिनक पहिल कथा संग्रह 'चिडैं' बेस चर्चित रहल ।



सुजीतक निकट भविष्यमे खजुरीबाली (कथा संग्रह), जनकपुरक ५१ सफल व्यक्ति (व्यक्तित्व परिचय), भगवती राजदेवी : एक खोज (शोध) आबिरहल अछि ।

वि.सं. २०३३ बैशाख ११ गते माता जयमंगला देवी आ पिता सुखेन्द्र झाक पुत्रक रूपमे धनुषा जिल्लाक लोहना बभनगामा गाविस वार्ड नं २ मे जन्म लेनिहार सुजीत वर्तमानमे रेडियो मिथिला १००.८ मेगाहर्जक समाचार प्रमुख, मिथिला डटकम दैनिकक सम्पादक आ एभिन्यूज टेलिभिजनक समाचारदाताक रूपमे कार्यरत छथि । एहिसँ पूर्व च्यानल नेपाल टिभी, स्पेशटाइम दैनिक, राष्ट्रिय समाचार समिति, नेपाल समाचारपत्र दैनिक, लोकपत्र दैनिक, जनकपुर टुडे दैनिक, विश्वदीप साप्ताहिक सहितक मिडियासभमे सेहो काज कएने छथि । त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ मैथिलीमे स्नातकोत्तर रहल सुजीत समाजशास्त्रसँ सेहो स्नातकोत्तर कऽ रहल छथि । रेडियो मिथिला सम्मान (२०६५), एभिन्यूज इमान्दारिता सम्मान (२०६६) आ मिथिला नाट्य कला परिषद् द्वारा मिथिला सम्मान (२०६८) सँ सेहो ओ सम्मानित छथि ।


9789937239868

रिपोर्टर डायरी

सुजीत कुमार झा

रिपोर्टर डायरी

सुजीत कुमार झा

रिपोर्टर डायरी

सुजीत कुमार झा

प्रकाशक

आफन्त नेपाल

रिपोर्टर डायरी

लेखक : सुजीत कुमार झा

संस्करण : पहिल
बिक्रम संबत : २०६८
प्रति : ११००

मोल : ३००/- टका
प्रकाशक : आफन्त नेपाल
आबरण सज्जा : संजय झा

ISBN : 978-9937-2-3986-8

मुद्रक : हिसि अफसेट प्रिन्टर्स, जमल काठमाण्डू

REPORTER DAIRY

by **Sujeet Kumar Jha**

समर्पण

अपन कविता सुना-सुना कऽ साहित्य लेखन दिस प्रेरित कएनिहार हमर पिसा एवं साहित्यकार चन्द्रमोहन झा 'पड़वा'कें चरण कमलमे ।

शीर्षकक्रम

प्रकाशकीय

जनकपुरकें समस्ये समस्याक नगरीक रुपमे कहबै तऽ अतिसयोक्ति नहि हएत । जतय देखू ओतय समस्ये समस्या । फेर ओ समस्याकें जाही रुपमे उठेबाक चाही से उठि नहि रहल अछि । नेपाली पत्रकारिता क्षेत्रक चर्चित व्यक्ति सुजीत कुमार झा जखन कहलन्हि जे अपन पत्रकारिताक अनुभव समेटल एकटा किताब निकालयकें अछि तऽ हम अपनाकें रोकि नहि सकलहुँ । अहुँद्वारे जे रिपोर्टर डायरीकें किछु लेख पढने छलहुँ । एहि ठामक समस्याकें बढिया जकाँ एहिमे उठाओल गेल अछि । तुरन्ते एहि बातकें संस्थामे रखलहुँ आ आई अपनेसभक हाथमे अछि ।

आफन्त नेपालकें मैथिली सशक्तिकरण कम्पोनेन्ट अन्तर्गत रहल मैथिला भाषा आ सांस्कृति विकासक हेतु लिखल गेल ई किताब बहुत प्रशंसनीय अछि । रिपोर्टर डायरी किताब एकटा नयाँ सूचनाक बाहक हएत से आशा मात्र नहि विश्वास अछि । सरल आ सोझ भाषामे लिखल (रिपोर्टर डायरी) पुस्तक आम लोककें पढयमे कोनो दिक्कत नहि हएत । पुस्तकमे उठाएल मुद्दासभ नेपाल आ मिथिला समाजकें यथार्थपर आधारित अछि । कनी व्यङ्ग, कनी समस्या, कनी मनोरंजन, कनी आक्रमण सभ चिज अहिमे भेटैत अछि ।

ई किताब सभकें हातमे पहुँचत, मैथिली भाषीक लेल उपयोगी सिद्ध हएत आ व्यापक स्वागत पाओत से हम सभ आशा करैत छी । अहिमे जे किछु त्रुटिसभ हएत एहिकें विषयमे औपचारिक रुप सँ सुचित कऽ देब से आग्रह करैत छी । त्रुटिसभकें अगामी संस्करणमे संशोधन करब सेहो प्रतिवद्धता व्यक्त करैत छी ।

जय प्रकाश मण्डल

संयोजक

आफन्त नेपाल

पत्रकारिताक प्रतिविम्व - रिपोर्टर डायरी

समाज आ मिडिया बीचक अन्तरसम्बन्ध बहुआयामिक होइ छै। मिडियाक वास्तविक उपभोक्ता मध्यमवर्गिय समाज अछि जे सदैवसँ ठगीक शिकार होइत रहल अछि। मिडियाकर्मी अर्थात रिपोर्टर समाजक हरेक रुपकेँ लगसँ अनूभुत करैए। सत्यसँ प्रत्यक्ष सरोकार बनै छै। मुदा प्रश्न उठै छै सत्यक अनूभुत कएनिहार सत्य सम्प्रेषण कऽ सकैए ?

एकटा रिपोर्टरक सीमाक बात कएल जा रहल अछि। कारपोरेट मिडिया घरानासँ नियन्त्रित रिपोर्टरक अव्यक्त विवशताक अनुमान कएल जा सकै छै। सामाजिक दायित्वबोध आ राजनीतिक अर्थशास्त्रक जनतव किए चाही मिडियाकेँ ? एहनमे मिडिया सामग्री संकलित सूचना नहि भऽ निर्देशित सूचना संकलन मात्र बनाओल जाइ छै। प्रकाशन आ प्रशारणक लेल ओएह सामग्री उपयूक्त मिडियाहाउस निर्धारण कएने रहैत अछि। पत्रकार अपना विवेककेँ नियन्त्रित करैए - अपन रोजगारी सुरक्षाक लेल।

नेपालमे मिडियाक संगठन स्वरुप अजिव अछि। केन्द्रियकृत संरचनाक आर्दश स्वरुप, जनताकेँ छोड़िकऽ बाँकी सभक हीतक प्रति संवेदनशील देखाइ दैत अछि। जनता चूँकी उपभोक्ता छै, तएँ मिडिया ओकरासँ बिमुख होएबाक खतरा नइ मोलि सकैए, हँ ओकर हीतक प्रथमिकता निर्धारण कऽ सकैय। मनोरञ्जन आ मुद्दा दू भागमे विभाजित आवश्यकताकेँ एतेक परिष्कृत बनाकऽ परसल जाइए जे मिडियाक एहि रणनितिक योजनासँ अपरिचिते रहि जाइए आमलोक। ओ सीमान्तकृत क्षेत्र, स्थान, जाति, भाषा-भाषी होएबाक कारण सत्ताद्वारा निर्धारित सजायकेँ भोगैए। प्रतिपक्ष अर्थात जनताक बोली मिडिया नहि बनि पबैत अछि। फरक वर्ण,थर, रुपरंङ्ग होएबाक कारण मात्र ओ खतरनाक अछि। सत्ताकेँ चुनौती देबऽबला विद्रोही, ओहन विद्रोहीसँ सम्बन्धित स्टोरी प्रकाशन आ प्रशारणक प्राथमिकतामे कोना राखल जा सकैए।

ई मिडियाक कारपोरेट संस्कारक बात भेल। ओहो सम्प्रदायिकता, क्षेत्रियता, केन्द्रियता अर्थात सत्ताक मौलिक स्वभावसँ पृथक नइ अछि। सम्प्रदायिक सत्ताक चारिम अंगक रुपमे काज करैत रहैए। मुदा पत्रकारक बात करी तँ, ओही सिमान्तकृत समाजक प्रतिनिधि भेलाक बादो अपन व्यावसायिक नैतिकता आ उतरदायित्व प्रति कत्ते सचेत अछि ? बहसक आवश्यकता अछि।

राजधानी बाहर, ओहो भाषिक आ सांस्कृतिक रुपें फरक जनकपुर सन ठामसँ पत्रकारिता कएनिहार काठमाण्डू अर्थात केन्द्रसँ निम्न क्लाशक पत्रकार तँ नइ अछि ? एहिमे दुविधाक बात नइ छै। दुनूक सार्मथ्यमे अन्तर छैहे। एकटा निर्णयक अछि, दोसर श्रमिक। एहन अवस्थामे सामाजिक सम्बन्ध आ मुद्दा सँ सरोकार मात्र एकटा पत्रकारकेँ उत्तरदायी बना सकैत अछि।

एहि भूमिकाकेँ पाछू एक्केटा उदेश्य अछि, मैथिली भाषाक साहित्यकार तथा सक्रिय पत्रकार सुजीत कुमार झाक रचनाशीलता आ पेशागत दायित्वबोधपर विर्मश करब। सुजीत कुमार झाक 'रिपोर्टर डायरी' पर किछु लिखबाक दायित्वक कारण प्रकाशन पूर्व पढ़बाक सुयोग भेटल। कोनो रचनापर बात करबासँ पूर्व रचनाकारक वस्तुगत अवस्थासँ परिचित हएब आवश्यक अछि। लेखकक परिवेश, पेशा,वर्ग, समाज आ समाज भितरक द्वन्दकेँ चिन्हित करबाक अनुभव - समग्रतामे विश्लेषित कएलाक बादे ओहि रचनाक यर्थाथ मूल्याँकन कएल जा सकैए। ताहूँमे ओहन विधा जे साहित्यिक पारम्परिक विधासँ पृथक संरचनात्मक स्वरुपमे होइक।

रिपोर्टर डायरी शिर्षकक ई पुस्तक मैथिली साहित्यमे सुजीतजीकेँ दोसर कृतिक रुपमे आबिरहल छन्हि। अहिसँ पहिने हुनक कथा संग्रह 'चिड़ै' प्रकाशित भऽ चूकल अछि। अर्थात विशुद्ध साहित्यिक लेखकक रुपमे अपन कृति पूर्वहि दऽ चूकल सुजीतजीक नविनतम् कृति व्यावसायिक अनुभव आ स्थानीय उत्तरदायित्वक दस्तावेजीकरणक पुस्तक अछि।

पत्रकार सुजीत कुमार झा अपन लगभग दू दशकक पत्रकारितामे जनकपुरक सडकपर पैदल, साइकिल आ मोटरसाइकिल स्वयं प्रयोग आ परिवर्तनक साक्ष्य मात्र नहि भोक्ता सेहो छथि । तएँ महिनसँ- महिन परिवर्तनक प्रभाव हुनका अकानल छन्हि । जनकपुरक लोक, महत्वपूर्ण स्थल, संस्कार, संस्कृति, भाषा, व्यवहार, सोच, चिन्तन, चेतना, व्यक्तिकता आ सामूहिकता सम्पूर्ण परिवर्तनकेँ बड़ा तिक्ख नजरिसँ देखलन्हि अछि ओ।

अपना एहि पुस्तककेँ माध्यमसँ सुजीतजी जनकपुर आ मिथिला समाज प्रति अपन चिन्ताकेँ अभिव्यक्त करै छथि । एकटा कलमजिवीक चिन्ता कलम द्वारा प्रकट होएबाक चाही। ओ समुन्नतीक छुच्छ कामना नइ करैत अछि। अपन कलमक माध्यमसँ अग्रगामी समाजक मूर्तरुपक आग्रही होइए। सुजीतजी एहि पुस्तकक संकलित आलेख किछु तेहने आग्रहक प्रमाण अछि।

ओ जनकपुरक सडकक दुरावस्थापर चिन्तित होइत छथि । एतिहासिक स्थलक अतिक्रमण, सेवा प्रदायक सरकारी संस्था सभक गैर जिम्मेवारी, स्थानीय संघ- संस्था, व्यक्ति प्रतिक विश्वास अविश्वास सन बहुतरास बिषयकेँ देखबाक हेतु एकटा दृष्टि निमार्ण कएलन्हि आ सार्वजनिक कएलन्हि एहि पुस्तककेँ माध्यमसँ।

एकटा श्रृजनकारक कल्पना शक्ति बहुत विस्तारितो भऽ सकैए आ कखनो अपना लगक संसारकेँ सुक्ष्मतासँ निहारि सकैए सेहो। ओहि भितरक विद्रुपताक अन्वेषण कऽ सकैए - ओएह शब्दक माध्यमसँ अर्थ ग्रहण करैए। किछु तेहने प्रयत्न सुजीतजी कएलन्हि अछि।

एखन बहुत कमे गोटेकेँ एहन सौभाग्य भेटै छै, जे जतऽ पलै बढ़ैए ओहिठाम जिविकाक आधार भेटि जाइक। ताहूँमे एहन पेशा जकर आधार जनसम्पर्क होइक । बाह्य आवरण अन्तरवस्तुमे पैघ भिन्नता होइ छैक । पत्रकार पेशागत दक्षता आ विश्वसनियताक कारण अन्तरवस्तुसँ परिचित भऽ पबैए। घटनाक रहस्य परत दर परत टूटैत चलि जाइत अछि। मुदा सम्प्रेषण करबाक लेल आचार संहिता रुपी अवरोध रहै छै। किछु अपन आ किछु मिडिया हाउसक प्रथमिकताक कारण ओहन समाचार गर्भेमे मृत्यू प्राप्त करैए। मुदा तेहन किछु सरोकारी विषयसँ पत्रकार अपनाकेँ अलग नइ राखि सकैए। अन्ततः मन्थन होइत दृष्टिकोण सहित ओहन समाचार सार्वजनिक होइत रहलैए । सुजीतजीक रिपोर्टर डायरीक बहुतरास बात हुनकासँ सम्बद्ध मिडियाक समाचार सामग्री बनि चूकल अछि। मुदा सूचनासँ समाचार, आ दृष्टिकोण पाबिकऽ थोड़े विचार सहित पुस्तकक रुप देल गेलैक अछि। एहिमे सुजीतजीकेँ इच्छा सेहो मुखरित होइत छन्हि । ओ परिवर्तनक अपेक्षा रखै छथि आ ताहि हेतु सुधारात्मक उपदेश सेहो प्रक्षेपित करै छथि ।

रिपोर्टरक डायरीमे संकलित रचना आँखिक सोझाक बिषय- वस्तु छैक। ओ नियमित रुपें आमलोककेँ देखैत छथि, ओकर उत्थान पतन आँखिक सोझामे घटित होइत रहैछ। एहन अवस्थामे एकटा लेखकक काज बड़ चूनौतीपूर्ण भऽ जाइत अछि। एहन सत्यक सामना करबाक चूनौती सुजीतजी स्वीकारलन्हि अछि।

एहन सत्यतापूर्ण स्थान आ घटना देखब, सकारात्मक परिवर्तनक अपेक्षा राखब एकटा पक्ष छै। दोसर पक्ष छैक कोनो स्थान वा घटना प्रति विचार निमार्ण, आ ठोस निष्कर्ष। अहि पुस्तकक विविध आ बहुआयामी विषयवस्तु एकर सबल पक्ष अछि। मुदा विचार निमार्ण आ निष्कर्षक हेतु थोड़े आओर आत्ममन्थनक अवश्यकता बुझाइत अछि। अपेक्षा मात्र कखनोकाल खतरनाक होइछै। एहन बिषयवस्तुपर कलम चलएबाक खतरा जखन लेखक उठबैए तऽ ओकर गहनतम अन्वेषण प्राथमिक कार्य भऽ जाइत अछि। अन्वेषण, विश्लेषण, आ निष्कर्ष क्रमशः तखन मात्र अपेक्षा समाधानक दिशामे आगू बढ़ि सकैए। मिडिया हाउसक हेतु सामाचार सामग्री निमार्णक क्रममे जे किछु भेटै छै अथवा खोजैए ओ यथावस्थामे पुस्तकमे रखबाक कोनो औचित्य नइ छै। ओ परिपक्व आ परिष्कृत भऽ कऽ मात्र अएबाक चाही - तखने पुस्तक अपन उपयोगिता सिद्ध कऽ पाएत ।

हमरा सभक समाचार सामग्री निमार्णमे दक्षता अथवा नैतिकताक अभाव अछि । समाचार आ विज्ञापन बीचक अन्तर अस्पस्ट राखऽ चाहै छी । जाहिसँ आवश्यकता पडने दूनुक नामपर प्रयोग कएल जा सकैत अछि । पेशागत इमानदारिताक परिक्षण एहने ठाम होइ छै। अपना लेखकीय सामग्रीमे अनावश्यक स्तुति शब्दसँ बचक चाही। कोनो व्यक्ति, संस्था अथवा वर्ग समूदाय प्रति आग्रह पूर्वाग्रह वा अकामकता लेखकिय तटस्थताकेँ नष्ट करैत छैक ।

देश होइक, नगर होइक, अथवा गाम सत्ता आ प्रतिपक्ष होइतै अछि। मूलरुपें प्रतिपक्षी जनता होइए - जकर स्वर दबाओल जाइ छै। जनकपुर सन ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक नगरक परिचयमे लगातार परिर्वतन भऽ रहल छै। भौतिक संरचना ध्वस्त भऽ गेल छैक। नान्हिटा ई नगर माफियाक कारखानामे रुपान्तरण भऽ गेल अछि। हिंसाक नव संस्कार विकसित भेलैए। मानवीय मूल्य टके सेर बिका रहल छै। आ संवेदना सुखाग्रस्त भऽ गेल छै। तएँ अभिव्यक्ति स्वतन्त्रतासँ आतंकक पलड़ा भारी अछि। सत्ता कायम रखबाक अथवा प्राप्त करबाक लेल समीकरणक बहुत बड़का महत्व छैक। ओकर मूल आधार यथास्थिति, कट्टरता आ अतार्किकता होइ छै। ई पुस्तक कमसँ कम एतेक संकेत जरुर दैत अछि जे नयाँ धुविकरणक, अस्तव्यस्तता आ अराजकता जनकपुरक मूल परिचय रहतै। ई वर्तमान मात्र नइ भविष्यक सेहो संकेत दैत अछि।

ई सम्पूर्ण विमर्श रिपोर्टर डायरीपर केन्द्रित अछि। सुधि पाठक जखन गहनताक संग एहि पोथीक अध्ययन करताह तँ एहन प्रश्न आ प्रश्नक उत्तर सहजहिं अन्ततः चेतनाकेँ झकझोरि देतन्हि।

हम एकटा बात स्पस्ट करब जे ई पुस्तक मैथिली भाषा साहित्यक लेल खास अर्थ रखैत अछि। मैथिलीमे प्रकाशनक दयनीय अवस्था छैके। ताहूँमे कथा, कवितासन पारम्परिक साहित्यिक विधा मात्र साहित्यकार लोकनिक श्रृजनक माध्यम छन्हि। आनो भाषाक विकासक लेल आवश्यक सम्पूर्ण सामग्री उपलब्ध रहबाक चाही।

ज्ञान, बिज्ञान, मनोरञ्जन, विशेषज्ञ सामग्री, यात्रा, निबन्ध, संस्मरणसन बहुविधाक रचना भाषाक विस्तार आ गद्यकेँ परिष्कृत बनबैत अछि। सुजीतजीक ई प्रयास विलक्ष्ण आ स्तुत्य छन्हि। आवश्यक छैक प्रचीन आ समृद्ध भाषा मैथिली शासकीय कुदृष्टिक कारण कृशकाय देखल जा रहल अवस्थामे लेखक लोकनि व्यापक आ घनीभूत रुपें विभिन्न विधाक उत्कृष्ट सृजनाक संग आबए। युवा लेखक लोकनिपर मैथिलीक भविष्य अछि। अपन अधययन आ अनुभवक समिश्रणसँ लेखकिय फलककेँ विस्तार दैत आगू बढ़ैथि।

सुजीतजी युवा पीढ़ीक एकटा कियाशिल रचनाकार छथि हुनका लेल एकटा बिशेष बात ई जे - एकटा लेखकक भूमिका अन्ततः की छै? एकटा लेखक एकटा समाज, एकटा जाति, एकटा क्षेत्र, एकटा संस्कृतिक मात्र नइ होइ छै। लेखन एहन माध्यम छै जकर प्रभाव सर्वाधिक प्रत्यक्ष आ व्यापक होइत छैक। समाजक आनो चीज अपरिर्वतनिय नइ होइ छै- ने संस्कृति ने धर्म। शब्द आ ज्ञानक अनवरत पिपाशा विस्तार एहन निचोड़ धरि पहुँचबाक लेल साधक होइ छै। प्रिय सुजीत अहि पीढ़ीक चर्चित आ सक्रिय नाम अछि। हुनक ई दोसर कृति रिपोर्टर डायरी पाठक वर्गमे लोकप्रिय हएत आ आदर पाओत। गम्भिर आ व्यापक प्रभाव सहितक रचनाशीलता आ कृति प्रकाशनक शुभकामना सहित

रमेश रञ्जन
प्राज्ञ
नेपाल सङ्गीत तथा नाट्य प्रज्ञा प्रतिष्ठान

काठमाण्डू

समयक साक्षी

नेपालीय मिथिला क्षेत्रक सक्रिय एवं सशक्त पत्रकार सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'चिड़ै' किछु मास पहिने पढने छलहुँ। एहि बीच में हुनकर पत्रकारिता सँ जुड़ल पुस्तक प्रकाशनक एकटा सुखद समाचार सेहो प्राप्त भेल। एहि समाचार संगहि भूमिका लिखबाक अभिभारा सेहो प्राप्त भेल। एहिमे दूटा प्रक्रिया देखाई पड़ैया। पहिल सुजीतजी साहित्य आ पत्रकारिता दूनु मोर्चा पर ओतबे समर्पित आ सक्रिय देखाई पड़ैत छथि। हुनकामे पत्रकारिता आ साहित्य दूनुक प्रति स्वभाविक आकर्षण छन्हि, ओ दूनु क्षेत्रमे समान एवं सहज रुपमे आगा बढि रहल छथि। इएह हुनक विशेषता

छन्हि। बहुत कम लोक दूनु क्षेत्रमे समान रुप सँ न्याय करबाक स्थिति मे रहैत अछि। सुजीत जीक इएह विशेषता हुनका समकालिन आओर संगी सभ सँ फरक व्यक्तित्व दैत छन्हि। दोसर मैथिलीमे पुस्तक प्रकाशनक क्रम बढि रहल सेहो देखबैया।

सुजीतजी जनकपुरक प्रतिष्ठित पत्रिका 'मिथिला डटकम'क सम्पादक छथि। पत्रकारितामे अखबार सँ लऽ कऽ रेडियो आ टेलिभिजनमे पर्यन्त एकसंग क्रियाशील रहैत छथि। ई पुस्तक हुनकर 'रिपोर्टर डायरी' नाम सँ प्रकाशित स्तम्भ लेखन आ किछु फुटकर आलेख सभक संग्रह अछि। ओ स्तम्भकार के रुपमे सेहो परिचय बनौने छथि। ई निक गप्प छैक कि एकटा पत्रकार सम सामयिक विषय पर अप्पन अभिमत सेहो रखैत अछि। रिपोटिङ्ग सँ कनिक फरक स्तम्भ लेखनक शिल्प अछि। जे समसामयिक घटनाक तथ्य सँ परिचित नहि रहता से सटिक टिप्पणी सेहो नहि कऽ सकैत छथि। अपन परिवेशक बारेमे जिनका बढिया सँ बुझल छन्हि, ओहिमे रुचि छन्हि, सएह स्तम्भ मार्फत टिप्पणी कऽ सकैत छथि। सुजीतजीक नाम सँ ई विशेषता सेहो जुडि गेल अछि।

हिनकर 'रिपोर्टर डायरी' क संकलन मे स्तम्भ लेख, राष्ट्रीय पत्रिका मे बहराएल आलेखसभ आ सम्पूर्ण मे सामयिक टिप्पणी - रिपोर्ताज आ विश्लेषणक संग्रहक रुप में देखल जा सकैया। 'मिथिला डटकम' मैथिली दैनिक पत्रिकामे पत्रिकाके कलेवर अनुसार एहि स्तम्भक लेल निर्धारित स्थानक परिधि मे रहि कऽ अपन बात कहय पड़ैत छैक, मुदा ओतबे स्थान मे अपन बात सटिक सँ कहि सकब सुजीत जीक लेखकीय सामर्थ्य देखबैत अछि। कालगणना मे दिनक पुनरावृति होइत रहैत अछि, घटना सभ दोहराइत रहैत छैक, मुदा विषयक नव तरिका सँ उठान करब, संग संगे साथी भाइ सभक चर्चा सेहो करब आ लोक के अपन बात सुना देब, ई रिपोर्टर डायरीक विशेषता अछि।

लेखक स्वयं सक्रिय पत्रकार छथि, सम्पादक छथि, सदिखन सूचनाकेँ बाढी मे डुबल रहैत छथि, एहि सभमे सँ स्तम्भक लेल विषयवस्तुक छनोट करब, ओकरा पाठकीय रुप देब, ई कम चुनौतीपूर्ण काज नहि छैक। ताहि लऽ कऽ 'रिपोर्टर डायरी' एकटा बढिया प्रयास मानल जा सकैया। तथ्य सभक पोखरी मे सँ विषयक छनौट करब आ सूचना सभक सार्थक प्रस्तुति करबाक जिम्मेवारी - ई एकटा नयाँ जिम्मेवारी आ भूमिकामे सुजीत जीक सफलता सेहो देखबैया। तथ्य सभक सही तरिका सँ आ सही परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत करबाक खुबी सेहो देखल जा सकैया। जर्मन समाज शास्त्री मैक्स बेबर एकटा पैघ परामर्श देने छथि। हुनका सँ पुछल गेल छलैक, 'कि कोनो मनुष्यक लेखन मूल्य निरपेक्ष भऽ सकैया?'

ओ बजला, 'मनुष्य होएबाक अर्थे अछि कि मूल्य मान्यता सँ बान्हल रहब, हमसभ कहियो धरि मूल्य मान्यता सँ अलग नहि रहि सकैत छी।'

मुदा हमसभ अपन मूल्यक प्रति सचेत रहब, तकरा लेल परिस्थितिक प्रष्टता सँ बुझब आ तथ्यक विकृत नहि होबए देब से चेष्टा तऽ कऽ सकैत छी।' रिपोर्टर डायरी बेबरक मान्यताक कसौटी पर सेहो देखय पडत।

संस्कृत मे एकटा पंक्ति छैक, 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' ई हवि, ई आहुति हम कोन देवताक अर्पित करु? यानि हमर देवता कोन छथि? एहि प्रश्नक जवाब महात्मा गान्धीक सूत्र सँ खोजल जा सकैया अर्थात ओ सदिखन अन्तिम मनुष्य (द लास्ट पर्सन)क बात कएलथि।

ओ कहलन्हि, 'जहिया कहियो अहाँ संशय मे पड़ी तऽ ओही समयमे एकटा उपाय करु, गरीब सँ गरीब मनुष्यक चेहरा मोन पारु जकरा कहियो अहाँ देखने होइ आ अपने आप सँ प्रश्न पुछु कि जे कदम अहाँ उठाबय चाहैत छी ओही आदमीकेँ की लाभ पहुँचतै ? ओहि सँ ओकरा की भेटतैक ? एहि सँ ओकर जीवन आ भाग्यमे कोन सहायता भेटतैक ? अहाँ देखब की अहाँक संशय दुर भऽ जाएत ।' अर्थात कोनो स्तम्भकारक प्रथम दायित्व 'आम पाठक' क प्रति छैक । अहाँक लेखन सँ आम पाठककेँ की फाइदा पहुँचलै ? आम लोककेँ सरोकारक विषय समेटलै की नहि ? अहाँ ककरा स्तुतिमे लिखि रहल छी ? सुजीत जीक लेखन कार्य सेहो, आम पाठककेँ सरोकार केन्द्रित बुझना जाइछ ।

कुशल पत्रकारक पहिचान इएह छैक की ओ 'समाचार सूंघा' हुए । अंग्रेजी मे एकरा कहल जाइत छैक - 'तय जबखभ ब लयकभ ायच तजभ लभधक' पत्रकारकेँ समाचार सूंघा होएबाक चाही । पत्रकार जनैया ओकर पाठककेँ की सरोकार छैक, ओकरा कोन तरहे प्रस्तुत कएल जा सकैया ? सुजीतजी मिथिला डट कमक पाठक क स्वाद बुझैत छथि तएँ सरल भाषामे टिप्पणी सभ करैत छथि । एहि मे गम्भीर विषय सभ सेहो जुड़ल रहैत छैक, मुदा बड़ा रसगर अन्दाज मे ।

साहित्यिक धरातल सँ पत्रकारिता क्षेत्रमे नव उचाई प्राप्त कऽ रहल सुजीतजीक लेल साहित्यिक रचना हिनकर लेखकीय कौशलक चमत्कृत कऽ देया कखनो काल ।

रिपोर्टर डायरी जनकपुरक मिठगर आम अछि, स्वदगर माछ अछि, ग्रहण योग्य पाग अछि, निकगर पावनि तिहार अछि, पुरान मुदा आकर्षक जनकपुरक रेल अछि, सजा कऽ रखयबला न्योतक पत्र अछि, ई कहब अतिसयोक्ति नहि । एकर पन्ना-पन्नामे पछिलका तीन/चारि वर्षक जनकपुरक टटका इतिहास छिरियाएल अछि, जनकपुरक नवका इतिहास सजाओल भार अछि ई पुस्तक । सुजीतजीक उचाई ग्रहण करैत व्यक्तित्वके स्वीकार करही टा पड़त, नवतुरिया जमातक रुपमे मात्रेटा मूल्यांकन करब कथमपि न्याय नहि । एकटा लोकप्रिय मैथिली दैनिक पत्रिकाकेँ नम्हर समय सँ सम्पादन कऽ कऽ आ ओ पत्रिकाक लोकप्रिय बनावि अपन सफलताक सामर्थ्य रेखा खिंच चुकल छथि आ स्तम्भ लेखन कऽ कऽ सेहो कीर्तिमान स्थापना कएलन्हि तएँ सुजीतजीक पत्रकारिताक चिड़ै फुनगी पर चढ़ि रहल अछि ।

मैथिली दैनिक पत्र निकालब कम कठिन नहि । प्रायः मैथिली पत्र पत्रिका बसिया निकलैया ओहन परिप्रेक्ष्यमे एक भिनसरे जनकपुर बासीक हाथ-हाथ मे पहुँचब आ चाहक चुस्कीकेँ संगे मैथिली पत्रिकाक आनन्द ग्रहण करेबाक चलन चलाबयकेँ पाछुक संघर्ष बुझब कम कठिन नहि । एकटा दोसर सन्दर्भ मे अकबर इलाहाबादी कहने छथि -

नही शेख साहिब की वह आदत
वजू की और मुनाजाते सहर की
मगर वो चाय पीकर हस्बेदस्तुर
तिलावत करते है वह 'पाएनियर' की

अर्थात पत्रिका पढबाक सौख एतेक बढि गेल अछि कि बुजुर्ग लोकसभ सेहो प्रातः कालमे भजन - पूजा छोड़ि कऽ अखबारक पाठ करैत छथि, जनकपुरक सन्दर्भमे अकबर इलाहाबादीक काव्योक्ति कनि सुधार कऽ कऽ कहल जाय तऽ, जानकी मन्दिरक दर्शन कऽ कऽ लौटनिहार जनक चौकक पत्रिका दोकानमे एक बेर पहुँचबेटा करैत छथि, वा घर पहुँचि कऽ मिथिला डटकम खोजैत छथि । ई कहल जा सकैया पछिलका समयमे जनकपुरमे मैथिली अखबार पढब रुचि विस्तार भऽ रहल छैक । मिथिला डटकम मे 'रिपोर्टर डायरी' आ 'बिगुल' स्तम्भ तहत ई संकलनक बहुत रास सामग्री प्रस्तुत भऽ चुकल अछि ।

संचारमाध्यमक समाजक प्रति की दायित्व छैक ? संचारमाध्यमक कर्तव्यक सम्बन्ध मे पहिल प्रश्न ई पुछल जाइत छैक की मिडियाक कर्तव्य केवल जनमतक प्रकाशन/प्रसारण अछि की जनमतक मार्गदर्शन ? साँच पुछल जाए तऽ संचारमाध्यमक तीन प्रधान कर्तव्य अछि - पहिला तऽ जनमतकेँ प्रदर्शित करब, दोसर जनमत तैयार करब, तेसर जनमतक मार्गदर्शन करब । मिडियाक काज इतिहासकेँ बनबैत चलब सेहो अछि । छोट-छोट बात सभ सेहो इतिहास बनबैया । स्वयं जनतामे, जनप्रतिनिधि सभमे, आ सरकारी संस्थासभमे घुसल विसंगति सभक विरुद्ध जनमत तैयार

कएनाई सेहो मिडियाक कर्तव्य अछि। मानहानिक कानून सँ बँचि कऽ जहाँधरि अभिव्यक्त कएनाइ सम्भव भऽ सकैया पत्रकारकेँ जएबाक चाही।

सरकार आ मिडिया दुनुक काज जन-रंजन, राष्ट्र निर्माण, विश्व कल्याण अछि। लोकतन्त्रक पृष्ठभूमिमे जे दायित्व सरकारक छैक वएह प्रेसोकेँ छैक। प्रेसकेँ इहो कारण सरकार सँ बेसी जिम्मेवारी भऽ सकैया की सरकार तऽ बदलैत रहैत छैक, मुदा प्रेस तऽ निरन्तर सक्रिय रहैया।

जेहन जनता होइत छैक तेहने सरकार बनैत छैक। ई सच्चाई प्रेस पर सेहो चरितार्थ होइया, किएक कि नागरिकक नैतिक एवं मानसिक स्तरक अनुरुपहि ओहि देशक प्रेस रहैत अछि। मुदा ई बात ओहि देश मे पाओल जाइया जतय केँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रताक आधार पर लोकतन्त्र स्थापित अछि। जतय राजनीति वा अर्थनीति नियोजित रहैत अछि, ओतय सरकार वा समाचार पत्र सेहो पूर्व नियोजित चलैत अछि। सार्वजनिक विषय पर सार्वजनिक रुप सँ चर्चा करए लेल प्रत्येक नागरिककेँ अवसर भेटबाक चाही। ई चर्चा मात्र एकहि माध्यमकेँ द्वारा निर्भिकता पूर्वक भऽ सकैया ओ अछि संचारमाध्यम। ताहि लेल तऽ कहल गेल अछि कि संचारमाध्यमक स्वतन्त्रता केवल पत्रकारिता सँ जुडल लोकक लेल मात्रेटा सरोकारक विषय नहि छैक। अपन विचार प्रकट करबाक स्वतन्त्रता कोनो व्यक्तिक स्वतन्त्रता सँ जुडल विषय छैक। प्रत्येक व्यक्तिक संचार माध्यममे अपन मत प्रकाशित- प्रसारित करबाक स्वतन्त्रता होएबाक चाही मुदा ई अधिकार पूर्णतया निरपेक्ष नहि छैक। वास्तवमे सभ अधिकार सापेक्ष होइत छैक आ ओकरा प्राप्तिक लेल कतेको मर्यादा सभक पालना करय पडैत छैक। रिपोर्टर डायरी लिखनीहार सदैव अप्पन मर्यादाक लक्ष्मण रेखा बीच रहि कऽ कलम चलौने छथि।

पत्रकारक लेल विश्वसनीयता सभ सँ पैघ पूँजी छैक। कोन बात कोन पत्रकार कहलकै, ई सभ सँ बेसी महत्व रखैत अछि। विश्वसनियता कोनो लौटरी जकाँ नही प्राप्त भऽ जाइत छैक। ई रातारात होवयबाला चीजो नहि छैक। एकटा नम्हर समयमे पत्रकार विशेषक सम्बन्धमे एकटा छवि जनमानस मे उभरैत छैक तकरा लेल पत्रकारकेँ तऽ बहुत नम्हर परीक्षा सँ बहराय पडैत छैक। तखन जा कऽ विश्वसनियता प्राप्त होइत छैक। जे पत्रकार तथ्यक पाछु रहैया, विभिन्न तथ्य सभक आलोक मे सत्यक खोजी करैया आ ओकरा जनताके बीचमे प्रस्तुत करैया सएह पत्रकार जनताक अभिन्न मित्र कहबैया। 'लोकमित्र' पत्रकार बनबाक लेल जनताक मन जीतय पडैत छैक। ई काज पूर्वाग्रही आ स्वार्थी लेखन सँ सम्भव नही छैक। एडी उठा कऽ कोनो नम्हर बनक कोशिश करे तऽ ओ टिकाउ नहि होइत छैक। दुनिया बहुत छोट छिन भऽ गेल छैक। अहाँके हातमे जौं कलम अछि तऽ जनताक हात मे मूल्यांकन करबाक स्वतन्त्रता छैक, मूल्यांकन करबाक अधिकारकेँ अहाँ हरण नहि कऽ सकैत छी।

संकलित विषयवस्तुसभमे बहुत रास जनकपुर आ पासपडोसमे केन्द्रित अछि। एकर बावजुद एहि आलेखसभ मे जाहि विषयवस्तुक चर्च कएल गेल अछि, ओहिमे किछु राष्ट्रिय अछि। जनकपुरमे उठि रहल लोक हिलोरक कम्पनक रेखाचित्र अछि, रिपोर्टर डायरी। एखनुका समयमे पत्रकार विशेष अप्पना क्षेत्रमे काज करैत-करैत, जौं ओकरा मे जिज्ञासु भाव छैक, विश्लेषण करबाक क्षमता छैक, समयकेँ चिन्हि सकैया तखन ओ अप्पना क्षेत्र विशेषक मामिलामे दक्षता सेहो प्राप्त करैया। एहन अवस्थामे एकटा निक रिपोर्टर आ सम्पादक अप्पन रुचीक विषयमे निपुणता प्राप्त करैया, जकर उपयोग पुस्तक लेखनमे सेहो करैया। एहि प्रवृतिक पदयात्री एखन सुजीतजी देखल गेला। रिपोर्टर डायरी प्रकाशन सँ जनकपुर आ मैथिली पत्रकारितामे एकटा नयाँ इतिहास जुडत।

लेखकक निजत्व देखय बला बहुत रास प्रसंगक बीच विभिन्न क्षेत्रक आ स्तरक लोकक मनोभाव पढल जा सकैया। एकटा पत्रकारकेँ कोन तरहे घटना सभ प्रभावित करैत छैक, से देखल जा सकैया। 'महासंघक चुनाव आ सुनधाराक आनन्द' शीर्षक लेखमे पत्रकारिता आ एकर संगठनमे पनपैत विसंगति सभक प्रति कठाक्ष करैत ओ लिखैत छथि, 'काश हमहुँ सभ दारु पिबैत रहितहुँ, तऽ कतेक पिबतहुँ कतेक पिबतहुँ .... '

किए एतेक महंग भऽ रहल अछि पत्रकारक चुनाव ? सभ्य समाजक कल्पना करयवला कलमजीविसभ स्वयं विकृति बढावयमे तऽ नहि लागल अछि।

ई संग्रह ओही समयमे प्रकाशित भऽ रहल अछि जखन मिथिला पैघ संक्रमण सँ गुजरि रहल अछि। कतेको समय एहन देखल गेल जखन राजनीतिक दल, नागरिक समाज, गैससकर्मी, मिडिया आ राष्ट्रसेवक वर्गक भूमिका पर

आओर पक्ष द्वारा आंगुर ठाढ़ कएल गेल । सभ क्षेत्र मे अप्पन भूमिका आ महत्व पर मन्थन होएबाक चाहि उपदेश आएल । सुजीतजी वार्तमानक जनकपुरिया पत्रकारिता मादे नेपालीय पत्रकारिताक विसंगति सभकें पूर्ण इमान्दारीक संग चित्रित कएने छथि, एहि सँ हुनकर उठान कएल गेल विषयवस्तुक विश्वसनियता बढाओत । केवल उपदेश देल सामग्री लोक नहि रुचिवैया, जौं अपना सँ जुडल आलोचना स्वयं कएल जाइया तखन लोकविश्वास बढैत छैक ।

सल्लाह आबि सकैया, एहन लिखबाक चाहि, एहन रहितै तऽ नीक, ई छुटि गेल, संकलन बहरयबाक समय नहि भेल छलैक आदि । किछु लोक कहि सकैत छथि, एहि मे कोनो नव विषयवस्तु नहि छैक जे संकलन रुप मे निकालल जाय । मुदा हम जोड सँ कहब, सुजीतजी निक कऽ रहल छथि, निक कएलाह, जनकपुरिया पत्रिकारिताक एहि सँ निक खुराक भेटतै, मैथिली पत्रकारितामे नव इतिहास जुटतै । जखन किछु काज हेतै, तखन नहि विमर्श हेतैक, लेखा जोखा हेतैक, प्रभाव आ परिणामक आकलन कएल जेतैक । सुजीतजी एकटा लकिर खिचलाह अछि, एहि सँ पैघ खिचि कऽ आगु बढी से नीक कि 'ई - ओ' कहि-कहि आत्मरति कएल जाए से निक । अहि प्रयासक बाद ऐहन प्रयासक क्रम बढे निक समालोचना आवय से आवश्यक अछि, एहि सँ मैथिली आ पत्रकारिता दुनुकें लाभ पहुँचतै ।

किछु मामिला मे सुजीतजी आगा बढि गेला । नेपालमे नम्हर समय धरि मैथिली दैनिक पत्रक सम्पादन करबाक इतिहास बनौलन्हि । मिडिया सँ सम्वद्ध पुस्तक बहरौलन्हि । बहुत खुब । जनकपुर नगरक अप्पन विशिष्ट पहिचान छैक । एहि ठामक पत्रकारिताक अप्पन ऐतिहासिकता छैक, एहि ठामक पत्रकारितामे प्रतिष्पर्धा सेहो बेसिगर छैक, एहि सभक बीच अप्पन मौलिक व्यक्तित्व आर्जन करब कम कठिन नहि । सुजीतजी निक दिशामे बढि रहल छथि, हिनकर पत्रकारिताक भविष्य सुदीर्घ छन्हि । आनो ठामक पत्रकारसभकें सेहो एहि मार्ग पर चलबाक लेल प्रेरित करतैक से हमर विश्वास अछि ।

पत्रकारिता जनभावनाक अभिव्यक्ति, सद्भावक उद्भूति आ नैतिकताक पीठिका अछि । संस्कृति, सभ्यता आ स्वतन्त्रताक वाणीक संगहि ई जीवन मे अभूतपूर्व क्रान्तिक अग्रदुतिका सेहो छैक । एखन मिथिला मे प्रतिवद्ध आ जिम्मेवार पत्रकारिताक आवश्यकता अछि । एहि पुस्तकक बहाने जवावदेह पत्रकारिता पर बहस चलैक आ जनकपुर परिवृतक सरोकारसभ पर खुला एवं स्वस्थ विमर्श भऽ सकैया, एहि मे ई पुस्तकक प्रकाशनक सफलता अछि । अन्तत: हम इएह कहब , 'सुजीतजीक पत्रकारिता आओर विश्वसनीय हुएँ आ प्रसिद्धिक फुनगी पर चढैत चलि जाइक ।'

-चन्द्रकिशोर
वरिष्ठ पत्रकार
वीरगंज, नेपाल

पत्रकारिताक अनुभव झलकि रहल

सुजीतजी कोनो समयमे हमर छात्र सेहो रहथि । हुनका कक्षा ९ मे हम पढौने छलहुँ । मुदा एखन सुजीतजी हमर बहुत नजदिकक मित्र छथि । प्रत्येक दिन हुनका सँ भेटघाट आ बातचित कएनाइ एवं विभिन्न विषय पर चर्चा परिचर्चा कएनाइ हमर सभक दिनचर्या अछि । अपन घर आ पत्रकारिता पेशाक बाद हमसभ अनेको विषय पर चर्चा परिचर्चा करैत रहैत छी । २०५२ सालके बाद हम रेडियो नेपालमे आ सुजीतजी राससमे काज शुरु कएलहुँ तहिए सँ घनिष्टता बढल ।

बादमे हमसभ जनकपुर टुडेमे सेहो संगे-संगे काज कएलहुँ । सुजीत जी के काज करबाक तरिका सँ हमहुँ किछु-किछु प्रेरणा लैत छलहुँ । काज करयमे सुजीत जी कहियो आसकैत नहि कएलथि । कोनो काजकें जिम्मेवारी लेलाक बाद ओ पुरा कऽ कऽ छोडैत छलथि । जनकपुर टुडेमे नियमित रुप सँ अन्तरवार्ता लेबाक जिम्मेवारी ताहि समयमे सुजीत जीके देल गेल रहन्हि । जाहिमे हमसभ बहुतो ठाम साथे सेहो गेलहुँ ।

बादमे पत्रकारिताक स्वरुप आ गति जहिना-जहिना परिवर्तन भेलैक सुजित जी अपन कामकाज आ गतिमे सेहो परिवर्तन करैत गेलाह। एहिबीच सुजीत जी बहुतो पत्र पत्रिकामे सेहो काज करैत गेलाह आ ओ स्पेस टाइम एवं च्यानल नेपालमे प्रवेश कएलथि हमहुँ ओहि समयमे इमेज च्यानलमे प्रवेश कएलहुँ।

एखन ओ एभि न्यूजकेँ जनकपुर सम्वाददाताकेँ संगहि रेडियो मिथिलाक समाचार संयोजक एवं मिथिला डटकम दैनिक मैथिली पत्रिकाकेँ सम्पादक छथि तऽ हम सेहो इमेज च्यानलकेँ सम्वाददाताकेँ संगहि जनकपुर एफ.एम. आ तहलका नेपाल पत्रिकामे सम्पादककेँ रुपमे काज कऽ रहल छी।

सुजीत जी कर्तव्यनिष्ठ भऽ निरन्तर काज करैत रहलाह, ताहिकेँ प्रतिफल अछि जे सुजीत जी एखन अहि क्षेत्रक युवा साहित्यकारकेँ रुपमे अपनाके स्थापित करएमे सफल भेल छथि आ हुनक एकटा कथा संग्रह 'चिडै' सेहो प्रकाशित भऽ गेल अछि।

'चिडै' पढबाक मौका भेटल जाहिमे हमरा अहाँक समाजक महिलाकेँ विभिन्न रुपमे देखएबाक प्रयत्न कएल गेल अछि। एखुनका समाजकेँ सजीव चित्रण कएल गेल 'चिडै' कथा संग्रहमे किछु दार्शनिक आ मनोवैज्ञानिक बातसभकेँ सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि तऽ विभिन्न कथा मादे समाजकेँ परिवर्तनकेँ अभिलाषा सेहो राखल गेल अछि।

ताहि सँ सुजीत जीकेँ मात्र पत्रकारे के रुपमे प्रस्तुत कएनाई गलत हैत ओ पत्रकारकेँ संगहि साहित्यकार सेहो छथि तऽ एकटा चिन्तककेँ रुपमे सेहो आगा बढबाक पथ पर छथि।

सुजीत कुमार झाद्वारा लिखित 'रिपोर्टर डायरी' पाण्डुलिपि पढबाक मौका भेटल जाहिमे सुजीत जी विभिन्न समयमे कएने पत्रकारिताकेँ अनुभव प्रष्ट रुप सँ झल्कैत अछि। जनकपुर क्षेत्रक भ्रष्टाचारकेँ बात हुए वा जनकपुरक टुटल-फुटल आ गन्दगी सँ भडल सडककेँ बात हुए, चाहे जनकपुरक विकास निर्माणक लेल कएल गेल प्रयासक बात हुए सभकेँ समेटल गेल अछि अहि रिपोर्टर डायरीमे। एतबे मात्र नहि जनकपुर क्षेत्रक विभिन्न व्यक्तित्वसभ जे समाजकेँ विभिन्न क्षेत्रमे अगुवाकेँ रुपमे किछु काज आगा बढा रहल छथि तिनका सभकेँ बारेमे सेहो महत्वपूर्ण प्रयाससभकेँ चर्चा कएल गेल अछि तऽ जनयुद्ध कालमे अथवा शाही शासन कालमे कएल गेल विभिन्न रिपोर्ट आ देखल गेल विभिन्न समस्यासभके बारेमे सेहो स्पष्ट चित्रण कएने छथि रिपोर्टर डायरीमे। रिपोर्टर डायरी एकटा नयां कृति मात्र नहि एहि क्षेत्रक लेल एकटा नयां विषय वस्तु सेहो हएत से हमरा विश्वास अछि। किएक तऽ बहुतो गोटे कथा कविता तऽ लिखैत छथि मुदा समाजक विभिन्न आयामकेँ एकहि ठाम समेट कऽ बड कम लिखल जाइत अछि। ताहि सँ किताब एक्केटा रहत मुदा बहुते रस आ विषय अछि रिपोर्टर डायरीमे।

ओना किछु समय बाद अपनेसभकेँ ई किताब हातमे अएबे करत तऽ सुजीत जी के सोच एवं लेखनकेँ विशेषता एवं तीक्षणता अपनेसभ बुझिएटा जाएब ।

अन्तमे सुजीत जी आओर विभिन्न विधामे अपन कलम चलबैत रहथि आ एहि समाजक लेल नव-नव कृति प्रस्तुत करैत रहथि से कामना अछि।

रामआशिष यादव
अध्यक्ष
नेपाल पत्रकार महासंघ
धनुषा

किछु हमरो

सुजीत कुमार झा

'चिड़ै' कथा संग्रह प्रकाशित भेला तीन महिना भितर दोसर कृति प्रकाशित करब हमरो आश्चर्य लागि रहल अछि। हमरो विश्वास नहि छल, एतेक जल्दी हमर दोसर कृति आओत। 'चिड़ै' कथा संग्रहकेँ जे 'आशिर्वाद' भेटल एकरे परिणाम अछि 'रिपोर्टर डायरी'। चिड़ैकेँ प्रति रिस्पोन्स देखौनिहार सम्पूर्ण पाठक, समालोचक, शुभेच्छुकमे आभार प्रकट करैत छी।

हम ई रिपोर्टर डायरीकेँ खासमे कोनो साहित्यिक महत्वकेँ पुस्तक सँ बेसी जनकपुरक पत्रकारिताक क्रममे भेल अनुभव वा रिपोर्टरक दैनिकी कहय पसिन करब। जहिना मेडिकलक तैयारी करिते-करिते पत्रकार बनि गेलहुँ तहिना रिपोर्टर डायरीकेँ लेख सभ कोना लिखाएल पत्ते नहि चलल।

पत्रकारितामे संयोगे सँ एलहुँ। मेडिकल तैयारीकेँ क्लास कऽ कऽ विकेएलडी सरकेँ घर सँ अबैत काल २०५२ सालमे जानकी मन्दिर गेल छलहुँ। ओहिठाम झुलन महोत्सव चलि रहल छल। एक दर्जनकेँ समूहमे युवासभकेँ देखलाक बाद ओत्तय रहल पुलिस सभ हमरा सभकेँ पकड़लक तऽ नहि मुदा बहुत फैइज्जत कएने छल। दोष किछु नहि, मुदा तैयो फैइज्जत ! एकर सिकायत हमसभ पुलिस कार्यालयमे सेहो करय गेल छलहुँ। मुदा दुःखके साथ एखनो लिखय पडि रहल अछि, ओ कार्यालयमे हमरासभके प्रवेशो करय नहि दएने छल।

एकर बाद कि कएल जाय हमसभ सोचिए रहल छलहुँ कि हमरे दिमागमे पत्रिकामे समाचार छपाओल जाय आएल आ नवराज बस्नेतके माध्यम सँ वरिष्ठ पत्रकार विएम खनाल लग पहुँचलहुँ। ओ अपन 'दैनिक छहरा' पत्रिकामे हमरे नाम सँ समाचार छपा देलन्हि। एकर बाद हुनका सँग घनिष्टता बढल आ पत्रकार बनि गेलहुँ। आदरणीय गुरु खनालके हम जीवन भरि नहि बिसरि सकैत छी। तहिना व्यावसायिक पत्रकारिता हम जनकपुर टुडेके सम्पादक बृज कुमार यादव सँ सिखलहुँ। हमरा ई बात कहयमे कतहुँ दिक्कत नहि होइत अछि चन्द्रमोहन झा'पड़वा' आ अशोक दत्त सँ भेट नहि भेल रहथि तऽ साहित्यकार नहि होइतहुँ तहिना विएम खनाल आ बृज कुमार यादव सँ भेट नहि होइतएँ तऽ पत्रकार नहि बनितहुँ। आदरणीय रामअशीष यादव, राजेश कर्ण , अनिल विश्वबन्धु, श्याम सुन्दर शशि , निमिष झा , धीरेन्द्र प्रेमर्षि, धर्मेन्द्र विह्वल, गोपाल झा, हिमांशु चौधरी, सुनिल मल्लिक, जीवनाथ चौधरी आ अनुराग गिरीके सेहो हमर पत्रकारिताके आगा बढाबयमे बहुत योगदान रहल अछि।

रिपोर्टर डायरी 'चिड़ै' कथा संग्रह सँ पहिने प्रकाशित करी कए गोटे सल्लाह दएने छलथि। मुदा साहित्यिक यात्रा कथे लेखन सँ शुरु भेल छल। तएँ हम ओकरे प्राथमिकता देलहुँ।

खैर इहो निकलिए गेल। रिपोर्टर डायरी हम लिखने मात्र छी मुदा लिखाबय सँ लऽ कऽ बजारमे आनय धरि सुधिरचन्द्र आर्चाय, अमरकान्त अमर, अतिश कुमार मिश्र, सिमा चौधरी, खुश्बु झा, संजिव कुमार झा, विनोद कुमार महतो, संजय झा, जितेन्द्र झा, नित्यानन्द मण्डल, राजेश कर्ण, राकेश कुमार सिंह, ईश्वर चन्द्र झा, रोशन कुमार झा, मुकेश पाठक, जयन्त ठाकुर, शैलेन्द्र झा, अजित तिवारी, देवकुमार यादव, हरि प्रसाद मण्डल, अमरचन्द्र अनिल, उमेश साह, प्रमोद चौधरी, रुपेश कुमार सिंह , सोहन सिंह, रवि सिंह, नविनकुमार मिश्र, शत्रुघ्न प्रसाद साह, धीरेन्द्र यादव, चन्द्रमोहन झा 'पड़वा' कैलाश दासके महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि।

कितावके भूमिका लिख सहयोग कएनिहार आदरणीय रमेश रञ्जन, चन्द्रकिशोर आ रामअशीष यादवके हृद्य सँ श्रद्धा व्यक्त करैत छी।

हमर माय जयमंगला देवी, पिता सुखेन्द्र झा, ससुर विनयकान्त ठाकुर आ उदय कान्त ठाकुरकेँ योगदान सेहो नहि बिसरल जा सकैत अछि। ओ सभ कोना शीघ्र किताब निकलैक तकरा लेल बेर-बेर दवाब दैथि। मैथिली

साहित्यकार चन्द्रेश, मैथिली आन्दोलनी बैद्यनाथ चौधरी बैजु, रामभरोष कापडि, परमेश्वर कापडि, विजय दत्त सेहो प्रेरणाके काज कएने छथि ।

ओना जँ आफन्त नेपालक संयोजक जयनारायण मण्डल प्रकाशनक लेल तैयार नहि भेल रहितथि तः ई पुस्तक बजारमे नहि अबैत । संयोजक मण्डल आ आफन्त नेपाल प्रति सेहो आभार व्यक्त करैत छी ।

ई पुस्तकके, हमर पहिल पुस्तक जकाँ स्नेह भेटत से आशा रखैत छी । सँगहि अपनेसभक सल्लाह सुझावक प्रतिक्षा सेहो रहत ।

sujitjha100.80@ gmail.com

जय मिथिला ! जय मैथिली!

टावर बनबे करतै मुदा नगरकें विकास ....

रामटावर बनयमे अबेर किएक नहि भऽ जाउ मुदा ओ टावर, स्थान मात्र नहि एकटा आशाक केन्द्र सेहो अछि। ओहि टावरमे किछु नहि, किछु निर्माण होइते रहैत अछि। निर्माणमे लागल रहब तऽ एक दिन टावर बनबे करतै, हमरा विश्वास अछि। गति किया नहि अस्थिर होउक।

हम अपन घर सँ अफिस महावीर चौक बाटे गेलहुँ तऽ टावरकें ठीक पाछु बाटे जाइत छी आ विद्यापति चौक बाटे गेलहुँ तऽ टावरक ठीक आगा बाटे। फेर अबैत काल टावर पडबे करैत अछि। आओर जे किछु होउक, केहनो अवस्था होउक कि संयोग छैक, एक बेर टावरपर नजरि परिए जाइत अछि।

राम चौकपर कहियो किओ भेट गेला तऽ हम ठीक टावरकें नीचा ठाढ भऽकऽ बातचित करय लगैत छी। लोक एहिपर ओतेक ध्यान नहि दैत हेता मुदा हमर प्रयास रहैत अछि टावरे लग बातचित करी। नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाक एहिबेरक चुनाव सँ एक राति पहिने महासंघ चुनावक किंगमेकर अशोक रौनियार संग हम श्याम भाइजी (श्याम सुन्दर शशि), राजेश कर्ण आ राम अशिष यादव एक चरणक बात अहि टावरकें नीचा कएने छलहुँ।

एक दिन मिथिला नाट्य कला परिषद (मिनाप) ठीक टावरकें बगलमे सडक नाटक कऽ रहल छल। हमहुँ देखैत रही। किछु व्यक्तिकें देखलियै टावरकें उपरमे चढिकऽ नाटक देखि रहल छलैक। टावरपर चढि उतकिरना कऽरहल लोक सोचत ई मोनमे नहि अबैत तऽ हमहुँ टावरपर चढि ताली बजा-बजा कऽ नाटक देखितहुँ।

दू चारि वर्ष सँ रामटावरकें प्रत्येक वर्ष दू तीन टा समाचार एभि न्यूज टिभीमे करैत छी, ओतबे रेडियो मिथिलामे आ मिथिला डटकममे सेहो कम नहि। हमर इच्छा होइत रहैया, राम टावरकें बराबर समाचारसभ मिडियामे अबैत रहैक।

हम समाचार जतेक लिखैत छी ओतबे अहि टावरकें लऽ कऽ तगेदा। राम युवा कमिटीक अध्यक्ष सोहन ठाकुर, महासचिव शम्भु प्रसाद साह 'प्रेमी', पूर्व अध्यक्ष जितेन्द्र प्रसाद साह, वरिष्ठ निर्देशक उमेश साह आ पूर्व अध्यक्ष प्रमोद चौधरीकें बराबर खोचारैत रहैत छी। एक दिन प्रमोद दाजु (प्रमोद चौधरी) कें रामटावर बड अबेर भऽरहल छैक पुछलियन्हि, ओ किछु नहि बजला। हमरा भेल ओ हमराद्वारा बेर-बेर एकर चर्चाकें लऽकऽ खौजा गेला अछि। हम तत्काल प्रसंग बदलि लेलहुँ। मुदा एक दू दिनक बाद हम ओ टावरकें निर्माण सम्बन्धि फेर हुनका सँ जिज्ञासा रखलहुँ।

जहिया रामटावरकें शिलान्यास नहि भेल रहैक तहियो एकर निर्माण जल्दी होउक हमर सोच छल। जहिया एहिठाम रामटावर बनतैक तकर जानकारी मात्र तत्कालीन अध्यक्ष विजय साह देलन्हि तऽ हम हुनका ओहि दिन सँ कहिया शिलान्यास करबैक कहय लागल छलहुँ। कएटा अध्यक्षक कार्यकाल किएक नहि देखि लेने होउक मुदा टावर निर्माण अन्तिम चरणमे पहुँच गेल अछि। भलहि एक वर्ष किएक नहि लगैक आब टावर अवश्य बनि जयतैक से पक्का पक्की भऽ गेल छैक।

हम एहि टावर सँ जनकपुरक विकास देखय चाहैत छी।

यदि लोक एकटा अठोट लऽ लय तऽ सभ चीज भऽ सकैत अछि। जनकपुरक सफाइ सेहो कोनो भारी बात नहि, ढल निर्माण, सडक निर्माण सेहो असम्भव नहि। भ्रष्टचारी कर्मचारी सेहो तह लागि सकैत अछि। कनेक अबेर हेतैक। हाकिम पर हाकिम बदलि जाइक। एहि ठाम जतेक भाषण होइत छैक कनी मात्र काज शुरु भऽ जाइक !

जहिना टावर बनाबयकें लेल बाहरकें फण्ड नहि आनय पडलैक तहिना एडिबी, भारत सरकारक सहयोग नहि आनय पडतैक। एहिठामक लोकक पैसा सँ सभ किछु भऽ जयतैक, खाली इच्छा शक्ति मोनक भितर आनय पडत, जेना लगैया ।

फेर ई दवावमे नहि होइत छैक। रामटावरकेँ लेल कतवो दवाव देवैक सोहन ठाकुर एहि कार्यकालमे वना सकता ? इच्छा शक्ति हेतैक तऽ किछु भऽ सकैत अछि। एक वेर एना कऽकऽ नगरकेँ विकास आगा वढावी। की सम्भव भऽ सकैत अछि ?

एक बेर शीतल शीतलकें
लेल सोचहे परत

जुड़ शीतल पावनि सम्पन्न भऽ गेल अछि। नयाँ वर्ष अर्थात २०६८ साल सेहो आबि चुकल अछि। लोक थालमाटि कतेक खेललन्हि से हमरा नहि बुझल अछि मुदा हमरा शरीरमे एखनो थालमाटिक अवशेष अछि। शुक्रदिन जनकपुरक राम युवा कमिटीक प्राङ्गणमे खूब थाल माटि भेल।

हमरो शरीर थालमाटि सँ नहि बाँचल। हमर शरीर मात्र नहि मोटरसाइकल सेहो पूरे थालेथाल भऽ गेल छल। काल्हियो स्नान कएने रही, आइयो कएलहुँ मुदा मोन सँ कोनो चिज लोक करैत अछि तऽ ओकर छाप लम्बे रहैत अछि बुढ पुराण लोक गलत नहि कहैत छथि। एखनो कए ठाम माटि लागल देखा रहल अछि।

जुड़ शीतलकें एहि बेर हमर पहिल अनुभव रहल। एहि सँ पहिने कहियो थालमाटि नहि खेलने छलहुँ। पहिने थालक ठोप मात्र लगबैत छलहुँ। मुदा एहिबेर तऽ पूरे थालमाटि खेललहुँ। राम युवा कमिटी बितल २ वर्ष सँ थालमाटि खेलक कार्यक्रम रखैत आबि रहल अछि। ओना कही हमरे प्रयास सँ ई थालमाटि राखल गेल अछि। हम पहिने थालमाटिक रिपोर्टिङ्ग करबाक लेल धनुषाक गंगुली जाइत छलहुँ। कलाकार गुड्डु गंगुलीक नेतृत्वमे ओतय थालमाटिकें विशेष उत्सव होइत छल। लगातार तीन-चारि वर्ष सँ ओतय रिपोर्टिङ्ग करबाक लेल पहुँचैत छलहुँ। एहि कार्यक्रमक सम्बन्धमे रामयुवा कमिटीक अध्यक्ष सोहन ठाकुर सँग बितल वर्ष सेयर कएने छलहुँ। हुनका आग्रह कएलिएन्हि जे राम युवा कमिटी सेहो एकर आयोजना किएक नहि करैत अछि? एहि पर ओ आ हुनक सचिव शम्भु प्रसाद साह 'प्रेमी' सेहो सहमत भऽ गेलथि आ दू वर्ष सँ ई पावनि शुरु भऽ गेल।

होरीमे तऽ जनकपुरक युवासभ पुरे रंगाएले रहैत अछि तऽ किएक नहि माटिक आनन्द सेहो लैथि, भेबो कएल सएह। ओतय देखलियै जे कतेको गोटे स्नान कऽ कऽ आएल रहथि मुदा थालमाटि खेललन्हि। जनकपुर उद्योग वाणिज्य संघक पूर्व अध्यक्ष रमेशकुमार साह, राम युवा कमिटीक अध्यक्ष सोहन ठाकुर, कमिटीक सचिव शम्भुप्रसाद साह 'प्रेमी', कमिटीक पूर्व अध्यक्ष जितेन्द्र प्रसाद साह, महावीर युवा कमिटीक अध्यक्ष शम्भुप्रसाद साह, पूर्व अध्यक्ष प्रमोद साह, रवि साह, संतोष साह सहितक व्यक्तिसभकें थालमाटि सँ नाच करैत देखय लायक छल।

अपन पावनिमे लोक कतेक आनन्दित होइत अछि ओहि ठाम पहुँच कऽ लोक देखि सकैत छल। होरीमे हमर प्रयास रहैत अछि रंग नहि लगाबी मुदा रंग तऽ अहुँबेर नहि खेललहुँ तखन थालमाटि खेलाय सँ अपनाकें नहि रोकि सकलहुँ। गर्मीमे पोखरि सभमे धियापुताकें माटि-माटि खेलाइत कएबेर देखने छी। कहियो काल कऽ मन होइत छल जे एहिमे धियापुतासभकें की भेटैत हेतैक? मुदा जखन अपने खेललहुँ तखन पता चलल कतेक मोन लगैत छैक। एतेक तऽ होरीयोमे नहि लगैत हैत।

अहि पावनिकें विस्तारपर फेर सँ बिचार करय परत। कहियो ई पावनिकें पूरे मिथिलाञ्चलमे एक हप्ता पहिने सँ धुम रहैत छल मुदा सरकारी उदासिनता मात्र नहि एकरा समाप्त करबाक एकटा बड़का प्रयास भेल। किछु वर्ष पूर्वधरि एहि दिन सँ नेपालक एसएलसी परीक्षा शुरु होइत छल। जाहि सँ एहि पावनिकें बहुत हदधरि असर कएलक वा कही बसिया बड़ीभात खायमे सिमित कएलक।

एकरा बचाबय परत। अहि पावनिमे रंग भरय परत। एक बेर फेर सँ मिथिलाकें शीतल शीतल करय परत। सम्भव भऽ सकैया तऽ नेपालेकें करय परत। नेपालोमे ग्लोबल वार्मिङ्गकें चलते मात्र नहि किछु वर्ष सँ सभ चीज गरम भऽ गेल अछि। शान्ति आ संविधान निर्माणोकें लेल सेहो शीतल-शीतल करय परत।

बरमझियाकें नमूना गाम बनाबयकें सोचल जा सकैया ?

माओवादी नेता रामबृक्ष यादवक स्मृति दिवसक अवसरपर २०६८ भादव २ गते शुक्रदिन धनुषाक बरमझिया पहुँचल छलहुँ। रामबृक्षक पैत्रिक गामक लेल नहि बरु ओ गाममे एकीकृत नेकपा माओवादीक अध्यक्ष पुष्पकमल दहाल प्रचण्ड, उपाध्यक्षद्वय मोहन वैद्य किरण आ डा. बाबुराम भट्टराई आबि रहल छथि तकरे रिपोर्टिङ्ग करबाक लेल ओतय पहुँचल छलहुँ। पहुँचते पत्ता लागि गेल बरिष्ठ नेतासभ नहि आबि रहल छथि।

जखन ओतय पहुँच गेलहुँ तखन किए नहि रामबृक्ष यादव जीकेँ घर देखली।

जनयुद्धक समयमे सुनने रही हिमाली जिल्लासभमे सेहो माओवादीसभ रामबृक्षजीकेँ स्टेचु बनौने अछि। कोनो मधेशी समुदायक नेताकेँ पहाडोमे एहि प्रकारक सम्मान छैक तऽ निश्चय ओ छोटका-मोटका नेता नहि छथि। हुनका मरलाक बाद पत्रकारितामे आएल रही तएँ हुनका विषयमे बहुत बादमे बुझयकेँ अवसर प्राप्त भेल। घरमे जायकेँ तऽ एहि बेर मात्र जोग बनल।

रामबृक्षजीक लडका शेखर यादवकेँ जनयुद्धेकालमे आ कनियाँ रामकुमारी यादवकेँ सभासदमे जितलाक बाद अन्तवार्ता लेवयकेँ अवसर भेटल छल।

माओवादी नेता जे साहित्यकार सेहो छथि देवेश्वर लाल कर्ण 'मुन्ना' रामबृक्षजीक निवास घुमा देलन्हि। वएह कहलन्हि पहिने एहिठाम फुसक घर छल मुदा आब पक्काकेँ भऽगेल अछि। बातचित करिते रही की सिरहा गोल बजारक दर्जन सँ बेसीक हुज ओतय पहुँचल, ओ रामबृक्षजीक घरकेँ चारुकात निरीक्षण कऽरहल छल। ओ सभ घुमिए रहल छल की, एकटा आओर हुज ओतय पहुँचल। रामबृक्षजीक घरमे हुनकर दू टा बेटी मात्र रहैत अछि। ओसभ स्मृति दिवस कार्यक्रम स्थलपर छली। घरसभमे हैण्डिल लागल छल। बहुतोकेँ देखलियै हैण्डिल खोलि-खोलि कऽ रामबृक्षक यादसभ देखि रहल छल। किओ कहथि, 'एहिठाम फुसक घर रहैक एहिमे मास्टर रामबृक्ष यादव सुतैत छलाह।'

किओ कहथि, 'शेखरकेँ एहिकतका घर बेसी पसिन छलैक।'

हमसभ आधा घण्टा सँ बेसी समयधरि ओतय रहलहुँ। हुजक हुज लोकसभ रामबृक्षजीक घर देखय आबि रहल छल।

पडोसीसभ कहलन्हि, 'ई घर देखय दूर-दूर सँ लोक अबैत अछि।'

ई घर बड सुन्दर छैक्क तएँ अबैत अछि से नहि, ओकरे अगल-बगलमे नीक-नीक घर छैक मुदा रामबृक्षजीक जन्म भेल घरकेँ लोक एतबे दिनमे कोना बिसरि जएतैक ?

रामबृक्षजीक कारण सँ ई गामकेँ जनयुद्ध समयमे पुलिस आ सेना विशेष टार्जेट कएने रहैत छल। एहि कारण लोककेँ बहुत परेशानी उठाबय पडल छलैक। मुदा आब जखन माओवादी सेहो देशक तागतवर शक्ति भऽगेल अछि एहन समयमे एहि गामकेँ उपेक्षा करब कोनो दृष्टि सँ नीक नहि भऽसकैत अछि।

माओवादी सेन्टर रहल कतेको पहाडक स्थानकेँ नमूना स्थान बना देल गेलैक तऽ किएक बरमझियोकेँ बनादेल जाए।

जे गाम रामबृक्ष यादवसन व्यक्तिकेँ जन्म देलक ओहि गामकेँ कतेक दिन पाछा राखल जाएत ? संगहि रामबृक्षजीक निवासकेँ संग्रहालय बनाबय पर किएक नहि सोचल जाए ? मात्र घरकेँ देखय लेल जखन एतेक लोक बरमझिया पहुँचि सकैत अछि तऽ संग्रहालय बना देलाक बाद आओर कतेक व्यक्ति आबि सकैत अछि।

ओहि संग्रहालयमे रामबृक्ष यादवसंग जुडल बहुत बातक संगहि जनयुद्धक झलकसभ राखल जा सकैत अछि।

फेर ई काज प्रचण्डजी कऽदेता से नहि, एतहिकेँ लोककेँ करय पडत। प्रचण्डजी तऽ ५ वर्षमे ५ बेर बरमझिया पहुँचब से कहि कऽ नहि पहुँचला अछि। बरमझिया सँ हमरा जनकपुर एला २४ घण्टा सँ बेसी भऽचुकल अछि। विश्वास तऽ नहि होइत अछि मुदा एकटा बात बेर-बेर मनमे अबैत अछि, बरमझियाकेँ नमूना गाम बनाबयकेँ विषयमे एक बेर विचार हेतैक ?

घड़ीक सुइकें किओ पकड़ि लेने छल

२०६५ पुष २९ गते अर्थात रविक राति रेडियो मिथिलाक समय सन्दर्भ कार्यक्रममे जनतान्त्रिक तराई मुक्ति मोर्चा राजन मुक्ति समूहक वार्ता टोली सदस्य मनोज मुक्तिकें बजौने रही। स्टुडियो भितर जाइए रहल छलहुँ की केयर नर्सिङ्ग होम सँ नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाक तत्कालीन सचिव अजित तिवारीक टेलिफोन आएल आ ओ जानकारी करौलन्हि जे पत्रकार उमा सिंहकें अज्ञात समूह छुरिया प्रहार कऽ आक्रमण कऽ देलक अछि। किछु देर तऽ हम अवाकें रहि गेलहुँ।

फेर हमर बुझयमे नहि आबि रहल छल की कएल जाय ? नरसिंह होम जाइ की कार्यक्रम चलाबी। कार्यक्रम चला कऽ नर्सिङ्ग होम जाएब जखन हम निर्णय लेलहुँ बड़ा कठिन बुझाइत छल। रेडियोमे कार्यक्रमक धुन शुरु भऽ गेल मुदा शब्द नहि भेट रहल छल की बाजु। उमा सिंहकें हम बहुत दिन सँ चिन्हैत छी से नहि। तखन रेडियो टुडे शुरु भेल रहैक आ एक-दू गोटेक मुँह सँ सुन्ने रही जे टुडे सिरहा सँ दू गोटे पत्रकार अनलक अछि। फेर आदरणीय अनुराग गिरी बेर-बेर उमाक विषयमे कहथि, 'ई लम्बा रेसक घोड़ा बनत।'

कतेक दिन तऽ ओ हमरो कहथि, 'तोरा सभकें किओ चुनौति देतौ तऽ ओ उमे सनक पत्रकार हेतैक।'

कान्तिपुरक कतार संस्करणमे कार्यरत पत्रकार श्याम सुन्दर शशि सेहो कतार सँ एक दिन मेल पठौने रहथि जाहिमे सम्भावना बला पत्रकार सभमे उमाक नाम सेहो उल्लेख रहैक।

रेडियो टुडेक संस्थापक स्टेशन मैनेजर रमेश रञ्जन झा उमा सँ बढ़ बेसी प्रभावित रहथि। कतेक दिन बातचितक क्रममे बाजल रहथि, 'अन्तर्वार्तामे जाहि ढङ्ग सँ ओ प्रश्न करैत अछि मोन आनन्दित भऽ जाइत अछि।'

एक दिन क्षेत्रीय स्रोत केन्द्र विराटनगरक लेल एकटा फेलोसिप भेटल रहय । ओहिमे केना लेख लिखी आइडीया लेबय जनकपुर टुडेक सम्पादक बृजकुमार यादव लग गेल रही। ओ किछु आइडिया देलन्हि आ कहलन्हि, 'उमा बैसल छैक कम्प्यूटर पर मुँह सँ कहबै भटाभट लिख देत।'

संयोग कही जे एक गोटेकें टेलिफोन चलि आएल हम अन्त: चलि गेलहुँ। मुदा तहिया तक उमाकें नहि देखने रहियैक।

एक दिन अहिना रेडियो टुडेमे ओ एक गोटे महिलाकें अन्तवार्ता लैत रहथि। सुनलहुँ उठान गजबकें छल। प्रात भेने हमर समाचार कक्षक सहयोगी बबिता ठाकुर आ सीमा चौधरीकें कहने रहियै, 'अहाँ सभ सँ बड उप्पर उमा सिंह अछि, अहाँ सभ कहिया हुनका जकाँ कार्यक्रम चलाएब।'

बबिता रेडियो पत्रकारकें रुपमे नम्बर १ पर छथि मुदा अन्तरवार्ता सहितक कार्यक्रम नहि चलबैत छथि। कनी हुनकापर व्यंगो कएने छलहुँ।

उमा सँ पहिल भेट नेपाल परिवार नियोजन संघक एकटा कार्यक्रममे भेल छल। महिला पत्रकारकें नाम सँ निमन्त्रण पत्र नहि एला पर जाहि ढङ्ग सँ हुनक आक्रोश देखलहुँ किछु देर हुनका दिस तकिते रहि गेल रही। ओ चुनौतिपूर्ण स्वरमे बाजल रहथि, 'निमन्त्रण देबयमे सेहो भेदभाव ? ई आब नहि चलत।'

हमर अग्रज सभ जे उमाक विषयमे परिचय करौने रहथि सएह देखबामे आएल।

ओ स्वयं एकटा राजनीति दल सँ पीडित रहथि । हुनक बाबू आ भायकें माओवादी जनयुद्ध कालमे हत्या कऽ देने छल । हमरा लागल पीडित होइत-होइत आब हुनक भितर एहन ज्वाला चलि आएल अछि जे शोषण बर्दास्त नहि कऽ सकैत अछि। ई आशयकें बात हुनक एहि बीचमे आएल किछु लेख सभ सँ सेहो प्रष्ट भऽ रहल छल।

उमा सँ हमरा बातचित तऽ नहि भेल छल मुदा हम हुनका सँ धीरे-धीरे प्रभावित होबय लागल छलहुँ। आ तएँ समय सन्दर्भ कार्यक्रम चलाएब बहुत कठिन भऽ रहल छल।

प्रारम्भ हुनका उपर आक्रमण भेल ताहि सँ कएने रही आ अन्त हुनका खुनक अभाव भऽ गेल अछि ताहि सँ कएलहुँ । समय सन्दर्भ कार्यक्रम आन दिन बहुत छोट लगैत छल मुदा रवि दिन तऽ जेना बुझाय घड़ीक सुइकें किओ पकड़ि लेने होइ। हमरा पहिल बेर समय सन्दर्भ चलाबयमे कठिन भेल छल।

उमा ओना आइ ई संसारमे नहि छथि । ई शब्द लिखब तहिना कठिन भऽ रहल अछि जेना रवि दिन समय सन्दर्भ चलाबयमे कठिन भेल छल ।

रस नहि गुल्लाक रेकड

बहुत वर्षक बाद दू तीनटा बरियाती हमरा हाथ लागल छल। वा कही पाँच वर्षक भितर एकटा अपना विवाहके छोडि देल जाय तऽ तीनटा बरियाती मात्र छल जाहिमे सहभागि भेलहुँ। ओहूँमे दूटा बरियाती तऽ एहिबेर छल ।

बरियाती जायके अवसर नहि भेटैत अछि से नहि, मुदा जनकपुर क्षेत्रमे रहि कऽ दू दिन बरियातीएक लेल समय निकालब हमरा कठिन लगैत अछि। कए गोटे प्रसंगवश कहि दैत छथि, 'औजी बड-बड व्यस्त लोककेँ देखलहुँ ओहो सभ बरियाती सरियाती करैत छथि। किछु गोटे कहैत छथि, 'तोरा खायके मुंहे नहि छह।' किओ किछु कहै छथि, किओ किछु। मुदा हमरा बच्चेसँ स्वभाव अछि लोक की कहैछथि सुनैत छी मुदा हमर अन्तरआत्मा जे कहैत अछि सएह करैत छी।

तएँ बड बेसी बरियातीसँ 'इन्ट्रेष्ट' नहि रहैत अछि आ तएँ नहि जाइत छी। हँ तखन प्रण सेहो नहि लेने छी। लोक बरियातीसँ जखन फिर्ता अबैत छथि तऽ कतेक-कतेक रसभरी खाइ गेला ताकर उत्सुकता हमरा बिशेष कऽ रहैत अछि।

हम अरबैध कऽ लोक सभसँ ई पुछबे करैत रहैत छी जे फलाँक बरियातीमे रसभरी खायमे बाजी के मारला ! के सभ कते-कते खेला ? एक बेर स्मरण अबैत अछि हमर गाम बभनगामा सँ बरियाती सीतामढी गेल छल। ओतय तऽ बेसी खाए बलाके पुरस्कृत सेहो कएल गेल छल।

एकबेर हम राजबिराज गेल छलहुँ। एकटा मित्रक घर पर गेलहुँ। हुनकर पितियौत भायके बिवाह दुइये दिन पूर्व भेल रहैक। दलान पर बहुत लोक बैसल रहथि। प्रसंग बरियातीए के चलि रहल छल। फेर रसभरी के कतेक खेलक ताहि पर बहस केन्द्रित भऽ गेल। हमहुँ रुचि पूर्वक सुनय लगलहुँ।

आश्चर्य कही ओहि ठाम किओ एहन नहि छलथि जे एकबेर मे एक सय रसभरी नहि खेने होइथ। ओतय खेनाइ के गान भऽ रहल छल। किओ कहथि बच्चुआ सेहो अइ पीढिक नाम राखत। पता लागल जे पन्द्रह वर्षक बचुवा नामक ओ किशोर सवा सय रसभरि खेने रहथि।

प्रसंगवश ओतय हम पुछने रहियैक जे सभसँ बेसी जे खेलाह हुनकर संख्या कतेक छलनि । ओ सभ कहला, साढे तीन सय धरि एक गोटे खयने रहथि।

एतेक भूमिका बान्हके पाछु इएह कहबाक छल जे एकटा मित्रक बरियाती जाय सँ पूर्व हमहुँ सोच बनौने रही जे भऽ सकैत अछि तऽ रसभरिक बाजी लगायब, हमर सभसँ प्रिय मित्र निमिष झाक विवाहमे सीमावर्ती क्षेत्रक सैशपुर गाममे गेल छलहुँ। सम्भवत: जखन हम सभ खाय लेल बैसल छलहुँ तऽ अपन दोसर मित्र रेडियो मिथिलाक स्टेशन म्यानेजर राकेश कुमार सिंहसँ बाजी लगा लेलहुँ।

ओ किछु वर्ष पूर्व नागपुरमे रहल रहथि । नागपुरक बडका-बडका डिङ्सभ सुनौने छथि । कहियो भोजन करयके , कहियो तेज गति सँ मोटरसाइकिल चलाबयके, कहियो दोसरके घरमे विवाह भऽ रहल समयमे भीडक फाइदा उठबैत विना आमन्त्रणके भोज खाएके। तएँ ओतय हम सभ नागपुर भर्सेज जनकपुर बाजी लगादेने रहियैक।

करीब दश एगारहटा रसभरी खयने होएब ततबेमे हम दुनु गोटे बम बाजि गेलहुँ।

ओहो हारि गेला आ हमहुँ। बड आश्चर्य भेल जे केना लोक सभ दू सय खा लैत अछि। किछु देर हम दुनु गोटे एक दोसरकेँ ताकैत रहलहुँ।

ध्यानके तोडैत हमरे सभ संग बरियाती गेल जनकपुरक विश्वनाथ एण्ड सन्सक म्यानेजर नरेन्द्र झा एक गोटे दिस देखौलथि ओ उमेरमे हमरा सभसँ दुन्नाक रहथि मुदा हुनकर हाथ आ मुहँक तालमेल देखलियन्हि स्वचालित मशीन जकाँ चलि रहल अछि। रस सिधे बाहर गारि देथिन आ गुल्ला एक्केबेर मुँहमे। नरेन्द्र जी सँ पुछलियन्हि, ई की भेलैक ?

ओ कहला, 'बरियाती नहि अबैत छी ! बरियातीमे लोक रसभरी एहिना खाइत अछि।'

हमरा बुझबयमे आबि गेल केना लोक दू सय, तीन सय रसगुल्ला खा लैत छैक। संगे बैसल राकेशके कहलियै, नागपुर फेरसँ बाजी लगा। जखन गुल्ले खाय पडतै तऽ हमहुँ सभ खा सकैत छी। मुदा गुल्ला खाऽ कऽ रसगुल्लाक थाक देखेनाइ भाइ ई बेमानी हैत एही पक्षमे दुनु गोटे रही। खैर तखन हम सभ बाजी नहि लगेलहुँ, मुदा हमरा एकटा कहाबत बेर-बेर ध्यान अबैत अछि चिडैइके जान जाय आ धीया पुताक खेलौना।

सम्भवत: एहन कहाबत सभ हमरे सभ सन बाजि बलापर लागु होइत हेतैक। रसगुल्लामे कतेक खर्च भेल हेतैक। ओ खर्च ओटिआबेमे कतेक समस्या भेल हेतैक। मुदा बरियातीसभके कोनो ममता नहि होइत छन्हि। बेटीओ बलासभ बुझबके होइत छथि। ओहोसभ ठुसा-ठुसा कऽ बरियातीके खुअबैत छथि आ बरियातीसभ सेहो ओहिना खाइत अछि।

जनकपुरक आमकें कहियो चर्चा करब ?

२०६८ भादव १५ गते भऽ गेल अछि। गर्मी बढि रहल अछि। टाइम पासक लेल आब नीक आम देखबामे नहि आवि रहल अछि वा कही आब आम समाप्तिक क्रममे अछि। जे किछु बाँकी अछि ओ बरमसिया रहिगेल अछि। सिजनल आम खाएकें लेल ९/१० महिना प्रतीक्षे करय परत। एक महिना पूर्वधरि जनकपुरमे जतय जाउ खाली आमे बेचैत लोककें देखल जाइत छल। मन्दिर सँ लऽ कऽ चौकसभपर ओहिना छिटामे महिला-पुरुष सभकें आम बेचैत देखल जाइत छल।

मुदा आश्चर्य लागत जनकपुरमे उपलब्ध आमसभ जनकपुरक नहि रहैत अछि। एहि ठाम भारत सँ आएल आम प्रायः बिक्री होइत अछि। नेपालक कतहुँ-कतहुँ बिक्रियो भेल तऽ ओ उदयपुरक। जनकपुरक आम, बजार तक पहुँचिये नहि रहल अछि। एक समय छल जनकपुरक आम नेपालके सभ ठाम बिक्रिक लेल जाइत छल। कतेक व्यापारी तऽ भारत धरि सेहो सप्लाई करैत छला।

२० वर्ष पूर्व एहि ठाम ततेक आम होइत छल जे व्यापारीसभ मालोमाल भऽजाइत छल। ओहि उमेरक सभ लोक देखने अछि। कहल जाइत छैक मनुष्य की कुकुर नढिया सेहो आमक महिनामे मोटा जाइत छल।

कोनो एहन व्यक्ति नहि छल जिनका आमक बगान नहि हुए। आमक बगान नहि भेल व्यक्तिके लोक ओतेक प्रतिष्ठित नजरि सँ नहि देखैत छल। तएँ अन्य काज जे जेना हुए आमक बगान लोक अवश्य लगबैत छल। परिक्रमा सडक हुए वा जनकपुर-जलेश्वर, जनकपुर-ढल्केबर, सभ सडकके बगलमे आमक गाछ रहैत छल। तिरहुतिया गाछी, पहाडी गाछीमे ततेक आम फरैत छल जे लोक तोडि नहि सकैत छल। राम मन्दिरकें आगामे रहल राम पार्कमे सेहो आमक गाछ छल। जानकी मन्दिरक पाछूमे राम बाग छल ओतहुँ विभिन्न जातिक फूलक अतिरिक्त आमक गाछ छल। जनकपुरक सभ मन्दिरके अलग-अलग आमक बगान छल।

आम खाएकें लेल बहुतो लोक आमक महिनामे जनकपुर अबैत छल। मुदा आब नहि आमक बगान रहि गेल आ नहि आम। जखन मनुष्यके नसीबमे अफरादी आम खाएके लेल नहि अछि तऽ कुकुर नढ़िया कि खाएत ? कौवा सभ उपासले रहैत अछि।

आब ओहो सभ आमक महिनाक प्रतीक्षा छोडि देने अछि।

जनकपुर सँ बाहर जायबला बससभमे आम महिनामे आम भरल रहैत अछि मुदा ओ आम भारत सँ आएल रहैत अछि। काठमाण्डूमे जहिना बाहरके माछ राखि जनकपुरक माछ कहि ठकैती होइत अछि तहिना आमोमे। किओ कहुना कऽ ठकए मुदा सत्यता इएह अछि। आम महिनामे सैकडो आमक गाछक नर्सरीमे बिक्री होइत अछि मुदा किनको बगान नहि अछि। जतेकमे बगान लगेता प्लटिङ्ग कऽ कऽ जमिन बेचि सकैत छथि। कम्पाउण्डमे जतेकमे गाछ लगेता ओही स्थान पर घर बना लेता तऽ घर भाडा एतन्हि। किछु गोटे अपन घरक आगामे आमक गाछ लगेबो केने छथि तऽ करोटनके गाछ लगाबयके उद्देश्य बाहेक किछु नहि रहि गेल अछि।

संघीयतामे जनकपुरके राजधानी बनाबयकें बात उठि रहल अछि। कि राजधानीमे बाहर सँ आबय बला लोकके स्वागत हमसभ कथी सँ करब, एकबेर सोचबो कएलहुँ अछि? नहि जनकपुरमे सडक अछि, नहि नाला अछि मन्दिर सभ टुटि कऽ घर बनि रहल अछि, पोखरि सभ घडारी बनि रहल अछि। कि एहने जनकपुर चाहैत छी ? एकबेर सभके सोचहे पडत।

ओना मिथिलाक फलके बचयबाक लेल अखनो बहुत अबेर नहि भेल अछि। आमक गाछ लगयबाक प्रण लेबय पडत। अखनो कहुत खाली जमीन अछि जकरा बगान बना सकैत छी। फेर आमक गाछ उपलब्ध करेबाक लेल

जनकपुरक नर्सरीसभ तैयार अछि। आब अपनेसभ पर निर्भर अछि। अपनेसभ एक बेर मोन बनाबी। आ फलक राजा फेर सँ जनकपुरक कोणा-कोणामे फरय लागय।

फौज अछिए मात्र एकत्रित करबाक आवश्यकता

हमर कथा संग्रह 'चिडै' प्रकाशित भेला एक हप्ता नहि बितैत युवा पत्रकार राजेश कुमार कर्ण मैथिली भाषामे उपन्यास लिखयकेँ तैयारी शुरु कएलन्हि अछि।

पत्रकार महासंघ धनुषाक अध्यक्ष रामअशिष यादव नाटक तऽ खेलबे करैत छला , एकटा नाटककेँ लेखन दिस अग्रसर छथि । किछु भागकेँ ओ टाइप सेहो करा लेने छथि । घनश्याम मिश्र आ प्रकाश प्रेमीक संयुक्त लेखनमे एकटा बढिया रेडियो नाटक लिखल अछि। रविन्द्र झाक लेखनमे संगोर नाटक एखन देशक विभिन्न रेडियोमे चलि रहल अछि।

सुनिल यादव, बिएन पटेल, रामेश्वर साह, सुधीर चन्द्र आचार्य लग रेडियो नाटककेँ थोकमे संग्रह अछि। ई रेडियो नाटककार सभ प्रकाशन दिस ओतेक ध्यान नहि देलन्हि अछि। मुदा रेडियोमे हिनक सभक रेडियो नाटक बेस चर्चित भेल अछि।

ओसभ कनिक मात्र ध्यान देता तऽ रंग बिरंगक स्वाद संग नाटक भेट सकैत अछि।

विजय दत्त सेहो एकटा कविता संग्रह आ एकटा कथा संग्रह तैयार रहल कहैत छथि । उपेन्द्र भगत नागवंशीकेँ सेहो किछु किताब प्रकाशित अछि। आ ओ सेहो बराबर लिखैत रहैत छथि ।

काशिकान्त झा, विजय दत्त मणि, पुनम झा, प्रमिला मिश्र, निमिष झा, रोशन झा , सुधिर चन्द्र आचार्य लग सेहो कविता संग्रह निकालय जोगर कविता अछि।

अनिल विश्वबन्धु सेहो एहिमे पाछा नहि छथि । २० वर्ष सँ ओ कविता आ कथा लिखैत छथि । ओ जहिया मन बना लेता संग्रह निकालि सकैत छथि । एक समय छल पुरनका पिढीक बाद रमेश रञ्जन, श्याम सुन्दर शशि, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, धर्मेन्द्र विह्वल, विपिन कुमार साह, सुनिल मल्लिक, अशोक दत्त, ललन जी, रोशन जनकपुरी, अवधेश पोखरेल, हिमांशु चौधरी, विनोदा नन्द सनक थोर व्यक्ति मात्र साहित्य सृजना करैत छला ।

ई सभ प्राय एक संगे रहलाक कारण भरियाएल अवस्था रहैत

छल। सभक जमघटक स्थान मिनाप छल, एकटा योजना बनैत छल आ सभ धराधर लिखय लगैत छला।

मुदा अहि पीढीक संग ओ स्थिति नहि अछि। नयाँ लेखक सभ तऽ बहुत आएल अछि , काजो महत्वपूर्ण भऽ रहल अछि , मुदा समूहमे काज नहि होयबाक कारणें बएह सात आठ गोटेकेँ साहित्यिक क्षेत्रमे दबदबा छन्हि । ओना ओसभ एखनो निरन्तर लिखैत छथि ।

कहियो कवि, कहियो कथाकार, कहियो नाटककार ,उपन्यासकार तऽ कहियो समीक्षक सभमे ओहे सभ रहैत छथि ।

हमरा जहिया-जहिया नित्यानन्द मण्डल सँ भेट होइत अछि, ओ जे कोनो बातकेँ टिप्पणी करैत छथि । दंग रहि जाइत छी । ओ समीक्षा लिखबो करैत छथि । मुदा निरन्तरता नहि होयबाक कारण हुनका पर एखनो बहुतकेँ ध्यान नहि गेल अछि। आवश्यकता पडल तऽ लिख देलहुँ, हुनक विशेषता छन्हि । समालोचना क्षेत्रमे अनिल विश्वबन्धु, नित्यानन्द मण्डल, राजेश कुमार कर्ण, सुदिप झा आ रोशन झा कलम चलाबथि तऽ मैथिलीक लेल एकटा बढिया प्रतिभा भेटि सकैत अछि।

साहित्यिक प्रतिभाक जँ बात कएल जाए तऽ इश्वर चन्द्र झा , अतिश कुमार मिश्र, अनिल मिश्र, अजय अनुरागी , सुभाष कर्ण, ध्रुव झा, मनिका झा , जयन्त ठाकुर, अमरकान्त अमर , विनोद कुमार महतो, संजिव कुमार झा, खुश्बु झा, सुरेश यादव , लक्ष्मण यादव, जयनारायण झा, श्रीनारायण साह, नवल यादव, विरेन्द्र रमण सन जनकपुरमे एक दर्जन पत्रकार छथि जे कनि मात्र ओहि दिस ध्यान लगा देता तँ साहित्यकारक फौजे बनि जाएत।

पत्रकार बाहेक सेहो बहुतो एहन छथि जिनका एक्सपोजर तऽ नहि भेटल छन्हि मुदा किछु-किछु लिखिए रहल छथि ।

वरिष्ठ पत्रकार वृज कुमार यादव अपन जीवनमे मैथिली भाषामे एकटा कथा लिखने छथि । ओ कथा गोष्ठीमे पढबो कएने रहथि । बेस चर्चित सेहो भेल छलाह । हमरो साहित्यमे किछु लिखबाक अछि जँ ओ सोचि मात्र लेता तऽ हुनकर जीवनमे परिवर्तन तऽ अएबे करत संगहि मैथिली साहित्यकेँ एकटा उर्जावान व्यक्ति भेटत । परमेश्वर कापडि , राम भरत साह सन व्यक्ति सेहो खूब लिख रहल छथि ।

नयाँ पीढीकेँ कोना साहित्यिक माहौल भेटतैक एहि पर आन्दोलनी संस्थासभकेँ चिन्तन करबाक आवश्यकता अछि । मैथिलीमे जाहि रुप सँ अवसरक सम्भावना बढि रहल अछि । ओ स्वर्णिम भविष्यक संकेत दऽ रहल अछि । मित्रसभ एक बेर मन बना कऽ तऽ देखियौ ।

परिवर्तनक अनुभूति दैछ जयनगर

२०६५ फागुनमे सीमावर्ती शहर जयनगर गेल छलहुँ। जयनगरक पहिल यात्रा छल से नहि। ओहि ठाम पचासो बेर गेल हैब। आ हमर काका (गुणानन्द झा) नेपाल रेल्वेक जयनगर स्टेशनमे कार्यरत रहलाक कारणेँ सात-आठ दिन ओहुँना रहलो छी।

मुदा कही जे नेपाल रेल्वे सँ जय हिन्द टाकीज आ डीबी कलेज देखने छलहुँ। स्थानीय किछु व्यक्ति सँ पुछने रही जे जयनगर कतेक टा छैक ? हम जतेक देखने रही ततबे जयनगर छैक ओ सभ कहने रहथि।

तएँ कतेक बेर रेडियो मिथिला आ मिथिला डट कमक समाचारदाता दुर्गानन्द दुर्गेश निमन्त्रण दैथि आबय लेल तऽ कहुना टारि दियैक। मुदा एहि बेर संयोग कही जयनगर जाए पड़ल मात्रे नहि एक राति होल्ड सेहो कएलहुँ।

एहि सँ पूर्व काकाक ओहि ठाम जाइत छलहुँ । तएँ एकटा अनुशासन बनल छल जे साँझे घर आबी। मुदा एहि बेर तेहन किछु नहि छल। तएँ हम सभ बहुत राति धरि जयनगर घुमलहुँ। जयनगर छोट शहर भेलाक बादो देखलियै जे जयनगरमे अबेर राति धरि लोककेँ चहल-पहल छलैक।

सहकर्मी दुर्गानन्द दुर्गेश चहल-पहलक विषयमे जानकारी करौलन्हि, 'जयनगरमे बड़ी लाइनकेँ चमत्कार छैक जे लोककेँ चहल पहल भरि राति रहैत अछि।' ओ सँगहि जयनगरक विकास सँ बड़ी लाइनकेँ जोड़ैत घण्टो प्रवचन देलथि। अहि क्रममे हुनकेँ सँग रहल एकटा मित्र सन्दर्भ जोड़ैत कहलन्हि, 'अहाँ सभ जकाँ लाइन रहैत तऽ विकासक हिसाब सँ ई शहर किछु आओर रहैत।'

मित्रक बातकेँ जोड़ैत दुर्गेश जी कहलन्हि, 'बड़ी लाइन नहि रहैत तऽ जयनगरक ई चुहचूही नहि रहैत। बड़ी लाइन भेलाक बाद किछु आओर भेल अछि।' हम सभ भोरमे जयनगर बस्ति टोलमे रहल दुर्गा मन्दिरमे गेलहुँ। शिवम पिक्चर पैलेशमे गेलहुँ। दानी बाबुक कपड़ा दोकान गेलहुँ। एसएसबी कैम्प गेलहुँ। नगर पञ्चायत गेलहुँ वा कही जे जयनगरक किछु नहि छोड़लहुँ।

दानी बाबूक दोकान केहन छैक से जिज्ञासा रहैय। कारण ओहि दोकानमे हमर बाबा आ बाबूजी दुनु गोटे समान किनने छथि। तेसर पुस्त सेहो समान कीनि रहल कहि कपड़ा सेहो किनलहुँ। दोकानमे बैसल रहथि दानी बाबूक पोता। प्रसंग बस ओ कहलथि, 'हमर बाबा बाबु जी सेहो एहि दोकान पर बैसल छथि। आब हमहूँ बैसैत छी।'

तीन पुस्ते दोकानदार आ खरिदार बड़ा संयोग होइत छैक। ई दोकान विश्वासक पैघ उदाहरण छैक, हमरे सँगे ओतय गेल जनकपुरक विश्वनाथ एण्ड सन्सक मैनेजर नरेन्द्र झा कहलन्हि।

सफाईकेँ अवस्था, ट्राफिक समस्या, ढलकेँ अवस्था जनकपुरे जकाँ ओतहु देखलहुँ। मुदा एकरा ठीक करय पड़लै तकर सूत्र खोजयमे सभ लागल रहथि, बुझयमे आएल।

जयनगरमे सामान किनलहुँ। रेडियो मिथिला आ मिथिला डटकमक लेल दर्जनो समाचार संकलन कएलहुँ। पत्रिका आ एफएमक लेल मार्केटिङ कएलहुँ। सभ सँ महत्वपूर्ण पक्ष जयनगरमे देखलियै रेडियो मिथिलाक क्रेज। कतेको गोटे कहलथि, रेडियो मिथिलाक समाचार विश्वसनीय रहैत अछि। सभकेँ हम एकैटा उत्तर दियन्हि एकर सभ सँ बड़का श्रेय छन्हि जयनगरक रेडियो मिथिला एवं मिथिला डट कमक समाचारदाता दुर्गानन्द दुर्गेशक।

रेडियोमे नेपाल आगा अछि एहिकेँ लेल कतेको गोटे धन्यवाद देलन्हि। एकगोटे एहन भेटलथि जे रेडियोमे काज करयबला सम्पूर्ण पत्रकार आ आरजेकेँ नाम मुजबानी सुना देलन्हि। जनकपुरक रेडियोक कारण जनकपुरक अवस्था सँ बहुतो लोक परिचित अछि से लागल। किछु गोटे जयनगरोमे एहने सन कोनो रेडियो स्टेशन होइतैक अहिकेँ लऽ कऽ चिन्तित रहथि। जयनगरक यात्राक क्रममे पूरे समय दुर्गानन्द दुर्गेश हमरे सभक सँग रहलथि।

अन्तमे दुर्गेश जीकेँ जयनगर स्टेशन लग छोड़ैत मारुती सँ हम सभ जनकपुर चलि एलहुँ। दुर्गेशजीकेँ जयनगरमे रहल प्रभावक सम्बन्धमे हम आ नरेन्द्रजी भरि बाट चर्चा करैत एलहुँ। आ एकटा बातक चर्च नहि कएलहुँ जे अछि जयनगर आब ओ जयनगरनहि रहि गेलैक।

अर्थात परिवर्तनक प्रतीक अवश्य बनल अछि जयनगर।

किछु बर्ष पूर्व रेडियो मिथिलाक मार्केटिङ्ग प्रमुख प्रकाश भ्मा जयनगर जाइत रहथि तऽ कार्यालयमे किछु सहकर्मी सभ कहने रहन्हि जे भाइजी ओतय सँ किछु सनेष नेने आयब। हुनकर उत्तर रहन्हि, जयनगर तऽ एकटा चौक छैक ओतय की भेटत ?

मुदा आब से स्थिति नहि छैक।

शहरमे एकटा चीज नीक भेला सँ पुरे शहर परिवर्तन भऽ जाइत अछि। तकर उदाहरण लोक जयनगर गेलाक बाद देखि सकैत अछि।

साज विहीन स्वर सम्राट बेचन

बेचन पासवान मिथिलाक चर्चित गायक। हिनका नहि चिन्हय बला व्यक्ति कमे हेता। धनुषा होइ, महोत्तरी होइ वा काठमाण्डूए, सभ ठामक लोक हिनका चिन्हैत छन्हि। हिनकर नामे लेला सँ बहुतोकें आगू हिनक आकृति चलि आएत। धनुषा आ महोत्तरीक कतेको घरमे बेचन, गीत गएने छथि। हजारो हिनक 'फ्यान' छन्हि। मुण्डन, उपनायन , विवाहसभमे गीत गबैत छथि। कनिको-मनिकोमे बेचन गीत गाबि देतोक सोँचि लोक हिनका बजाबैत अछि। काठमाण्डूक बडका लोकसभके गीत सुनयकें मन भेल तऽ बेचनकें काठमाण्डू बजा लैत अछि। एहिमे महोत्तरीक नेतासभ अग्रस्थानमे छथि। मुदा बेचन आइ कोन अवस्थामे जी रहल छथि, ककरो नहि बुझल हेत। ओ पैसाक लेल घर-घर भटकि रहल छथि।

फुटल तबलाके छराबय हेतु देला महिनो भऽ गेल छन्हि। मुदा पैसा नहि छन्हि जे चमरा लग सँ तबला अनता। खायो पर आफत छन्हि। बेचनके गीत सुनि कऽ लोक खुआइयो दैत छन्हि मुदा हुनकर परिवारिक लोककें बुझय बला कियो नहि अछि। एखन तऽ तबलो फुटि गेल छन्हि। बिना साजक कें गीत सुनत !

बहुतो लोकके बुझल हेतन्हि बेचन आ भारतीय सिने क्षेत्रक चर्चित गायक उदित नारायण झा मित्र रहथि। आर्थिक स्थिति तहिया दूनुकें समाने छल। काठमाण्डूमे कतेको ठाम दूनु सँगे गीत गएने छथि। कहल जाइत छैक उदित नारायण सेहो हिनक गायनकें लोहा मानैत छला।

जनकपुर क्षेत्रक लोक मुम्बईमे उदित नारायण सँ भेटय जाइत अछि। ओ बेचनकें अवश्य खोजैत रहैत छथि।

काठमाण्डूमे संर्घष करैत काल रेडियो नेपालमे नोकरी करबाक लेल सँगे अवसर भेटल छलन्हि। मुदा बेचन नेतासभके चम्चागिरीकें प्राथमिकता देलन्हि आ उदित नारायण कैरियरकें। आइ उदित नारायण सँगे रहितथि तऽ बेचनोके एहन स्थिति नहि रहैत ? एहि बातक अफसोँच हुनको छन्हि बातचीतक क्रममे बेर-बेर कहैत छथि ।

बेचन दलित छथि। मुदा दलितक लेल काज करय बला सँस्था सभकें नजरिमे बेचन नहि पडैत छथि। हमरो समाजमे स्वर सम्राट अछि अहि पर गर्व करय बला किओ नहि अछि। दलितक नाम पर नगरपालिका जिल्ला विकास समितिमे लाखो रुपैया अबैत अछि मुदा ओहो रुपैया सभ दलित नेतासभकें लग मात्र जाइत अछि एकर उदाहरण बेचनके स्थिति सँ देखल जा सकैत अछि। बेचनक अवस्था सँ लोक अपरिचित छथि से नहि, हिनकर समस्या जानकी मन्दिरपर चढि कऽ कहय परत से नहि अछि। बेचनक तबला बिना छडायले रहत , किओ आगा नहि आबि सकैत अछि ?

एकटा कलाकार कोना जीव रहल अछि एकर एकटा छोट उदाहरण अछि बेचन। कलाकारक विकासक लेल सेहो देशमे सरकारी तथा दर्जनो गैरसरकारी संस्था अछि। हुनकोसभकें बेचन पर ध्यान जा सकैत अछि ? एलबम निकालयमे बहुत पैसा लागि सकैत अछि मुदा तबला छडाबयमे कतेक लगतैक।

बहुतो विद्वान एवं दार्शनिक कहने छथि, जाहि समाजमे कलाकारक सम्मान नहि हैत ओ समाजकें बहुत परिस्कृत नहि मानल जा सकैत अछि। मुदा मिथिला समाजमे बेचन सनक कलाकारक कि स्थिति अछि एकर उदाहरण ओ स्वयं छथि।

माधव जी संगक डिनर

पत्रकारिता क्षेत्रमे काम करयबलाक लेल प्रधानमन्त्री, मन्त्री वा बडका नेता सभ सँग भोजन करब बहुत भारी बात नहि अछि। कारण नेता सभसँग उठबैसि, खानपिनक सन्दर्भ भेटिते रहैत अछि। मुदा २०६६ जेठ १७ गते सँ डेढ महिना पूर्व एमाले नेता सँगे बैसि कऽ कएल भोजन आ बातचित एखनो रोमाञ्चित करैत अछि।

रोमाञ्चित खाएकें मानेमे नहि बातचितक मानेमे अछि। भेल ई रहै जे, एमाले नेता रघुवीर महासेठ धनुषा निर्वाचन क्षेत्र नम्बर ५ क उपचुनावमे जितलाक बाद होटल रामामे पत्रकार सम्मेलन कयने रहथि। बातचित करिते रहथि की समारोहमे एमाले नेता माधवकुमार नेपाल सेहो पहुँच गेला।

छल पत्रकार सम्मेलन रघुवीर महासेठकें आ बनि गेल माधव कुमार नेपाल कें। फेर ओ समाचारक खोराक सभ देबय लगलाह आ ई क्रम ४५ मिनेट धरि चलल। तत्कालीन प्रधानमन्त्री प्रचण्ड पर ओ कनी बेसिए आक्रमक रहथि।

सम्मेलन समाप्त भेलाक बाद पत्रकार सभक भोजनकें सेहो व्यवस्था रहैक। क्रमश: पंक्तिमे लागि सभ भोजन लेबय लागल। कनी बेसी भीड रहैक तऽ हम सभ पंक्तिमे सेहो रही आ उपचुनावक विषय पर चर्चा परिचर्चा करय लगलहुँ।

रघुवीर महासेठजीक धर्मपत्नी एवं सभासद जुली महतो हमरा कहि रहल छली जे, सभ सँ बेसी विरोध अही कएलहुँ। प्रसंगवश ओ कहली, 'हमरा तऽ विश्वासे नहि छल जे महासेठजी जितता !'

हमरा मुँह सँ खसि पडल सभ भगवानक देन छैक। जानकी जीक कृपा रहत तऽ महासेठजी मन्त्री सेहो भऽ सकैत छथि।

एहि पर जुलीजीकें कोनो प्रतिक्रिया अबैत ताहि सँ पहिनहि हमरा पाछामे भोजन लेबय लेल प्लेट लऽ ठाढ एमाले नेता माधव कुमार नेपाल बात कटैत कहैत छथि, 'जानकीजीकें कृपा सँ मन्त्री भऽ सकैत छथि !'

हम कहलियैक, 'अवश्य।'

फेर ओ अपन अन्दाजमे जिज्ञासा रखलथि, 'से कोना, अपने कहि सकैत छी !' हमरा कहय सँ पहिने एकटा पत्रकार मित्र बीचेमे कहि बैसला जे, 'धनुषा निर्वाचन क्षेत्र नम्बर ५ मे शुरुए सँ तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक श्रीकृष्ण यादवक स्थिति बढीया छलैक मुदा माला रघुवीर महासेठक गर्दनमे आएल।'

पत्रकार मित्रक बातमे थपैत हम बजलहुँ, जानकीजीक कृपा रहतैक तऽ अपनहुँ ...।

माधवजी बीचेमे बजलथि, 'हमहुँ प्रधानमन्त्री भऽ सकैत छी...!'

हम कहय चाहैत छलहुँ जे, ओ पार्टी अध्यक्ष भऽ सकैत छथि मुदा ओ प्रधानमन्त्रीक चर्चा चला देलन्हि तएँ हम सभ एक स्वर सँ कहलहुँ, किए नहि भऽ सकैत छी।

अहि पर किछु देर माधवजीक मुखमण्डल देखलियन्हि जे ओ किछु सोचय लगला। फेर कनिक दीर्घ श्वास लेलाक बाद त हमर सभक बातकें मजाकमे लैत पुन: पुछि देलन्हि, 'अच्छा कहु जानकीजी कें कृपा केना हेतन्हि !'

ई प्रसंग सभ चलिए रहल छलैक की भोजन लेबयबला स्थान पर हम सभ पहुँच गेलहुँ। हम माधवजीक आगा जाएकें लेल आग्रह कएलहुँ। मुदा ओ अस्वीकार करैत कहलन्हि, 'हमरो नम्बर चलिये एतैक अपने सभ लेल जाऊ।'

किछु देरक बाद हम सभ भोजन कएलहुँ। एक्के टेबुलपर रहि। माधव जी कें कनी सर्दी भेल छलन्हि तएँ ओ अपन दही हमरे दऽ देलथि। दही खाएकें हमर मोन नहि छल मुदा माधव जी सन नेता कोनो चीज दैथि आ ओकरा लोक अस्वीकार कऽ देय इ हमर बसक बात नहि छल। हुनका देखलियन्हि राइकें साग बहुत रुचि पूर्वक खाइत। मन भेल हमहुँ अपनामे सँ इ साग हुनका दऽ दियैन्ह ताधरि एकगोटे एक करछ साग हुनका आगामे राखि देलखिन। फेर देखलियन्हि माधव नेपालजी कनी-कनी खएबो करैथि आ पत्रकार सभसँग नेपालक वर्तमान राजनीति पर बातचित कऽ रहल छथि। बगलमे ठाढ भऽ कऽ हमहुँ किछु देर हुनक बात सुनलहुँ। तेकर बाद हमरा अबेर भऽ रहल छल तएँ हम हुनका आ रघुवीर महासेठ जी सँग आज्ञा लेलहुँ।

माधवजीक भोजन लेबय लग भेल बातचितक अन्तिम अंश सँ लगैत अछि ओ राजनीतिमे सेहो पंक्तिमे लागि अपन नम्बर कहिया आयत तेकर प्रतिक्षा कऽ रहल छलथि। हुनका शायद बुझल छल कहियो हुनकर नम्बर एबे करत। संयोग कही ओ दिन बितला डेढ महिना नहि भेल अछि माधवजी देशक प्रधानमन्त्री भऽ गेलाह। जानकीजीक कृपा वा हुनक राजनीतिमे सक्रियता रङ्ग लायल ! ओ डिनर तऽ स्मरण अबिते अछि संगहि एकबेर इच्छा होइत अछि माधव जी संग भेट होइक आ पुछितियन्हि, कोना जानकी जीकें इच्छा होइत अछि तऽ कोना लोक पदपर पहुँच जाइत छैक। आबो बुझलियै कि नहि !

अस्पतालक इमरजेन्सी वार्डमे एक राति

जनकपुर अञ्चल अस्पतालमे कतेको बेर हम गेल छी। कोनो विशेष घटना भेल तऽ अस्पताल जेबे करैत छी। रिपोर्टिङ्क क्रममे अस्पताल पहुँचब दिनचर्या बनि गेल अछि। मुदा अस्पतालमे हम पूरे राति एहिबेर बितौलहुँ अछि। पत्रकारक रुपमे हमर पहिल अनुभव छल। एकटा सम्बन्धित व्यक्तिकें मोन खराब भेलाक बाद २०६७ माघ ७ गतेक राति अस्पतालक इमरजेन्सी वार्डमे बितेलहुँ।

जाढ बेसी भेलाक कारण राति भरि इमरजेन्सी वार्डमे रहल रोगी होइक वा कुरुवा सभ एकटा छोटका वार्डमे बैसल छल। हमरो राति ओहिना कऽ बितल। हम जिनका लऽ कऽ पहुँचल छलहुँ हुनका किछुए कालमे स्थिति समान्य भऽ गेल छल। तएँ खासे हमसभ तनावमे नहि छलहुँ वा कही रिलेक्से मुडमे ओतय रहलहुँ। बहुतो रोगी, कुरुवा आ डाक्टरसंग बातचित करयके अवसर भेटल। जाढ बेसी भेलाक कारण कमे रोगी अबैत अछि कहल गेल छल। तएँ २/४ टा बेड खाली सेहो देखने रही। अस्पतालक कर्मचारीसभ कहलन्हि, 'जाढक कारण कनिक राहत भेल अछि।

नहि तऽ अहिमे टाङ राखयकेँ जगह नहि रहैत अछि।' हम सोचलहुँ इमरजेन्सी वार्डमे ६/७ टा रोगी आबि जायत तऽ ई अहिना भरि जेतैक। मुदा करिब १२ बजे राति धरि अस्पतालक कर्मचारीसभक अनुमानक विपरित भरि गेल छल।

अस्पतालक विषयमे जेना कहल जाइत अछि जे रोगी कनैत रहैत अछि मुदा अस्पतालक कर्मचारी देखबो नहि करैत अछि ई स्थिति नहि छल। एकटा रोगी पर जहिना २/३ टा कुरुवा रहैत अछि तहिना लडकासभ छल। पता लागल ओसभ कोनो इन्स्टिट्युटमे पढैत छथि आ यतय अभ्यास। विद्यार्थीसभक अभ्यासक कारण चिकित्सक होइक वा अन्य कर्मचारी सभकेँ आइ काल्हि जागय पडैत अछि।

चिकित्सक बैसल रुममे हिटर राखल छल मुदा कखनो चिकित्सक वा अस्पतालक कर्मचारीकेँ ओहि रुममे नहि देखलगेल। हुनका ओतय किओ नहि बैसल छलाह। सभ अपनामे व्यस्त।

एतेक सकारात्मक परिवर्तन अस्पतालक व्यवस्थापनक कारण तऽ पक्के नहि छल मुदा बाहर सँ हाइन्डस एला सँ एहिमे सुधार भेल अछि। ओना एहि बेर इहो देखयमे आएल जे कौंल कएला पर अस्पतालक सिनियर चिकित्सकसभ पहुँचैत छथि।

ओतय दुर्घटनाबाला केस अएलाक बाद मात्र समस्या होइत अछि बाद बाँकी हमसभ निपैट लैत छी ओतयकेँ कर्मचारीसभ कहलन्हि। नीक सर्जन आ प्रविधि उपलब्ध नहि भेलाक दुःख हुनको सभकेँ छन्हि। मुदा कएल की जाय ?

रोगीक चाप यतेक अछि जे ई एक दिनमे भऽ गेल छल से तऽ पक्के नहि। मुदा बेड पर की निचोमे रोगीकेँ राखल गेल छल। मुदा ओकरा सभकेँ कोना व्यवस्थापन कएल जाय एहि पर किनको ध्यान नहि जाइत अछि। सफाइकेँ तऽ बाते छोडू। इमरजेन्सी वार्डक आगुबेमे लोक लघुशंका करैत छल। बिना रोकटोक अर्थात एकरा सभ स्वीकार कऽ लेने अछि। जनकपुरक नीजि नर्सिङ होममे सेहो रहल छी मुदा एखनो सरकारीए अस्पताल बढिया अछि कहि सकैत छी।

इमरजेन्सी वार्डमे एकटा बात नयाँ देखयमे आएल जिनकर रोगी ओहि ठाम नहि छन्हि किछु व्यक्ति सेहो रातिमे कय राउण्ड अबैत छथि। हुनकर की उद्देश्य छन्हि से हमरा बुझयमे नहि आएल मुदा ओ अपनाकेँ दादा जकाँ अबैत देखलगेल।

कहल जाइत छैक ओ दादासभ एहिना अबैत रहैत अछि। कोनो झगडा भेल की ओहिमे सहभागि भऽ जाइत अछि। एहि सँ हुनकासभकेँ की फाइदा होइत अछि ई तऽ पता नहि चलल। खैर ओतय सँ एला २/३ दिन भऽ गेल अछि मुदा अस्पतालमे बिताएल एक राति एकटा नयाँ अनुभव देलक।

ट्रष्टकोष नहि चलावयकें कसमे खायल गेल छैक की ?

मिथिला नाट्य कला परिषदक २०६८ साउन महिनामे भेल साधारण सभामे मैथिली विकास ट्रष्ट कोषपर हम कसिकऽ बजलहुँ। हमरा एहिपर जोड देबाक आशय छल, एहि विषय पर बहस होइक। अहुँ दूआरे जे ओहि समारोहमे ट्रष्ट कोषक सदस्य सचिव आ दू गोट सदस्य उपस्थित छलथि। मुदा ओसभ किछु नहि बजलथि। किएक नहि बजलथि, हमरा नहि बुझल अछि। हमरा बगलमे बैसल एक मित्र कहलन्हि, अहाँ किएक सभ चीजकेँ ठिक्का लऽलैत छी। नहि ट्रष्ट चलैत छैक तऽ की भेलैक ? बहुतो काज एहन छैक जे गडबड होइत छैक।

कनेककाल लेल हमरो लागल जे ओ मित्र सही कहैत छथि बेकारमे हम कोनो बातमे पंङ्गा लऽलैत छी। अहुँमे किछु गोटे असन्तुष्ट भऽ जएता। हमरा दूइए वर्ष भेल अछि एकटा मैथिलीकर्मीक विरोधमे कलम चलेलापर, ओ महानुभाव तऽ हमर समाचारकेँ लऽकऽ एतेक तमसा गेला जे गुरु आ शिष्यक परम्परकेँ बिसरि ओ हमरा एमएकेँ परीक्षामे सभ सँ कम नम्बर देलन्हि। एमएकेँ सभ विषयकेँ काँपी ओहे जँचैत छथि फेर प्राक्टिकल नम्बर सेहो ओहे दैत छथि। २० नम्बरकेँ प्राक्टिकलमे सभ विषयमे १०-१० नम्बर देलन्हि जखन की आओर केँ १५ सँ कम प्राय नहि

छल। कॉपीपर पास मार्क देल न्हि। एहन करयवला कोनो अन्य व्यक्ति नहि छला मैथिली विभागक प्रमुख डाक्टर पशुपति नाथ भा।

मुदा की एहिना सभ गोटे सोचत तऽ मैथिलीक विकास हेतैक ? ट्रष्ट कोष नहि चलला सँ ककरा फाइदा भऽरहल अछि ? एकरा पूर्णत: बन्द कऽदेल जाए, नहि तऽ काज शुरु कएल जाए एहि दुनुपर बहस आवश्यक अछि।

बन्द करब कोनो दृष्टि सँ बढ़िया नहि हेत। एक तऽ मैथिलीक नामपर कतहुँ सँ पैसा अबैत नहि अछि, जँ एबो कएल तऽ काज नहि भेल आ पैसा फिर्ता चलि जाएत। एहि सँ दुर्भाग्य आओर की भऽसकैत अछि!

मैथिली विकास ट्रष्ट कोषकेँ संयोजक छथि मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार डा.राजेन्द्र विमल, सदस्य सचिवमे नेपाल संगीत तथा नाट्य प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ रमेश रंजन, सदस्यमे पूर्वाञ्चल विश्व विद्यालयक उपकुलपति डा. रामावतार यादव, मिथिला नाट्य कला परिषदक अध्यक्ष सुनिल मल्लिक, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ राम भरोष कापड़ि भ्रमर, जिल्ला विकास समिति धनुषाक पूर्व सभापति राम चरित्र साह, एकीकृत नेकपा माओवादीक नेता रोशन जनकपुरी, मिथिला राज्य संघर्ष समितिक संयोजक परमेश्वर कापड़ि आ रामानन्द युवा क्लबक पूर्व अध्यक्ष जीवनाथ चौधरी। ई व्यक्तिसभ अपनाआपमे संस्था छथि। ई सभ असफलताक मुँह कहियो देखबे नहि कएने छथि। मुदा एहिमे कोना असफल भऽगेल छथि ! सोचैत छी तऽ आश्चर्य लगैत अछि। हिनकासभक निष्ठापर प्रश्ने नहि उठाओल जा सकैत अछि। मुदा ट्रष्ट कोषक काज देखलापर मस्तिष्कमे बनल सभ प्रभाव समाप्त भऽजाइत अछि। हमरा कखनो कालकऽ लगैत अछि जेना कोष चलाबयक विषयमे ई सभ कसमे खा लेने होइथ। एक महिना भितर हमसभ मिथिला डटकममे तीन टा समाचार छपलहुँ, रेडियो मिथिलाक लोकप्रिय कार्यक्रम मिथिला दरबारमे दू टा भाग करिब-करिब एहि पर चलल। मुदा आरोप प्रत्यारोप बाहेक किछु बाहर नहि आएल। कोषक सदस्य सचिव रमेश रञ्जन कहैत छथि, 'जल्दीए काज शुरु करब।' कोषक सदस्य त्रय सुनिल मल्लिक, परमेश्वर कापड़ि आ जीवनाथ चौधरी पूनर्गठनक मांग करैत छथि। तहिना कोषक सदस्यद्वय राम भरोष कापड़ि भ्रमर आ डा. रामावतार यादव एहिमे जे काज नहि करैत अछि हुनका स्थानपर नयाँ व्यक्तिकेँ आनयकेँ बात करैत छथि। राम भरोषजी तऽ मुक्ति तककेँ बात करय लागल छथि। मुदा फल किछु नहि प्राप्त भऽरहल अछि। एहि कोषकेँ मात्र नहि आब तऽ हमरासभकेँ सरकारद्वारा स्थापित एक करोड़क विद्यापति गुठी काज करत की नहि, एहि पर सेहो शंका लागय लागल अछि।

जिल्ला विकास समितिक कोषक ई हाल अछि तऽ सरकारक कोषकेँ की हाल हेत ? मैथिलीक विकास किएक नहि भऽरहल अछि। एकर छोट उदाहरण अहुँ सँ लेल जा सकैत अछि। किओ कहता पैसा नहि अछि तएँ काज नहि होइत अछि। मुदा एहि ठाम तऽ पैसो अछि तैयो काज नहि भऽरहल अछि। आदरणीय अग्रज लोकनिँ मैथिली विकास ट्रष्ट कोषकेँ चलाबय लेल पूर्वाग्रह छोड़ू अबेर भऽरहल अछि।

हात चाटि(चाटि कऽ नेताजी स्वादि रहल

धनुषा निर्वाचन क्षेत्र नम्बर ५ मे उपचुनावक प्रचार कोन रुपमे चलि रहल अछि से बुझबाक लेल २०६५ चैत २३ गते अन्दुपट्टी कटरैत गेल छलहुँ। एमाले दिस सँ उम्मेदवार रहल नेता रघुवीर महासेठक घरद्वारि कार्यक्रम छल। घरद्वारिमे नेताजी जनता सँ कोन रुप सँ संवाद स्थापित करैत छथि, इहो समाचार छल। तएँ हुनका संगे किछु घर घुमलहुँ। ओ चौरीमे जा किसान सभ सँ मत सेहो मँगलन्हि।

दिनक ११ बाजल। हम अन्दुपट्टी सँ रेडियो मिथिलाक लेल समाचारमे लाइव कएलहुँ। अही क्रममे महासेठजी सँ रेडियोमे बातचित सेहो भेल। ई क्रम समाप्त भेल की बगलक एकटा घरमे देखलियै नीचामे सतरंजी ओछायल गेल आ कार्यकर्ता सभ संग रघुवीर महासेठ जलपान करय लेल बैसि गेला। हमर काज पुरा भऽ गेल छल हम जनकपुर प्रस्थान करय लेल सोचिए रहल छलहुँ की ओ हमरो जलपान कऽ कऽ जाए लेल आग्रह करय लगला।

ओतयकें जे स्थिति छलैक हम बैसय सँ किछु देर थकमका गेलहुँ। मुदा महासेठजी हात पकड़ि कऽ बैसा लेलथि आ कहय लगलथि, 'अहि जलपानमे जतेक आनन्द छैक ओतेक फाइभ स्टार होटलोमे नहि भऽ सकैया।'

हारि कऽ नेता जी सँग जलपान करय लेल बैसि गेलहुँ। किछुए देरमे चुरा, दही, चिनी आ अल्लुक तरकारी पात पर चलि आएल। हमरा लेल चारिमे तीनटा चिज बांतर छल कारण हम चुरा, दही आ चिनी प्राय: नहि खाइत छी। हम अल्लु आ चुरा मुँहमे धरयकें प्रयास कऽ रहल छलहुँ की देखलियै नेताजीकें चुरा दहीकें प्रवचन शुरु भऽ गेल। हुनक मुँह सँ खसल 'आह ! कतेक बढ़िंया दही।' ओतहि एक गोटे बजला, 'ई जनकपुरक चन्देकें फेल कऽ देतैक।' चन्दे माने जनकपुरक सभ सँ बड़का दहीक सप्लाएर। चुरा दही पर जोड़ सभ दैत गेलाह आ हमरो लग एहन स्थिति आयल जे सभ निघैट गेल। कही जे हमहुँ एक बाटी अन्दाज दही खा लेलहुँ।

अन्दुपट्टीमे जिनका घरमे हम सभ जलपान कएने छलहुँ खुआवएकें लऽ कऽ हुनका सभक स्नेह देखलियै, शब्दमे वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि। सम्भवत: भगवान सेहो किनको घरमे आबय तऽ ओतेक सत्कार नहि लोक कऽ सकैया। जाहि घरमे नेताजीक जलपानक व्यवस्था कएल गेल छल ओ घर लागल समान्य जकाँ, जकरा मध्यमवर्गी सेहो नहि कहि सकैत छी। एकटा महिस आ किछु खेतपथारपर ओ घर चलैत छल हएत। नेताजी आ हुनका संग जनकपुर सँ पहुँचल लोक कतेक बेसी खाए ताहिमे ओ सभ लागल छला। एतेक तक कि हम अपनो पातमे देखलहुँ, जे मिरचाइए देने छला तऽ दुटा आ नेता जीके तऽ बाते छोड़ू। नेताेजी कम नहि, स्नेहकें बहुत सम्मान दऽ रहल छला। देखलहुँ आंगुर चाटि चाटिकऽ चुरा दही खा रहल। महासेठजीक विषयमे कहल जाइत छैक, विना मिनिरल वाटरकें ओ पानियो नहि पिबैत छथि। मुदा आइ तऽ हद भऽ गेल छल।

जलपानक बाद हम जनकपुर फिर्ताक लेल किछुए दूर गेल हैब की देखलियै तीन चारि गोटेकें भानस करैत। नजदिकेमे बच्चा सभ नाचि रहल छल। ओकरा सभके देखि लागल, किछु भऽ रहल छैक। ओहिना मुँह सँ खासि पड़ल 'गाममे बराबर भोज होइते रहैत छैक।'

ओतहि भोजन बना रहल एक गोटे वृद्ध कहलन्हि, 'भोज नहि छैक, जनकपुर सँ नेतासभ आबि रहल छथिन, तिनकें लेल भोजन बनि रहल छैक।'

बादमे पत्ता चलल राष्ट्रपति पुत्र डा. चन्द्र मोहन यादवक भोजन अन्दुपट्टिमे छैक। डा. यादव नेपाली काँग्रेस सँ उम्मेदवार छथि सम्भवत: ओतहुँ ओहने सत्कार भेल हेतैक।

आइ काल्हि उप चुनावमे ठाढ़ भेल सभ उम्मेदवार गाममे भोजन जलपान करैत छथि। कोनो दिन एहि गाममे जलपान तऽ ओहि गाममे भोजन। जनकपुरोसँ कोनो उम्मेदबारके अपन घरो सँ जायके रहैत अछि तऽ घरमे जलपान वा भोजन नहि करैत छथि। कार्यकर्ता वा समर्थकके घरमे खेबे करैत छथि।

फेर एक गाममे एक दिन। डा. चन्द्रमोहनक बाबु डा. राम बरण यादव पौरका सालक चुनाव अर्थात संविधान सभाक चुनावमे एहिना क्षेत्रमे जलपान भोजन करथि मुदा जीत कऽ गेलाक बाद अधिकांश भोजन आ जलपान कराबयबलाकेँ घरमे घुमियो कऽ नहि आएला अछि। मुदा तैयो गामबासी खुशी अछि।

प्रसंगवश अन्दुपट्टीक एक महिला कहली, 'कम्तीमे देशक सर्वोच्च स्थानमे बैसल व्यक्ति हमरा घरमे एक छाक खेने तऽ छथि। इहो नेता सभ खुब बड़का लोक बनैथ से सपना देखैत छथि।'

सहीमे गामक लोक महान होइत अछि। खैर हमरा लेल तऽ निके रहल चुनावक रिपेटिङ्ग कएलहुँ आ ओतेक गोटे सँ भेट भेल आ सभ सँ बेसी उम्मेदबार सँगे जलपान कएलहुँ। जहिना खुआबयबला अपना घरमे फलाँ नेताजी भोजन वा जलपान कएने छथि तहिना हमहुँ नेताजी संगे भोजन वा जलपान कएने छी कहि कऽ खुशी होइत छी। आब तऽ हमहुँ कहि सकब उम्मेदबार सँगे जलपान कएने छी।

चुनावक नामपर पैसाक बहस

धनुषा निर्वाचन क्षेत्र नम्बर ५ क उपनिर्वाचनक प्रचार-प्रसार कोना चलि रहल अछि, ई बुझबाक लेल २०६५ चैत १६ गते सखुवा महेन्द्रनगर पहुँचले छलहुँ की, तीन-चारि गोटे हमरा लग आबि कहैत अछि 'भाइजी, कोन पार्टीक प्रचारमे आएल छियै ? हम सभ तऽ निर्णय कयने छी, जे बेसी पैसा देत ओकरे भोट देबै।'

'पैसा !'

'हँ। अहि बेर हम सभ खोलि कऽ पैसा मँगैत छियैक।'

'इन्ट्रेष्टिङ !'

ओ सभ हमरा कोनो उम्मेदवार छी बुझिरहल छल। हम हुनका सभ सँ चाहलहुँ जे पैसा कें की खेल भऽ रहल छैक से बुझबामे चलि आबए। तएँ बातकें बढ़बैत हुनकें सभ संगे रहल एक महिला सँ पुछलियन्हि, 'की अहुँ कें पैसा चाही !'

ओ कनी क्रोधित होइत बजली, 'किएक नहि, अहाँ सभ जखन हमर भोट लऽ कऽ ढौएढाकी कमा सकैत छी तऽ किए नहि हम सभ पैसा माँगु !'

'कतेक गोटे देलक अछि !' हमर जिज्ञासा पर ओ कहली, 'प्रचार शुरु होबय सँ पहिने बहुत किछु सुनने छलहुँ जे फलाँ महासेठ, फलाँ यादव, फलाँ डाक्टर ठाढ़ भेल छैक। बहुते पैसा भेटत मुदा एकटा स्वतन्त्र उम्मेदवार पचास रुपैया देलक तकरबाद किओ नहि देलक अछि।'

ओ महिला सँगे रहल एकटा वृद्धा सेहो हमरा दिस ललचायल मुद्रामे ताकि रहल छली। हमरा लागल जे हुनक मुखाकृति कहि रहल अछि जे हम हुनका बिडी पिय लेल सेहो जँ पैसा नहि देबैक तऽ ओ हमरा कपडा फारि देती। तथापि हम हुनका दिस तकैत पुछलहुँ, 'दाइ अहाँकें किओ पैसा देलक अछि की नहि !'

'एक दु गोटे कहलक अछि। मुदा की कहूँ अगो बेर ठैकि लेलक, अहुँ तऽ कम्तीमे एकरा सभकें नहि ठकियौ !'

हम वृद्धा दिस तकैत बजलहुँ 'दाइ अहाँकें लगैत अछि जे हम ठकब !'

'नहि बौआ, अहाँ ठकियो नहि सकैत छी। हे, हमहुँ सभ अहींकें भोट देब।' कहैत ओ वृद्धा अपन ६ बरखक पोतीकें हल्ला कऽ बजाबए लगली। सम्भवत: हुनका लागल जे हमरा सँ पोतीयोकें किछु दियादी।

आ पोती छल जे हमरा सभ दिस आबय लेल तयार नहि

छल। एहि पर पोतीकें खुब गाढ़ि पढ़य लगली। हमरा लगाल जे चर्चा एतैह समाप्त नहि करय पड़य तएँ हम एकटा युवक दिस तकैत कहलहुँ 'तों प्रचार-प्रचार करए किए नहि लागल छह !'

'की कहू मालिक, पासपोर्ट लगौने छियै। कखनो फोन आबि सकैत अछि। तएँ घरेमे रहैत छी। दस दिन पहिने एजेन्ट कहलक जे सभ काज भऽ गेल छैक मुदा की कहूँ फोने नहि अबैत अछि !'

हमरा लागल जे एकरा उम्मेदवारक पैसा सँ बेसी पासपोर्टक चिन्ता छैक। तथापि हम पुछलियैक, 'तोरा तऽ उम्मेदवार पैसा नहि देतह कारण तो तऽ विदेश चलि जेबहक !'

हम प्रश्न करिते रही की ओ बीचेमे रौकैत बाजल, 'जाउ एतय सँ अहाँ नहि देबे तऽ की हजार रुपैया सँ बेसी देबयबला उम्मेदवार क्षेत्रमे नहि छैक से। भेस्ट टोपी तऽ दु गोटे दऽ गेलहे।'

हम कनी शान्त करैत पुछलियैक, 'की पैसाकें किओ आश्वासन देने छह की नहि !'

'किएक नहि, दू गोटे तऽ दू-दू सय रुपैया देब कहलक अछि आ हमर साढू कहलन्हि जे डाक्टर साहेबकें बेटा सँ जतेक मागब ततेक देता।'

तावतेमे वृद्धाक पोती चलि आएल। पोतीकें अबैते ओ हमरा सँ परिचय करबैत बजली, 'एकरा एकटा कपडा किन दियौ। एकर माइ अहींकें भोट देत।'

बच्चा हमरा दिस एना ताकय जेना लगैक ओकरा हम अपन कपड़ा खोलि कऽ पहिरा दियैक।

साँझ भऽ रहल छलैक। हमरा जनकपुर आबयकें छल मुदा केना कहियो जे हम पत्रकार छी। हम समाचारक लेल अहाँ सभ सँ बातचित करैत छलहुँ।

कनी प्रसंगकें मोड़ैत हम बजलहुँ 'पत्रकार सभ एतय अबैत अछि की नहि !' लागल जे पत्रकार नाम सँ ओ सभ नहि चिन्हैत अछि। फेर एफएमक बात कहलियै तऽ बुझि गेल। कहलक, 'समाचार सुनै छी मुदा कें बजै छैक तेकरा नहि चिन्हैत छी !'

डराइते हम कहलहुँ 'हम ओहे एफएमक पत्रकार छी।' जेना लागल ओ सभ बुझि गेल जे एहि ठाम किछु लाभ होबय बला नहि अछि आ क्रमश: सभ घसकए लागल। हमरो जान छुटल जेना लागल हमहुँ थरफराइते जीपक गुरुजीकें कहलियै, 'चलय अबेर नहि करय नहि तऽ जान नहि बचयबला छह।' हमरासंगे रेडियो मिथिलाक किछु सहकर्मीसभ सेहो छल। हमर संवाद नहि सुनने छल ओ सभ आश्चर्यमे छल जे हम एना किए डराएल जकाँ बजलहुँ।

नरो जुलुश ज्योतिषि स सल्लाह लऽ

'कार्यकर्ता सभ अगुता गेल छैक, जल्दी चलल जाउ ने !'
'पंडिजी कें पुछैत छियैक, कतेक बजे चलबाक छैक।'
'सभ गोटे मनोनयन दर्ता करा चुकलै जल्दी चलल जाउ ने !'

'पंडिजी कहैत छथि, आधा घण्टा आओर प्रतीक्षा करय लेल।'

'नारा लगबैत पहिने नगर परिक्रमा करब की ओतहि जा क ?'

'पंडिजी कें पुछैत छियैक।'

धनुषा निर्वाचन क्षेत्र नम्बर ५ सँ उपनिर्वाचनक लेल उम्मेदवारी दर्ता करोनिहार अधिकांश नेता २०६५ चैत २ गते इएह कहबाक स्थितिमे रहथि । नारा लगबैत जाउ की नहि, तकर आदेश सेहो पंडिजी सँ लऽ रहल रहथि।

एक दिस धर्म निरपेक्ष राष्ट्र नेपाल बनि गेल अछि तऽ दोसर दिस नेता सभ एखनो वएह धर्मक सहारा लऽ रहल छथि । तराइ मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक नेता ई. श्रीकृष्ण यादव नगरमे नारा जुलुस करय सँ पहिनहि निर्वाचन कार्यालयमे आबि कऽ मनोनयन फारम लऽ लेलन्हि।

पुरा-पुरा ज्योतिषिक सल्लाह मानलन्हि। एतेक धरि की एकटा समतोला ओ भरि दिन अपन हाथमे रखलथि। ओ समतोला राखयकें की अर्थ छलैक। हुनका सँ बेर-बेर पुछलाक बादो ओ नहि कहलाह। कहल जाइत छैक जे श्रीकृष्ण यादवजी चारि बेर जितैत-जितैत चुनाव हारि गेलथि। जनतामे अत्यधिक लोकप्रिय भेलाक बादो कत्तहुँ कोनो कसर छैक सएह कसर मेटाबयमे ओ लागल छथि।

राष्ट्रपति पुत्र एवं नेपाली काँग्रेसक नेता डा चन्द्रमोहन यादव सेहो ज्योतिषि सँ सल्लाह लऽ कऽ मनोनयन पत्र दर्ता करौलन्हि। अपने उम्मेदबार बनय समयमे सभ दिन ज्योतिषि पंडिजीकें गारि पढ़यबला डा. रामवरण यादवक पुत्र जखन चुनाव लड़य लेल जनकपुर आबय लगलथि तऽ ओ पुरा-पुर पुत्रकें धार्मिक बना देलथि। आ तकर असर मनोनयन दिन सेहो देखल गेल। पहिने पूजा पाठ तकरबाद मनोनयन ! मनोनयन दिन प्रदर्शन सभ सँ बेसी महत्व रहैत छैक। तकर सेहो ख्याल नेता सभ नहि कयलन्हि। जीतयकें छैक ताहिमे तन्त्र मन्त्र बहुत काज आबि सकैत अछि। सभकें मुँह सँ इएह सुनिरहल छलहुँ। नेपाली काँग्रेसक नेता शेरबहादुर देउवाक विषयमे कहल जाइत छैक जे जतेक बेर ओ प्रधानमन्त्री भेला ततेक बेर गृह प्रवेश जकाँ सिंहदरबार प्रवेश कएलन्हि। कोन दिशामे बैसल जाय तकर सल्लाह ओ ज्योतिषि सँ पुछि कऽ करैत छथि। देउवा निकट व्यक्ति सभक कहब छैक जे देउवा सँ बेसी हुनक कनियाँ आरजु देउवा तन्त्र मन्त्रमे विश्वास करैत छथि। जे सरकार नेपालमे धर्म निरपेक्ष राष्ट्र घोषणा कएलक तकरे गृहमन्त्री कृष्ण प्रसाद सिटौला अपन कार्यकालमे तीन बेर पूजा करबाक लेल भारतक वृन्दावन गेल रहथि।

चुनाव हो वा सामान्य जीवनमे सभ सँ बेसी किओ धर्मक सहारा लैत अछि तऽ ओ नेता सभ छथि। एतेक धार्मिक लोकसभ किए धर्म निरपेक्षतामे जोड़ दैत छथि तऽ एकर सही उत्तर कम्तीमे हुनका सभ लग नहि छन्हि।

भारतमे सेहो देखल गेल अछि। नेता सभ बिना ज्योतिषि आ तान्त्रिकक सल्लाह बिना घरो सँ नहि निकलैत छथि। भारतीय संचार माध्यम सभक खबरकें जँ विश्वास करी तऽ भारतक अधिकांश बड़का नेता सभ एक-एकटा ज्योतिषि तान्त्रिककें सल्लाहकारक रुपमे रखने छथि। भारतक पूर्वप्रधानमन्त्री पिवी नरसिंहा राव आ चर्चित तान्त्रिक चन्द्रा स्वामीक मित्रता भारतमे महिनो खबर बनल छल।

भारतक उत्तर प्रदेशक चुनावमे समाजवादी नेता मुलायम सिंह यादवक पुत्र अखिलेश प्रसाद यादव मनोनयन दर्ता कराबय सँ पूर्व दू घण्टा धरि होम जाप कएने रहथि। अमेरिकाक चुनावमे सेहो ज्योतिषि सभक झलक देखल गेल छल। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा आ हुनक प्रतिद्वन्दी जोन मेकन सेहो चर्चमे जाइथि आ मन्दिर मस्जिदमे सेहो। जानकार सभक अनुसार होम, जाप, पूजा आ पाठ कएला सँ शक्ति भेटैत अछि। तकरे पएबाक लेल नेता सभ ई काज करैत छथि। खैर हम सभ इएह कामना करब सभक मनोरथ भगवान पूरा करथि।

मुदा जनताक मनोरथकें पूरा करबाक बात पर सेहो विचार होबाक चाही। ज्योतिषि आ तान्त्रिक सभ नेतासभकें इम्हरो ध्यान जाइ ताहिक लेल किछु 'टिप्स' दैथि।

कहियाधरि भगवाने भरोसे मेडिकल का लेज चलत ?

२०६८ साउन १४ गते जानकी मेडिल कॉलेजमे विद्यार्थीसभक आन्दोलन चरमपर छल। ओहि समय कॉलेजमे रिर्पोटिङ्के लेल गेल रही। कॉलेजमे हम दोसर बेर पहुँचल छलहुँ। एहि सँ पहिने हम अपन मायकें कानक इलाजक लेल गेल छलहुँ आ एहि बेर रिर्पोटिङ करय लेल। हमर दुनू अनुभव कहैत अछि संचालकसभ एहन कॉलेज नहि खोलितथि तऽ नहि होइतैक ?

बहुतो व्यवसाय एहन छैक जाहिमे कमे लगानी कऽकऽ कमायल जा सकैत अछि। अहुँ सँ नहि होइतैक तऽ डकैती करितथि। मुदा एहन व्यवसाय नहि करितथि।

बेटाकें डाक्टर बनाबय लेल लोक घर घरारी बेचकऽ जानकी मेडिकल कॉलेजमे नामांकन करबैत अछि। मुदा ओहिठाम जे पढाइ होइत अछि भगवान नहि करैक किनको ओतय सँ उतीर्ण भेल विद्यार्थीसँ इलाज कराबय परैक। नहि बढ़िया शिक्षक छैक आ नहि बढ़िया प्राक्टिकलकें लेल वातावरण। जे भऽ रहल अछि भगवाने भरोसे। कानक डाक्टर संजिव कुमार सिन्हा सभ सँ बढ़िया छैक ई सुनि मेडिकल कॉलेजमे गेल छलहुँ। जखन हुनकासंग बातचीत भेल तऽ उपरे उपर सँ इलाज कऽ हमरा मायकें कहलन्हि, जनकपुरमे रामानन्द चौकपर रहल एक नर्सिङ होममे आउ ओतहि नीक सँ जाँचब। हुनका मेडिकल कॉलेजमे जाँचयमे आपत्ति की भऽरहल रहनि, नहि जानि।

बहुतो लोक जनकपुर अंचल अस्पतालकें रेफर अस्पताल कहैत अछि। जानकी मेडिकल कॉलेज सँ जनकपुर अंचल अस्पतालमे रेफर भऽकऽ रोगी अबैत अछि। अर्थात कोन स्तरक सुविधा आ डाक्टर मेडिकल कॉलेजमे रहैत अछि एकर एहि सँ बड़का प्रमाण की भऽसकैत अछि ? विद्यार्थी आन्दोलनकें रिर्पोटिङ करयकें क्रममे रामानन्द चौक लग रहल मेडिकल कॉलेजक होस्टलमे पहुँचल छलहुँ। ओतयकें स्थिति ई देखलहुँ जे कोनो व्यवस्था नहि अछि। ट्वाइलेटक गन्ध बाहर धरि आबि रहल छल। कहनाकऽ विद्यार्थीकें कोचि देल गेल अछि। नहि होस्टलमे कैन्टिन अछि आ नहि कोनो सुविधा। कैन्टिनमे भोजन करबाक लेल रमदैया जाय पड़त होस्टलक विद्यार्थीसभ कहलन्हि।

जानकी मेडिकल कॉलेज आ ओकर होस्टल एहने होइत छैक, एतबेमे काज चलि जाइत छैक तँ जनकपुरक व्यापारीसभ दर्जन सँ बेसी मेडिकल कॉलेज खोलि लेत। रामानन्द चौक लग रहल होस्टल देखि हम ई कहि सकैत छी हमर मिथिला डटकमक कार्यालयक बगलमे मदर टेरेसा स्कूल अछि। मेडिकल कॉलेजक होस्टल सँ बढ़िया एतयकें होस्टल अछि। जँ अविश्वास हो तँ एहि ठाम आबि कऽ देखि सकैत छी।

कॉलेजमे जिनका सँ बात भेल किओ कहथि तीन महिनाकें तलब बाँकी अछि तऽ किओ कहथि चारि महिनाकें।

हमरा ओ दिन स्मरण अबैत अछि शिक्षा मन्त्रालयक तत्कालीन प्रवक्ता लव कुमार त्रिपाठीक नेतृत्वमे जानकी मेडिकल कॉलेजक अवस्था बुझय मन्त्रालयक टोली आएल छल। संयोग सँ जनकपुरक जाहि होटलमे ओसभ भोजन कऽरहल रहथि हमहुँ बैसल रही। जानकी मेडिकल कॉलेजक संचालकसभ हुनकासभकें रेड लेबल सँ स्नान करा देने छलाह। त्रिपाठी दारु पिलाक बाद रेष्टुरेन्टमे नाचय लागल रहथि। ओ काठमाण्डू घुरलाक बाद एकरा इजाजत देलन्हि। अर्थात सरकार विद्यार्थीसभकें भविष्य बरबाद करबाक लेल लाइसेन्स दऽदेलक।

जानकी मेडिकल कॉलेजक संस्थापकसभ कनी मनी विरोध करयवलाकें पैसा सँ मुँह बन्द कऽदैत अछि। मुदा एहि सँ तात्कालिन फाइदा बाहेक किछु नहि भऽसकैत अछि।

माफ करब संचालकसभ नेपालमे शोषण करयवलाकें सरकार भलेहि किछु नहि करैक मुदा उपरवाला देखि रहल अछि। इतिहास छैक बहुतो उद्योग प्रतिष्ठान देखिते-देखिते नाश भऽगेल अछि।

तएँ कॉलेज खोलने छी तऽ नीक शिक्षक राखू, पढाइकें नीक माहौल दिऔक। २६ लाख रुपैया विद्यार्थी सँ लेला सँ नहि पेट भरैय तऽ ५० लाख लिअ मुदा विद्यार्थीकें भविष्य खराव करयवला काज बन्द करु। विद्यार्थी आ ओकर अभिभावककें 'आह' पड़ि सकैत अछि।

'..अपने खेलह ुभरि थारी '

एक जनवरी सँ एक हप्ता पूर्वे सँ रेडियो मिथिला आ मिथिला डट कमक सहकर्मी सभ कहय लागल छल, भाइजी, एक दिन हमरा छुट्टी देबय पड़त। हमरा तऽ उत्तरे नहि भेट रहल छल की कयल जाए।

कारण सभकें नयाँ वर्ष २००९ कें पहिल दिन अर्थात फस्टे जनवरीक दिन छुट्टी चाहैत छलैक। आ कही हमरो ओहि दिन एकटा पिकनिकमे जाएकें छल। हम जाइ आ अन्य गोटेकें नहि जाए दी ई गप्प हमर संस्कारमे नहि छल। एकर बाद असताइत-पछताइत निर्णय कएलहुँ, एहि बेरक एक जनवरीमे समाचार कक्षक सहकर्मी सभ स्टुडियोमे मनायब।

सीमा चौधरीकें पहिनहि छुट्टी दऽ देने छलियैक तएँ हुनका पर ई नियम लागु नहि छल। हमर निर्णयसँ अधिकांश सहकर्मी असन्तुष्ट रहथि मुदा तैयो ओ सभ ओहि दिन अपन-अपन कार्यक्रम क्यान्सिल कऽ कार्यालयमे रहलथि। सहकर्मी रोशन झाक चेहरे देखकऽ हमरा लगैत छल ओ तमसायल छथि।

हुनका तीनटा पिकनिकमे सहभागि होबाक छलन्हि। खैर समाचारमे काम करयबलाकें कतेको बेर एहन स्थितिसँ गुजरय पड़ैत छैक तएँ बड़ भारी बात सेहो नहि छल। महत्वपूर्ण अवसरमे सेहो कार्यालयमे रहय पड़ैत छैक। हमसभ दियाबाती, छठि,होरी, जुडशीतलसभमे अफिसेमे रहैत छी वा समाचारक काज सँ फिल्डमे। पावनि तिहार घरमे वा साथी संगतमे नहि मनबैत छी, दुःख तऽ लगैत अछि मुदा एकर चरो किछु नहि छैक। जनवरीक छुट्टी नहि लेलाक बाद सभगोटे कार्यालयमे काम करय लागलथि तऽ भोरका सिफ्ट कऽ दोसर दिस भोजन करबाक लेल हम घर दिस बिदा भेलहुँ। बाटमे तारा इन्टरप्राइजेजक प्रमुख राजकुमार गुप्ता आ नरेन्द्र झाजी भेट गेलथि आ कहय लगलथि जे हम सभ छोटका पिकनिक रखने छी, अहाँकें सहभागि होबहे परत। गुप्ताजी आ झा जी डिभी ग्रुपक एकटा महत्वपूर्ण व्यक्ति छथि। हुनक सभक आग्रह हमरा आदेश जकाँ लागल आ हम पिकनिकमे बैसि गेलहुँ।

आ किछु देर हुनकर सभक फस्ट जनवरी जश्नमे सहभागी भेलहुँ। घर जाइत छी तऽ देखलियै, हमर बाबुजी सेहो पिकनिकमे गेल छथि। छोट भाय सेहो। हमरा घरमे किछु गोटे भाड़ा लेने छथि तिनको सभकें पत्ता लागल जे, ओ सेहो पिकनिक गेल छथि।

हमरा जनकपुरक मत्स्य पालन कार्यालय लग जयबाक छल ओतय गेलहुँ देखलियै पिकनिक करयबला सभ झुण्डक झुण्ड छल जेना मेला लागल हुए। कतेको परिचित सभसँ सेहो भेट भेल। श्याम चौक पर किछु देर रुकलहुँ तऽ देखलियै फस्ट जनवरी जनकपुरमे मनाबय दर्जनौ भारतीय नागरिक सभ अपन-अपन गाडी लऽ आबिरहल अछि।

फस्ट जनवरी जनकपुरमे एहि रुपसँ मनायल जाइत छैक पहिल बेर हमरा अनुभव भेल। एक दू टा पिकनिक स्पोट पर देखलियै जे सभ भाड़ा बरतन लऽ एकटा परिवार मात्र ओतय पहुँचल छल। दुइए गोटेके कोन पिकनिक ? एहि पर शर्मा थरक ओ व्यक्ति कहलथि, 'पावनि करयकें अपन-अपन तरिका होइत छैक आ पावनिक अर्थ होइत छैक मनोरञ्जन । से हम सभ दुइए परानी एहिमे सहभागी होबय आयल छी।' एकठाम देखलहुँ तीन पुस्ताक एक परिवारक लोक पिकनिकमे सहभागि भेल रहथि। एकठाम तऽ दू गोटे समधी समधीनीकें पिकनिक करैत देखलहुँ। हुनका सभसँ बात केलाक बाद पत्ता चलल जे दूनु गोटेकें बेटा पुतोह अमेरिकामे रहथि छन्हि। दूनु घरमे बुढ़ा बुढ़ी मात्र रहथि छथि । तएँ सोचल गेल जे चारु बुढ़ा बुढ़ी एहिबेर सँगे पिकनिक करी।

ई सभ देखलाक बाद वा कही एकटा रिपोटिङ्ग कएलाक बाद कार्यालय एलहुँ तऽ द्वारे पर सहकर्मी अतिश मिश्र पुछलन्हि, 'की भाइजी पिकनीक तऽ नहि गेल छलहुँ।'

हमरा लागल चोरी पकड़ा गेल। हम कहलियै,'नहि-नहि बाटमे किछु चुरा आ माउस खा लेलहुँ अछि।' एहिपर हुनकर कि प्रतिक्रिया छल मुँह दिस नहि तकलहुँ मुदा हमरा लागल मिथिलाञ्चलमे एकटा कहाबत एहि दुआरे बनल हेतैक जे जितिया पावनि बड़ भारी धीया पुताकें ठोकि सुतेलहुँ आ अपने खेलहुँ भरि थारी। ओह ..... ।

एकटा चुनावक कथा

२०६६ साउन २४ गते भोरमे रामानन्द चौक पर गेल छलहुँ । मोटर साइकिल रोकिते छि की देखलियै, जे दू गोटे पर्चा लऽ कऽ अएलाह आ हमरा हाथमे धरबैत कहय लागलाह 'दाजु हमरामे भोट देबैक ।'

ओतयसँ किछु डेग आगु बढल होएब की एक गोटे पर्चा दैत कहलथि, 'हमरा भोट नहि देब, तऽ कटिस ।' फेर देखलहुँ एक गोटे हमरा हात पकडि कऽ भोट खसाबय दिस लऽ जाए लागल छलाह ।

'हम रामानन्द युवा क्लबक सदस्य नहि छी' बहुत कहला पर ओ हात छोडलथि । दोसर किओ अपनासँगे नहि लऽ जाए तएँ एक गोटे हमर हाथ एतेक जोड सँ घीचलथि जे हमर हाथ दिन भरि दुखाइत रहल ।

ओतय पहुँचयवला हरेक व्यक्ति सभसँग करिब-करिब एहने व्यवहार होइत छल । पत्रकार सभके देखलियै दनादन अपन-अपन एफएम रेडियोमे चुनावक 'लाइभ' कऽ रहल छलथि । हमरो एफ एम सँ साथी सभ पहुँचल छलथि ।

फेर भीड ओतबे । संविधान सभाक निर्वाचनोमे एकटा मतदान केन्द्र पर ओतेक भीड नहि होइत छल । उम्मेदवार सभ मतदाता सभके लेल जलपान, भोजन, ठन्डा, पान, सुपारी सभके व्यवस्था कएने छलथि । मतदाता सभक बैसबाक लेल टेन्ट सभ सेहो गाडल छल । जे मतदाता सभ पैदल नहि आबयकेँ पक्षमे रहथि तिनका लेल जीप, मोटरसाइकिल सभक व्यवस्था कायल गेल छल ।

किछु गोटेके तऽ हवाइ जहाजक टिकट सेहो उम्मेदवार सभ उपलब्ध करौने छलथि । हुनका सभकेँ दूतर्फी व्यवस्था काएल गेल छल ।

१५-१६ वर्षक पत्रकारिता जीवनमे कएटा चुनावक रिपोर्टिङ्ग कएने छी तएँ एहन चुनाव पहिल बेर देखयमे आयल से नहि । तखन क्लबक चुनावमे पहिल बेर ई दृश्य सभ देखलहुँ । किछुए दिन पूर्व राम युवा कमिटीक चुनाव भेल छल । उम्मेदवार सभके शरीरमे बिल्ला टाङ्गल तऽ देखल गेल छल मुदा कोनो प्रकारक टेन्शन अथवा घबराहट नहि । एतय तऽ उम्मेदवार सभ की समर्थक सभ सेहो पुरा जोशमे छला ।

एकटा समर्थक जी बहुत प्रतिष्ठित पदमे सेहो छथि हुनका देखलियैन्ह, एकटा पुलिसके अनाप-सनाप गाडि पढि रहल । हुनकर गाडि एतेक निम्न स्तरक छल जे लिखल नहि जा सकैया ।

सभासद जी सभके तऽ बाते छोडू, बिल्ला लगौने छलथि पर्यवेक्षककेँ मुदा चुनावक पर्यवेक्षण करके बदला अपन-अपन समर्थकके पक्षमे प्रचारमे लागल छलथि ।

मिनाक्षी झा दिपेन्द्र ठाकुरकेँ कौशल यादव नवीन मिश्रकेँ लेल जी जान लगौने छलथि । मिनाक्षी तऽ मनोनित सभासद छथि ओ अपने कोना संविधान सभा पहुँचली सेहो पत्ता नहि हेतन्हि मुदा चुनाव की होइत छैक से समर्थकक रुपमे ओ बुझि गेल हेतीह ।

कएटा उम्मेदवार कहलथि, 'सभासद झा के टेलिफोन सँ उठलहुँ अछि ।'

फेर जिनका मिनेटके फुर्सत नहि छन्हि सेहो व्यक्ति सभ मतदान करय पहुँचल रहथि । नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र झा मतदान करय लेल जनकपुर आयल रहथि । रामानन्द युवा क्लबक पूर्व अध्यक्ष अशोक दत्त जी सेहो ओतय देखल गेला । पूर्व अध्यक्ष दत्त एकटा दुर्घटनामे पडलाक बाद करिब अढाइ महिना सँ काठमाण्डू स्थित टिचिङ्ग अस्पतालमे उपचार करा रहल छलथि ।

एक समय छल रामानन्द युवा क्लबक चुनाव होइत छल तऽ लोकके पतो नहि चलैत छल । मुदा जिवनाथ चौधरीक नेतृत्वक कमाल छैक जे एतेक 'हाइट'क चुनाव बनि गेल अछि । किछु वर्षमे क्लब एतेक काज केलक जे सभक आकर्षण रामानन्द पर भऽ गेल अछि । ताहि हेतु सेहो लोक क्लबक महत्वपूर्ण पदमे जाय चाहैत अछि । ओना जे होइ एकटा चुनावक अलग आनन्द रामानन्द देलक ।

सड़क पर ऐश

१५/२० वर्ष पूर्व हिन्दी सिनेमामे देखने रही जे अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती दारु पिब कऽ बाजल रहथि, सड़क ककरो बापकें नहि छैक हमरा जे मोन लागत से सड़के पर करब। कोन सिनेमा छल ओ हमरा स्मरण तऽ नहि अबैत अछि हँ तखन सम्वाद अखनो ओहिना स्मरण अछि।

ओना जनकपुरमे किछु दिन सँ सड़क पर भऽ रहल घटना ओ सम्वाद ताजा कऽ देने अछि।

जनकपुरक बीच बजारमे जे घर बनि रहल अछि सम्भवत: मिथुन चक्रवर्ती जकाँ ओसभ एहने सम्वाद बजैत हेताह जेना लागि रहल अछि।

बीच सड़क पर गिट्टी, बालु आ ईंटा राखएबला काज मात्र नहि, आब ढलानो करए लागल अछि। ढलान रातिमे मात्र नहि दिनमे ओहुँमे भीड़ रहल समयमे सेहो।

हमरा एतेक भूमिका बान्हएकें पाछुक कारण जनकपुरक भानु चौक लग भेल जानकी भवन नामक एकटा घरक ढलानकें क्रममे देखल गेल दृश्यसभ सँ लागल। बितल रवि दिन एक गोटे व्यापारी भानु चौक सँ टेलिफोन कऽ कऽ जानकारी देलन्हि जे जितेन्द्र प्रसाद गुप्ता नामक व्यक्ति अपन छत ढलानक नाम पर बीच सड़क पर गिट्टी राखि देने छथि जाहि कारणेँ कएटा मोटरसाइकल ओतए उनैट गेल अछि।

हमर अफिस रेडियो मिथिला सँ २ सय गजमे ओ गिट्टी राखल छल तएँ सोचलहुँ जे देखियै भानु चौकक स्थिति की छैक ? ओतए पहुँचलहुँ तऽ देखलियैक एकटा रिक्सा उन्टए-उन्टए पर छल। हमरा मोन भेल जे गिट्टी राखएबला सँ बात कएल जाए फेर सोचलहुँ जे ओकरा समाचारे बना देल जाए। जाहि सँ नगरपालिका आ ट्राफिक एकर निराकरण करतै।

मुदा हमर सोचक विपरीत समाचार एलाक बादो नहि ओतए सँ गिट्टी हटल आ दुर्घटनाक क्रम जारिए देखलियै। फेर बेरिया मे अबैत छी तऽ ओतय तऽ ढलान भऽ रहल छल।

शनि दिन बाहेक सभ दिन रेल्वे स्टेशन सँ शिवचौक धरि लोककें अत्याधिक भीड़ रहैत अछि मुदा ओ घर मालिककें सम्भवत: बुझल छलैक जे सड़क ककरो बापकें नहि छैक , जे मोन लागत से कऽ सकैत छी। जेना मोन लगलै बीच सड़कमे ढलान मशिन राखि घर ढलाई कएलक।

फेर मंगल दिन सेहो इएह स्थिति रहल। हम मंगल दिन एकटा काज विशेष सँ भानु चौक आ शिव चौक सड़कमे ६/७ बेर गेल छलहुँ । देखलियैक ककरो प्रतिरोध नहि। दूटा छोटका व्यापारी अपनामे बाजि रहल छल रेडियोमे समाचार एलै, पत्रिकामे एलै तैयो बीच सड़क पर काज भेबे काएल।

नगरपालिकाक कर्मचारी आ ट्राफिक पुलिसकें नहि बुझल छै से थोरबे ! प्रजातन्त्र चलि एलै मुदा प्रवृत्ति ओहिना अछि भेड़िया धसान।

पैसाबलाकें जे मोन लगतै से करबे करत। ओ व्यापारी हमरा देख कऽ बाजल छलथि बा ओहिना से तऽ हम नहि बुझलहुँ मुदा ट्राफिक जाम होइक वा दुर्घटना होइक ताहि सँ कोनो मतलब नहि छैक। बस ! एक दू गोटेकें मिला लिअ सड़क पर ऐश करु।

हमरा ओहो दिन स्मरण अबैत अछि जे सड़क कातमे बढ़िया जँका साइकिल नहि राखल रहैत छल तऽ नगरपालिकाक कर्मचारी आ ट्राफिक साइकिल उठा कऽ लऽ जाइत छल। ३/४ वर्ष पूर्व तक शिव चौक सँ भानु चौकक सड़कमे पुरब दिस सँ किओ साइकिल, मोटरसाइकिल नहि रखैत छल। सड़क कातमे होर्डिङ बोर्ड वा दोकानक बोर्ड राखएबलाकें खैर नहि छलैक। आखिर ट्राफिक तऽ वएह अछि। नगरपालिकाक कर्मचारी तऽ सेहो वएह अछि। तखन एना परिवर्तन किए भऽ गेलैक ? ट्राफिक पुलिसक खाली मोटरसाइकिल आ जीपक लाइसेन्स आ ब्लूबुक जाँच करब मात्र दायित्व छैक ?

नगरपालिकाक पुलिसकें सड़क कातमे रहल ठेला दोकान, कटघारासभ सँ पैसा उठाएब मात्र काज छैक ? एहि प्रसंग विचार करब आवश्यके नहि पुणित कर्तव्य अछि। तखनहि जनकपुर, जनकपुरधाम रहि सकत।

जमीन कब्जाक नाटक

मातृका यादव नेतृत्वक नेकपा माओवादीक २०६६ असार ५ गते एकटा प्रेस विज्ञप्ति आएल छल । धनुषा सेक्रेटरी दिनेश यादवक हस्ताक्षर रहल ओ विज्ञप्तिमे धनुषामे ३५ बिघा जमीन कब्जा भेल जनाओल गेल छल ।

जमीन कब्जाक समाचार देल जाए की नहि बहुत काल धरि मिथिला डट कम क समाचार कक्षमे मन्थन केलहुँ । फेर राजनीतिक दल सभ जनताकेँ परेशान करएकेँ काज शुरु कएलक आम लोकमे सन्देश जाए से अभिप्राय सँ हमसभ पत्रिकामे समाचार राखि देलहुँ ।

प्रसंगवश सहकर्मी रोशन झा पुछलन्हि, भाइजी ! धनुषा, महोत्तरी, सिरहा, सप्तरीमे कोनो एहन जमीन नहि अछि जेकरा दू तीन बेर कब्जा नहि भेल होइक तखन...

हमरो हँसी लागल । माओवादीक अतिरिक्त मधेसमे आन्दोलनरत सशस्त्र समूहसभ किछु महिना पहिने एकर अभियान चलौने छल । प्रत्येक दिन ३/४ टा जमीनकेँ सशस्त्र समूहसभ कब्जा करैत छल ।

कब्जा करएकेँ शैली बड्ड विचित्र अछि । शुरुकेँ दिनमे माओवादी जमीनमे कतहुँ पार्टीक झण्डा गारि दैत छल । फेर विज्ञप्ति निकालि कऽ जमीन कब्जा शुरु भेलै । तकरबाद तऽ नहि पुछु ।

टेलिफोन सँ कहि दैक जे फलाँकेँ जमीन कब्जा कऽ देलियै ।

हमरा स्मरण अबैत अछि एक वर्ष पूर्वक एक घटना । एकटा एनजीओकेँ कार्यक्रममे धनुषाधाम गेल छलहुँ । एकटा सशस्त्र समूहक नेताक टेलिफोन आएल जे ओ धनुषाधाममे जमीन कब्जा कऽ रहल छैक । कोन खेतमे जिज्ञासा रखला पर फलनामाकेँ उचकाबला खेत कहलन्हि । स्थानीयबासी सभकेँ सम्बन्धित व्यक्तिकेँ एहन खेत छैक पुछला पर ओ सभ देखाइयो देलथि मुदा नजदिकेँ रहल खेतमे गेलहुँ तऽ कब्जा करएबलाकेँ कतहुँ अत्तापत्ता नहि । हम टेलिफोन कऽ ओ मित्रकेँ पुछलहुँ 'कब्जा भऽ गेलैक की !'

एहिपर ओ बजला, 'नहि भइए रहल छैक चारु कात झण्डा गारएकेँ काज भऽ रहल छैक ।' क्रिकेट कमेन्ट्री जँका कहए लगला । दू टा झण्डा गरा गेल छैक आ चारिटा बाँकी छैक । जमीन कब्जाक सूचना देनिहार मित्रकेँ हम एही खेतमे छी कहलाक बाद तऽ ओ लजा गेलाह आ नहि-नहि हमर आदमी सम्भवत: अहाँ सभकेँ देखि कऽ साइड लागि गेल अछि कहए लगलाह ।

फेर एकोटा झण्डा कतहुँ कहाँ गाडल छैक कहलाक बाद ओ मित्र दोसर मोबाइलमे टेलिफोन आएल कहि काटि देला । तकर बाद दस दिन धरि हुनक टेलिफोन नहि आएल ।

एना कएला सँ जमीन कब्जा करएबला पार्टीकेँ की होइत छैक । व्यक्तिगत रुपमे हमरा एखनो नहि बुझयमे अबैत अछि । किओ डर सँ चन्दा दऽ दैतैक सेहो अवस्था नहि छैक । पार्टीसभ बहुत आगा पहुँच गेल छैक । अपहरण, बम विस्फोटक बाद जे फिरौती देल जाइत छैक तकर भाउ सेहो घटि गेल अछि ।

एक गोटेकेँ डेढ साल पूर्व महोत्तरीमे जमीन कब्जा भेल छलैक । महोत्तरीक गौशाला होइत हम जनकपुर अबैत छलहुँ ओ खेत पर भेट गेलाह आ कहए लगलथि, 'ई खेत हमरो छैक !'

हमरा अर्थ नहि लागल । हम कहलियन्हि, 'हम अपनेकेँ अभिप्राय नहि बुझलहुँ !'

ताहि पर ओ बजलाह, 'ई खेत हमर बाबु नामसारी कऽ कऽ हमरा देने छथि, फेर माओवादी जनयुद्ध कालमे कब्जा भेल छल । फेर ज्वाला सिंह समूह, गोइत समूह आ राजन मुक्ति समूह तीनू कब्जा कएलक । आब कहुँ खेत ककर ककर भेल !'

भूमिगत संगठन करैत अछि तऽ एकटा बात मुदा खुला राजनीतिमे आबए बला करैत अछि तऽ बहुतो चिन्ताक विषय अछि । एहि सँ जनमत बढत से नहि कहल जा सकैत अछि । हँ तखन नेपालमे लाँ एण्ड आँडर नामक चीजक की स्थिति अछि सहजे बुझल जा सकैत अछि ।

ई घटनासभ सुनिते जेना लगैत अछि कतहुँ नाटक देखि रहल छी। ई नाटककेँ पटापेक्ष कहिया हैत कहल नहि जा सकैत अछि।

विवाह कार्डमे मैथिली भाषा

२०६६ साल अखार महिनामे विवाहक भारी लगन अछि। ६/७ दिन भितर १५ टा विवाह भोजक निमन्त्रण कार्ड हमरा नाम सँ आएल छल। कार्डक भाषा मैथिली छल। कोनो लगनमे मैथिली भाषामे मात्र निमन्त्रण कार्ड आएल हमरा लेल प्रसन्नताक विषय छल।

हमरा स्मरण अबैत अछि १०/११ वर्ष पूर्वक एकटा घटना। हम जनकपुरक राम चौकमे रहल युनियन प्रेसमे बैसल छलहुँ। एक गोटे इन्जिनियर साहेब अपन पुत्रीक विवाह कार्ड छपाबए प्रेसमे पुहँचल रहथि। प्रेसक संचालक प्रमोद चौधरी कार्डकेँ डिजाइन देखौलाक बाद मैथिली भाषामे विवाह कार्ड छपाबएकेँ लेल आग्रह कएलन्हि।

एहि पर ओ महानुभावक जे प्रतिक्रिया आएल छल ओ दृश्य हमरा अखनो स्मरण अबैत अछि। भ्ना थरक ओ इन्जिनियर साहेब व्यंग्य शैलीमे बाजल रहथि, ‘मैथिलीयोमे कार्ड होइत छैक !.. कें पढतैक !’ अपना सँ जेठकेँ सम्मान करबाक संस्कार नहि रहैत तऽ मैथिलीकेँ विषयमे एहन बाजएबलाकेँ हम दू थापर देने रहितियैक। ओ इहो कहि सकैत छलाह जे हम हिन्दी, नेपाली वा अंग्रेजीमे मात्र छपाएब। ओना ओ हिन्दीमे कार्ड छपाबएकेँ आँडर दऽ चलि गेलाह।

हम काठमाण्डूक मिडिया सभमे काज करैत छलहुँ। तएँ जनकपुरमे अफिस नहि छल। हमर सभक सेन्टर होटल वेलकम छल। युनियन प्रेसमे हम प्राय: किछु देर बैसैत छलहुँ। विवाह, उपनायनकेँ कार्ड छपाबए जे किओ अबैत छलाह देखैत छलहुँ। मैथिली भाषामे कार्ड छपाबएकेँ लेल प्रमोदजी एक बेर आग्रह अवश्य करैत छलाह।

ओना हमरो परिचित कियो अबथि तऽ हम सेहो मैथिलीमे कार्ड छपाबएकेँ लेल आग्रह करैत छलहुँ। मिथिला नाटयकला परिषद आ आकृति सेहो एकर अभियान चलौने छल।

नित्यानन्द मण्डल, उपेन्द्रभगत नागवंशी, रामविनय मण्डल, अनिल कर्ण आदिक अपन-अपन करकुटुम्बकेँ घरमे विवाह होइक तऽ केना ओसभ मैथिलीमे कार्ड छापथि ताकरा लेल काज करथि। युवा साहित्यकार श्यामसुन्दर शशी, प्रमोद चौधरी आ हम मैथिली लेखक रही।

ई अभियानमे एकटा बडका बल धीरेन्द्र प्रेमर्षि आ रुपा भ्ना सेहो देलन्हि। ओसभ कान्तिपुर एफएमक चर्चित कार्यक्रम हेल्लो मिथिला मे जे किओ मैथिलीमे कार्ड छपथि तिनकर नाम प्रसारण करथि। हेल्लो मिथिला मे एक समय एहन रहैक जे लोक नाम प्रसारण करबाक लेल ललायित रहैत छल। तएँ बहुत गोटे मैथिलीमे कार्ड छपाबथि। एकबेर धीरेन्द्र प्रेमर्षिक काठमाण्डू स्थित डेरा पर गेल छलहुँ। तऽ देखने रहियैक ५०/६० टा सँ बेसी कार्ड मैथिलीमे आएल रहैक। ओ दृश्य देखलाक बाद हमरा लागल छल ई अभियान सफलता दिस जा रहल अछि। एहि अभियानक शुरुवाती समयमे कहल जाइत छैक डा. धीरेन्द्र, योगेन्द्र साह नेपाली आ महेन्द्र मलंगिया सेहो महत्वपूर्ण काज कएने रहथि।

एक बेर आकृतिक तात्कालीन महासचिव उपेन्द्रभगत नागवंशी अपन भायकेँ विवाहमे कार्ड छपौने रहथि। हुनक कार्ड एतेक बेजोड रहैक जे भारतक एकटा म्यागजिन सेहो छपलक। मैथिली भाषामे बढिया ढङ्ग सँ लिखल कार्डकेँ की महत्व होइत छैक से म्यागजिन अपन स्थान दऽ कऽ देखौने छल। ओहि समयमे हमरा बेर-बेर इच्छा हुए, ओ इन्जिनियर साहेब सँ भेट कऽ हुनका देखबितियै, मैथिली भाषाक की महत्व होइत छैक। लोक मैथिलीयो भाषाकेँ महत्व दैत छैक।

खैर जाहि रुप सँ मैथिली भाषामे आब कार्ड छपाए लागल अछि अहि सँ ककरो उत्तर देबाक आवश्यक्ता नहि रहि गेल अछि। घर आंगनमे विवाहदान, उपनयन, मुडन आ भगवानक पूजामे लोक मैथिली गीत बजबैत अछि। कार्ड तऽ ९० प्रतिशत सँ बेसी मैथिली भाषामे आबए लागल अछि।

मैथिली भाषामे जाहि रुप सँ कार्ड छपाबएकेँ लोकमे चेतना जागृत भऽ गेल अछि ओहि सँ वएह बुभ्नाइत छै जे सभकेँ अपन भाषा प्रति प्रेम आ निजत्वक बोध भऽ रहल अछि। मैथिलीक ई एकटा अभियान छल मुदा ई अभियानकेँ निरन्तर लऽ चलयकेँ आवश्यकता अछि।

प्रवचन हलमे सकारात्मक खोजल जाए

हम घरसँ भोरमे प्रत्येक दिन अफिस पैदले अवैत छी । पैदल अयवाक उदेश्य रहैत अछि जे लोक सभ सँ भेटघाट भऽ जाए । पत्रकारितामे सम्पर्के एकटा माध्यम अछि, जे लम्बा समय धरि एहिमे राखि सकैया । एकगोटे व्यापारी मित्र छथि, जे प्रत्येक दिन हमरा किछु-किछु पुछिते रहैत छथि ।

हुनकर पुछव प्राय: उटपटाङ्ग रहैत छन्हि । सम्बन्धित विषयमे जानकारी भेलाक वादो ओ पुछैत रहैत छथि । तएँ हम चाहैत रहैत छी जे ओ नहि भेटौथ मुदा प्राय भेटिए जाइत छथि ।

ओहे मित्र २०६६ जेठ ३० गते भोरमे पुछने रहथि, गैर अवासिय नेपाली रामनारायण साहद्वारा जानकी मन्दिरकेँ पाछु बनयवला प्रवचन हल बनतैक की नहि ? हम कहलियन्हि, 'रामनारायण जी तऽ अमेरिका चलि गेला तखन इन्जिनियर गंगा प्रसाद साह आ जानकी मन्दिरक महन्थ राम तपेवश्वर दास वैष्णव सँ पुछियौक वएह दुनु गोटे जवाव दऽ सकता ।'

'हम अहाँ तऽ बनव शुरु भऽ जाइ तेकर अपेक्षा मात्र कऽ सकैत छी ।'

बात टारि हम आगा बढ्बाक प्रयास केनहि छलहुँ की ओ बौन्सर छोडैत कहलन्हि, 'की अपेक्षा, जोड लगबियौ !'

हेतैक-हेतैक कहि हम बात समाप्ते करय चाहैत छलहुँ की ओ कहला, 'प्रवचन हलक अवरोधक रामनारायणजी छथि कि जानकी मन्दिर महन्थ वा छोटभैया नेता !'

'जनकपुरक हित, हल बनौ ताहिमे छैक, जैन धर्मशाला एहिना नहि बनलै फेर अहि सँ गलत सन्देश जाइत छैक ।' एतेक कहि देलाक बाद आइ भरिके लेल ओ हमरा बकसि देने छलाह । मुदा हुनक मुद्दा दिन भरि नहि बकसलक । प्रवचन हॉलमे अवरोध आवि गेलैक एकर दुख प्राय: अधिकांश व्यक्तिके हेतैक , मुदा हमरा सभसँ बेसी अछि । गैर अवासिय नेपाली सभक सम्मेलनमे आयोजकके बदमासीक कारण हम सभ ओकर विरोधमे छलहुँ । मुदा ओतहि रामनारायण जी जनकपुरमे प्रवचन हल बना रहल छथि तएँ हुनका हम सभ बहुत बेसी समाचारक माध्यमसँ फोकस कएने छलहुँ । 'रेडियो मिथिला', 'मिथिला डटकम'मे विशेष समाचार प्रसारण आ प्रकाशित कएलहुँ फेर एभि न्यूज टिभिमे सेहो अर्न्तवार्ता लेलहुँ । आ जतेक बेर भेटल रही सभ बेर शीघ्र हलक निर्माण काज शुरु करु आग्रह कएने छलहुँ । हुनका बेर-बेर जानकारी करौने छलियैक जे जनकपुरमे राजनीति घुसि जाइत छैक । अपने किएक नहि पुनित काजकलेल लगानी कऽ रहल छियैक कहुना बाधा अएबे करत । १२ दिन पूर्व बुध दिन मिथिला डट कमक लेल हम रामनारायण जी सँ अन्तवार्ता लेने छलहुँ हलक लेल ओ बहुत उत्साहित रहथि ।

मुदा जाहि दिन पत्रिकामे छपलै तकर एक दु दिनमे रामनारायण जी आ जानकी मन्दिरक महन्थ राम तपेश्वर दास वैष्णव बीच खटपट भऽ गेल । रामनारायण जी आ जनकपुरक हुनक किछु सहयोगी मित्र महन्थजी लग प्रवचन हल संचालनक लेल कमिटी बनाबयके प्रस्ताव रखलन्हि, जे महन्थ जीके अमान्य भऽ गेल । महन्थजीकेँ कहब छन्हि जे जखन हलक लेल मन्दिर १० करोड सँ बेसीक जमिन उपलब्ध करवैत अछि तऽ डेढ करोड रुपैयाबलाके हरेक बात किएक मानत । रामनारायण जी के पिता आ ससुरक नाम प्रवचन हलकद्वार पर लिखा रहल अछि, तखन फेर कमिटीयो चाही फेर जानकी मन्दिरके की भेटत ओ प्रश्न करैत छथि ।

हमरा लगैया जे यदि हलक निर्माण भऽ जेतैक आ तकरबाद छोट-मोट समस्या अवितैक तऽ समाधान कायल जा सकैत छलैक, मुदा निर्माण सँ पहिने विवाद आयब कोनो दृष्टिसँ निक नहि ।

प्रवचन हल निर्माताके इहो बुझबाक चाही जे अन्तराष्ट्रिय मान्यता छैक, जखन अपने किछु देबय चाहैत छियैक तऽ नि:स्वार्थ भाव सँ दियौ । पगलाबाबा धर्मशालाके उदाहरणक रुपमे लेल जा सकैत अछि, जे कतेको दाता घर बना देलखिन्ह मुदा हुनकर भूमिका दाता बाहेक किछु नहि छन्हि । फेर महन्थजी सेहो हल बनौ तेकर पक्षमे रहितथि तऽ बढ़िया रहितैक ।

हमरा स्मरण अवैत अछि पन्द्रह सोलह दिन पुर्व रेडियो मिथिलामे रामनारायण जी के बजौने रही। रेडियो मिथिलाक कार्यक्रम समय सन्दर्भमे एक प्रश्नक जवाव दैत वाजल रहथि, 'अमेरिका आइ प्रगति कएने अछि, तेकर पाछु ओतुका जनताके सकारात्मक दृष्टिकोण रहल अछि। ओ सभ हरेक चीजकेँ सकारात्मक देखैत छथि।'

किएक नहि ई सूत्र जनकपुरमे लागु कएल जाए, प्रवचन हलमे सकारात्मक भावना खोजल जाए।

शायद ओ बात झुठ होइत

२०६६ फागुन १७ गते साँझ रेडियो मिथिलामे होरी पर विशेष कार्यक्रम चला न्यूज रुममे आएल छलहुँ की खबर आएल जनकपुरमे गोली चलल अछि । घाइलकें जनकपुरक केयर नरसिंह होममे उपचार भऽ रहल छैक । घटनाकें पुष्टी करबाक लेल हम, सहकर्मी रोशन झा आ विनोद महतो जिल्ला प्रहरी कार्यालयक विभिन्न अधिकारी लग टेलिफोन लगा रहल छलहुँ मुदा ओ सभ अनभिज्ञता प्रकट कऽ रहल रहथि । एकमोन भेल अरुण सर(अरुण सिघानिया) वा अन्नु दाइ (अनुराग गिरी) के टेलिफोन कऽ पुछैत छी । अहींके नरसिंह होममे कोनो घाइलकें उपचार भऽ रहल छैक कनी बुझि दिय ।

ताबितेमे सशस्त्रक एस पी शान्ति थापाकें टेलिफोन आएल आ ओ कहलन्हि, 'अरुण सरकें गोली लागि गेल ।'

एस पी साहेब जहिना कहलन्हि की लागल कानमे गरम सिसा किओ ठुसि देलक अछि । किछु देर तऽ आगा अन्हार जकाँ लागय लागल छल ।

अरुण सर सँगे भलेही हम सभ संगे काज नहि कएने छलहुँ मुदा तीन/ चारि गोटे पत्रकारसभ अरुण सरकें आ अन्नुदाईकें अभिभावक जकाँ मानैत छलहुँ । कहियो ओ बुझेबे नहि करैत छलथि जे हमसभ आन छी । कहियो काल कऽ हुनका सँ हम आ श्याम भाइजी (श्याम सुन्दर शशि) बलजोरी भोज खाइत छलहुँ । कहियो काल कऽ ओ अपने टेलिफोन कऽ कऽ भोज खुआबय लेल बजबैत छलथि । हमरा सभक मित्र मण्डलीमे कोनो प्रकारक मतान्तर होइत छल तऽ अरुण सर सहजकर्ताकें काज करैत छलथि । कए दिन बृजकुमार दाजु (बृजकुमार यादव)कें बात नहि नीक लागल तऽ हम सभ हुनकें लग सिकाइत करैत छलहुँ । नरसिंह होममे कहियो गेलहुँ कोनो चिन्हा परिचयकें लोक उपचार करबैत भेट गेल तऽ बलजोरी पैसा छोड़ा दैत छलहुँ । मजाक बस ओ कहैत छला, 'अहाँ सभ बाटी लऽ कऽ सडक पर बैसाएब ।'

फेर हमसभ एतेक पैसा लऽ कऽ की करब कहय लगैत छलहुँ । एतबे नहि हमर सभक समाचारपर सेहो ओ टिप्पणी करैत रहैत छलथि । एक दिन भोरमे एभि न्यूज टिभीमे झकुयाले मुँहे लाइभ कएने रही । लाइभ समाप्त होइते अरुण सरके टेलिफोन आएल आ ओ हमरापर बहुत बिगरल

रहथि । हुनकर कहब छलन्हि जे टिभीमे हजारो व्यक्ति देखैत अछि, प्रस्तुति खराब भेल की अहाँकें कैरियर पर परत ।

तकर बाद विना फ्रेस भेने हम लाइभ कहियो नहि कएलहुँ । जहिया हम सभ मिथिला डटकम निकालने छलहुँ कोन भाषामे निकालल जाय ताहि पर हुनका सँ सेहो सल्लाह लेने छलहुँ । हुनक कहब रहन्हि, 'नेपाली भाषामे पत्रिका निकालु ।' मुदा जखन मैथिली भाषामे निकललै की ओ पत्रिकाकें आलोचना कएने रहथि । हम हुनका कहलियन्हि, 'सर हम अपनेकें सिद्ध कऽ देखाएब जे मैथिलीमे सेहो लोक पत्रिका किन कऽ पढैत छैक ।'

समय बितैत गेलैक मिथिला डटकमक वार्षिकोत्सव सँ दू महिना पूर्व रातिमे हुनक टेलिफोन आएल छल आ ओ कहलन्हि, 'अहाँक निर्णय ठिक छल, मैथिली भाषामे मिडियाकें स्कोप छैक ।' ओहि दिन हमरो बहुत प्रसन्नता भेल छल । कतेको दिन जनकपुर टुडेके ब्रोडसिड अखबार बनाबयकें हमर सपना अछि कहने रहथि । टुडेके पेज बढाबयकें एकटा कारण ओहो भऽ सकैत अछि । जखने ओ ब्रोडसिड अखबारकें बात करैत छलथि की हम मैथिली भाषामे निकालय कहैत छलियन्हि । शुरुमे तऽ ओ मैथिली भाषाकें नामे पर मुँह विचकाबय लगैत छलथि मुदा किछु महिना सँ 'देखबै' पर आबि गेल छलाह । जनकपुरमे मिडियाकें कोना विकास होइक एहि पर ओ बहुत चिन्तित रहैत छलथि । हमरा ओ बात एखनो स्मरण अबैत अछि जखन श्रवण गोयन्का आ कैलाश जैन सञ्चालक रहल टुडे पत्रिका बन्द भऽ गेलैक तखन ओ इएह कहि कऽ लगानी कएने छलथि जे एहन पत्रिकाकें अस्तित्व नहि समाप्त भऽ जाए आ फेर सँ नयाँ रुपमे जनकपुर टुडे निकाललथि जनकपुरमे एफएम रेडियो स्थापना होउ ताहिमे हुनक बडका योगदान रहल अछि ।

जनकपुरमे पैसावलाक कमी नहि छैक। एहनो पैसावला सभ छथि जिनकर पैसा बैंक राखय नहि मानैत अछि मुदा ओ सभ मिडियामे लगानी नहि कएलथि । ओतहि सीमित पैसाक वादो जे हिम्मत अरुण सर देखौलन्हि हुनक साहस मानयवला अछि।

फेर दोसर सँ ओ फरक रहथि एहि सभ सँ प्रष्ट होइत अछि। हुनकर कार्यदक्षताकेँ जवाव नहि अछि। म्यानेज कोना कएल जा सकैत अछि लोक अरुण सर सँ सिख सकैत अछि। दू टा मिडिया , नरसिंह होम, हेल्थ असिस्टेन्ट ट्रेनिङ सेन्टरकेँ संचालक भेलाक वादो ओ समाजिक क्षेत्रमे सक्रिय छलथि ।

मारवाडी सेवा समितिक अध्यक्षक रुपमे समितिकेँ जाहि ढङ्गसँ व्यवस्थापन कएने छलथि मारवाडी समाज मात्र नहि वाहरोकेँ लोक सभ लोहा मानने अछि।

पहिल वेर हम टेलिभिजनमे काज शुरु कएने छलहुँ तऽ अरुणे सर एकदम सस्ता मोलमे क्यामरा किनवा देने रहथि। ई वात हमरा एखनो याद अछि।

ओ एतेक तक कहने रहथि च्यानल नेपाल सँ कमा अहाँ दऽ देव मुदा हमरा लग पैसा छल तएँ दऽ देलियन्हि। एहन वात दोसर कइए नहि सकैत अछि। अरुण सरक हत्याकेँ खवर सुनलाक वाद कोनो चीजमे मोने नहि लगैत अछि। कखनो कालकऽ होइत अछि किओ कहय अहाँक अरुण सर जिवित छथि ।

' ...हाथी चलय बजार '

महोत्तरीक बर्दिबासमे प्रशासनिक सेवा केन्द्र स्थापना करयकें सरकार निर्णय लेलाक बाद जलेश्वरक जनता आक्रोशित भेल अछि। ओ सभ एक हप्तासँ बेसी दिनसँ जलेश्वर बजार बन्द करौने अछि। आन्दोलनक कारण जलेश्वर अस्तव्यस्त भऽ गेल अछि। सरकार प्रति, दिन प्रतिदिन आक्रोश बढ़ैत गेल अछि। एक दिस एहन अवस्था अछि तऽ दोसर दिस बर्दिबासमे केहन प्रतिकृया हएत बहुतो गोटेकें उत्सुक्ता भऽ सकैत अछि। स्वयं हमरो उत्सुक्ता छल।

ओतय जा कऽ स्थलगत रिर्पोटिङ्ग करी कए दिन सँ कार्यक्रम बनबैत छलहुँ। मुदा संयोग कही जे कृषि विकास बैंकक बैंकिङ्ग कारोबार शुरु होएबाक छल। एक पन्त दु काज सोचि बृहस्पतिदिन ओतय पहुँचलहुँ।

पहुँचलाक किछुए देरमे स्थानीय व्यक्ति सभ सँ भेट भेल आ स्वास्थ्य मन्त्री गिरीराज मणि पोखरेलक गुनगाण शुरु भऽ गेल। किछु गोटे कहला, 'मधेशमे सेहो पहाडी सभक आवाज सुनय बला कोनो छैक से गिरी बाबु प्रस्तुत कऽ देलन्हि।' गिरी बाबुक प्रशंसक सभमे काँग्रेस आ एमालेक कार्यकर्ता सेहो देखल गेल।

छोटछिन कार्यालयक लेल एक स्थान पर प्रत्येक दिन टायर बरि रहल अछि, मसाल जुलुस भऽ रहल अछि दोसर दिस गर्वता प्रस्तुत भऽ रहल अछि। अपन घर लग किछु नयाँ चिज भेलापर प्रशन्नता होएब स्वभाविक बात छैक मुदा जे बात बर्दिबासमे देखलहुँ। कतहुँ नहि कतहुँ महोत्तरी जिल्ला विभाजनके संकेत देखा रहल छल। जलेश्वरो आन्दोलनमे एहने स्थिति छल। बर्दिबासमे प्रशासनिक सेवा केन्द्र रखला सँ प्रलय आबि गेल हुनकासभकें लगैत छल। जलेश्वरक विकास कोनो मुद्दा नहि खाली विरोधे-विरोध।

कृषि विकास बैंकक बैंकिङ्ग कारोबार शुरु होबए अवसरमे जतय बैंकक विषयमे बजबाक छल, ओतहि बर्दिबासक पूर्व गाविस अध्यक्ष चिरंजिवी हमाल जाहि रुपसँ प्रस्तुत भऽ रहल छलथि, लागि रहल छल जे कहियो हिटलरकें कोनो देश जितलाक बाद मुँहमे एहने मुस्कान आएल हेतैक।

ओ बजिते-बजिते कहय लगला बर्दिबाससँ प्रशासनिक सेवा केन्द्र किओ नहि हटा सकैत अछि। जलेश्वरमे आन्दोलन कऽ रहल प्रति व्यंग्य करैत हमाल कहलन्हि, 'कुकुर भुकय हजार हाथी चलय बजार... ।'

हाथी गिरिराज मणिके कहलथि आ की अपनाकें स्वयं, हमरा अर्थ नहि लागि रहल अछि। तखन पहिलका बात तऽ सहजे बुझि गेलहुँ।

गिरिराजजी कें हम पत्रकारिता शुरु कएने दिनसँ चिन्हैत छी। कारण ओ पत्रकारिता करैत छलाह। हमरा सभकें बीचमे बढ़िया सम्बन्ध सेहो छल। जहिया जनकपुर अबैत छलाह तऽ हुनकासँ अवश्य भेट होइत छल। मुदा संघीयता सम्बन्धमे हुनकर किछु आएल अभिव्यक्ति हमरा तऽ आहत कऽ देने अछि। सरकार आ संयुक्त मधेसी मोर्चा बीच काठमाण्डूमे सहमति भेल तऽ सभसँ बडका विरोध गिरिराज जी कयने टिभी पर सेहो देखने रही।

किछु दिन पूर्व ओ जनकपुर आएल रहथि, हम हुनकासँ अर्न्तवार्ता लएने छलहुँ। ओ बेर-बेर कहैथि एखन किछु नहि, नयाँ संविधानके बात मात्र करु। नयाँ संविधान बनाबयबला गिरी जीकें प्रशासनिक सेवा केन्द्र खोलयकें निर्णय कराबयके सौंच कतयसँ आएल। आखिर नेपालमे कोनो परिवर्तन नहि भेलैक की ? एखनो नेतासभ खसवादी मानसिकतासँ उपर नहि उठि सकल अछि !

ठीक छैक भौगोलिक आधारमे प्रशासनिक केन्द्रकें आवश्यकता भेनाइ कोनो अस्वभाविक बात नहि छैक तखन बर्दिबासे किए ? एकर उत्तर सरकारकें देबय पड़तैक। बर्दिबासमे प्रशासनिक केन्द्र रखलासँ ३/४ गामक जनताके लाभ पहुँच सकैत अछि। मुदा रामगोपालपुरमे रखलासँ एक दर्जन गाविससँ बेसी जनताकें लाभ पहुँच सकैत छैक मुदा एतय किए नहि ? ।

सरकारकें अखन पहिल प्राथमिकता शान्ति सुरक्षा रहबाक चाही नहि की सम्प्रदायिक सदभाव बिगारय बला। ई विवाद कही फेर मधेश आन्दोलन वा कोनो दोसर रुप नहि लऽ लिए ताहि लेल समयमे ध्यान देब आवश्यक अछि।

चोरा कऽ वेलेन्टाइन

तीन चारि बजेक आसपास एकटा मित्रक टेलिफोन आयल छल। जे ओ हमरा घर सँ नजदिक एकटा भारतीय मोबाइल सँ टेलिफोन करय आयल छथि। जँ अफिस जाए चाही तऽ ओ मोटरसाइकिलमे लिफ्ट दऽ सकैत छथि।

हमरो आइ मोटरसाइकिल नहि छल तएँ हमहुँ धरफरायले चलि अयलहुँ। देखलियै जे ओ मित्र बेसी काल धरि हँसि-हँसि कऽ बतिया रहल छलाह।

पुछलियन्हि, 'की ककरा सँ बतिया रहल छी?' तऽ ओ भारतीय क्लाइन्ट छल कहलन्हि। ओ मित्र विज्ञापनमे काज करैत छलथि तएँ शायद हुनका झुठ बाजयमे सहज भेल 'भारतीय क्लाइन्ट की नैहर गेल कनियाँ सँ?'

जेना चोर पकरा गेल होइ। तहिना ओ लाजे मुह नुँकबैत चल-चल अबेर होइत छैक कहैत मोटरसाइकिल स्टार्ट कऽ लेलन्हि।

अफिस अबिते वेलेन्टाइन डे कें चर्चा चलैत छल। एहि क्रममे समाचार कक्षमे उमेरक हिसाब सँ बेशी उमेरक रहल वरिष्ठ सहकर्मी डेजी श्रेष्ठ सँ हम पुछलियन्हि, 'भऽ गेलै वेलेन्टाइन डे?'

'भऽ गेलै...' कहि कऽ ओ रुम सँ बहरा गेली।

हमहुँ ककरो पुछयमे जिबटे छी। फेर पुछलियै, 'की उपहार अहाँकें भेटल, ओहीमे सँ सहकर्मी सभकें सेहो दिऔ।'

'उपहार तऽ भेटल मुदा बाँटि नहि सकैत छी ...' कहैत फेर ओ दोसर रुममे चलि गेली।

अफिसेकें काज सँ साँझेमे एकटा व्यापारी लग गेल छलहुँ। प्रसंगवश पुछि बैसलहुँ ' की आइ वेलेन्टाइन डे कसि कऽ मनलै?'

ओ की कहय चाहैत छलाह स्पष्ट रुप सँ नहि बुझलहुँ मुदा बड़ी जोड सँ हँसि देलाह जेना चोर पकरा गेल होइ।

आखिर जनकपुरमे वेलेन्टाइन डे नहि होइत छैक से नहि। किछु वर्ष इम्हर बड़ लोक खुलल अछि। हमसभ एहि वर्ष अर्थात २०६५ सालमे मिथिला डटकम पत्रिकामे वेलेन्टाइन विशेषांक निकालने छलहुँ। ७ गोटें मिथिला डट कमक मार्फत सन्देश पठौने छल। ओहिमे किछु महिला सेहो छल। पुरा पता एक गोटेक मात्र छपल छल।

साँझ मे जानकी चोक पर गेल रही। देखलियै जे किछु युवा सभ हिन्दी गीत पर नृत्य करैत वेलेन्टाइन डे मना रहल छल।

टिभीमे देखने छलहुँ जे युवायुवती एक दोसरकें हात पकरिकऽ नृत्य कऽ रहल मुदा जनकपुरमे एकर विपरीत युवा सभक पार्टनर युवे छल।

मिथिलामे प्रेम तऽ लोक करैत अछि मुदा प्रदर्शन अखनो नहि कऽ रहल अछि। तकर उदाहरण वेलेन्टाइन डे मे सेहो देखल गेल। रामायणक अनुसार माता जानकीकें भगवान राम सँ पहिल भेटमे प्रेम भऽ गेल रहन्हि आ एहिकें लेल जानकी गिरिजा माताक पुजा कयलीह। मुदा ओ जल्दीबाजी करबाक हिम्मत नहि देखा सकल छली, जेना भारतीय सिनेमा सभमे देखल जाइत अछि।

हमर वेलेन्टाइन सेहो एहिना ओझरा गेल। सम्भवत: नयाँ कपड़ामे तऽ लोककें देखने रही मुदा...।

आखिर महिनो सँ लोककें किए एकर प्रतीक्षा छलैक? आखिर लोक एतेक बात तऽ सभ दिन करैत अछि। हम एकर उत्तर आइ घण्टो खोजलहुँ मुदा असफलता भेटल। तखन किछु दिन पूर्व एफएम रेडियोमे गीत गबैत सुनने रहियै जे प्रेम करब जँ पाप थिक तऽ एकटा प्रेम करय दिअ..... । ओहि पर हमर माँ कें प्रतिक्रिया सुनने रहियै से एहिठाम उल्लेख करब आवश्यक अछि 'मार सरधुवाकें मैथिलीमे आब गीत नहि भेटैत छैक तऽ किछु गाबि दैत अछि।'

आखिर मिथिला मिथिले छैक । किएक नहि सारा संसार वेलेन्टाइन डे मनौलक। हम सभ जाहि माटिकें बनल छी अहि सँ २० होबयमे बड़ समय लागत। खैर मिथिलाक संस्कार सभ सँ उत्तम अछि कनखीमे जतेक रस छैक ओ सीधा आँखिमे कतय सँ भऽ सकैत अछि।

की इम्हर भविष्य अजमाओल जा सकैया ?

सहकर्मी अवधेश कामत संग भिडियो फिल्म बनावएकें विषयमे हम बेर-बेर छलफल करैत छी । कलाकार भेलाक कारण अपन अनुभवक आधारपर ओ फिल्म चलतैक से कहैत छथि मुदा हिम्मत नहि देखा रहल छथि । हमरा लगैया जनकपुर क्षेत्रमे एकटा कम्पनी खोलि भिडियो फिल्म बनाओल जाए आ फेर ओकरा गाम-गाममे देखाओल जाए । बढ़िया व्यवसाय भऽ सकैत अछि ।

भिडियो सिनेमामे बड़का क्यामराकें सेहो आवश्यक्ता नहि पड़तैक । ३/४ हजारक रोजपर बजारमे क्यामरा भाड़ापर भेट जएतैक । स्क्रीप्ट राइटर, कलकार सेहो एतय सस्तामे भेटैत अछि । एकटा प्रोजेक्टर किन गाम-गाममे टिकट सिस्टमपर भिडियो फिल्म देखाओल जाए । लोककें बुझयमे मैथिली भाषा सहज हेतैक आ ओ भिडियो फिल्म लोकप्रिय सेहो । ३ सँ ४ लाख रुपैया लगा ई काज शुरु कएल जा सकैया ।

रेडियो मिथिलाक सहकर्मी सुनिल यादव सड़क नाटकमे भविष्य खोजलन्हि अछि । एखन बढ़िया अवस्थामे छथि । काज खुब भेट रहल छन्हि । एकटा संस्था खोललथि अछि आ किछु कलाकारकें लऽकऽ गाम-गाममे सड़क नाटक करैत छथि । एनजिओ-आइएनजिओसभ सँ हुनका खुब काज भेट रहल अछि । पैसा आ प्रतिष्ठा दुनु भेटब कम भाड़ी बात थोड़बे होइत अछि ?

किछु वर्ष पूर्व जनकपुरक गायकसभ स्टेज शो मात्र करैत छल । थोर बहुत एलबम नहि निकलल छलैक से नहि । निकललो छलैक मुदा अशोक दत्त, सुनिल मल्लिक, आभाष लाभ, रश्मी रानी, प्रवेश मल्लिक 'छौड़ तोरा बज्जर खसतौ' गीती एलबम निकालि कऽ हिम्मत देखौलन्हि आ एकरबाद दर्जन सँ बेसी एलबम निकलल ।

आब तऽ सुनिल मल्लिक जनकपुरमे रेकर्डिङ्ग स्टूडियो निर्माणक काज शुरु कऽ देने छथि । आब गायकसभकें दिल्ली आ पटना रेकिर्डिङ्ग करय लेल जाए नहि पड़त । ओहि टीमक रश्मी रानी सेहो एलबम निकालयकें दिल्लीमे कम्पनी खोललन्हि अछि । रश्मी बातचितक क्रममे कहलन्हि, 'जल्दीए चारि पाँच टा मैथिली भाषामे एलबम आबि रहल अछि ।' गायक नविन कुमार मिश्र स्टेज शोमे अपन भविष्य देखि रहल छथि । हेल्लो मिथिला नामक कम्पनी खोलि गाम-गाममे स्टेज शो करैत छथि । सिजनमे तऽ नविन लग एतेक काज भेट रहल अछि की ओ, काज लऽ नहि सकि रहल छथि । एक दर्जन सँ बेसी कलाकार एहि सँ लाभान्वित भऽ रहल अछि ।

सिरहाक धर्मेन्द्र मोरबैता एश मूभिज नामक कम्पनी खोलि टेलिसिरियल एवम सिनेमा निर्माण दिस सक्रिय छथि । साहित्यकार अशोक दत्तद्वारा लिखित टेलिसिरियल निर्माणो भऽ रहल अछि । तऽ किए नहि भिडियो फिल्म बनावयकें व्यवसायिक प्रयोग कएल जाए । मैथिलीमे भिडियो फिल्म नहि बनल अछि से थोरबे छैक । जनकपुरोमे बनल अछि । मुदा एहिठाम एहन कम्पनीकें आवश्यकता अछि, निर्माण सँ लऽ कऽ बजार खोजी करैक । एहिमे युवासभकें विशेष फाइदा भऽसकैत अछि । छोट पूँजीमे व्यापार भऽ सकैत अछि । नेपालमे धनुषा, महोत्तरी, सिरहा, सर्लाही, सप्तरी, सुनसरी, मोरङ्ग, रौतहट जिल्लामे बढ़िया जकाँ भिडियो फिल्म चलि सकैत अछि । भारत दिस सेहो एकर बढ़िया मांग भऽ सकैत अछि । किए नहि इम्हर ध्यान देल जाए । इम्हर भविष्य अजमाओल जाए, सफलताद्वारेपर प्रतिक्षा करैत रहत ।

..

फेर स निर्देशन कें करत ?

मधेश आन्दोलनक योद्धा कृष्णचन्द्र मिश्र सँ हमर पहिल भेट जनकपुर अञ्चल अस्पताल रोडमे भेल छल। तहिया हम १० वर्षकेँ छलहुँ हएत। हमरा बोखार लागल छल, इलाज करावए लेल डा. वैद्यनाथ झा लग हमर माय बाबू अनने छल। इलाजक बाद दवाई आनय कृष्णचन्द्रजीकेँ दोकानपर गेल रही।

ओ १० रुपैयाकेँ दवाई देलन्हि। बेंचपर बैसा हमर माय, बाबूजी आ काकाकेँ ओ चाह पिऔलन्हि आ बलजोडी पान सेहो खुऔलन्हि। १० रुपैयाक समानमे १/२ रुपैया बचल हेतन्हि मुदा ओ १०/१२ रुपैया चाहे पानमे खर्च कऽ देलन्हि। हमर बाल मोन हुनका तहिया मूर्ख बुझने छल।

एकर किछुए दिनक बाद दशमीमे हम अपन मामा गाम बनौली गेल छलहुँ। हुनका ओतय देखलहुँ तकर बाद पत्ता चलल गामक सम्बन्धमे ओ नाना हेता। हमर नानाकेँ घरक ठीक बगलमे हुनकरो घर छल। हुनकर धियापुतासभ सँ सेहो परिचय भेल। घर नजदिक भेलाक कारण दिन रातिमे ४/५ बेर हुनका देखैत छलहुँ। मुदा जाए बेर हुनका देखियन्हि, तीन-चारि गोटे संगे धरफराइते जाइत अबैत रहथि। हुनक जेठ लडका बेर-बेर कहथि, 'हमर बाबूकेँ नाटक हेतैक।' ओ नाटकमे हमर मामा सभ सेहो अभिनय कऽ रहल रहथि मुदा जेकरा मुँहि सुनी ओ कृष्णचन्द्र जीकेँ नाम लऽ रहल छल। हमरा अहि बातकेँ बहुत इर्ष्या भऽ रहल छल। माइकमे सेहो एलाउन्सरसभ दिनभरि कृष्णचन्द्र मिश्रक नाटक आइ भऽ रहल अछि जानकारी दऽ रहल छल।

राति ८बाजल घर-घरमे ताला लागल आ बनौलीक सभ लोक सरकारी पट्टी लग बनल दुर्गा मन्दिरक आगा नाटक देखय पहुँच गेल। हमर मामासभ सेहो ओ नाटकमे कलाकार छलथि तएँ हमर नाना घर सँ बच्चा बुच्ची तक पहुँचल छल। नाटक शुरु भेल, हमर मामा सभकेँ सेहो स्टेजपर अभिनय करैत देखलहुँ। अन्तमे एहि मैथिली नाटककेँ निर्देशक कृष्णचन्द्र मिश्र छलथि एलाउन्सिङ्ग भेल। ओ हात जोडैत चौकी गेटकऽ बनल रंग मञ्च पर एला आ नमस्कार करैत चलि गेला। जाहि गतिमे ओ एला आ गेला लगैत छल पाछु सँ डोरी बान्हिकऽ किओ तानि रहल हुए। धरफराइते चलि गेला। नाटककेँ बाद बहुतो गोटे हमर मामा(उदय कान्त झा)केँ बडाई कऽ रहल छल। ओ नाटककेँ मुख्य कलाकारमे छलथि। 'बडी कृष्णचन्द्रजीक बेटा अपन बाबूकेँ बडाइ करैत छल, ओ तऽ एको मिनेट नहि स्टेजपर रहला हमर मामा तऽ कतेक काल नहि कतेक काल...' हमर बाल मोनमे आएल। हम सभ विजयी मुस्कान लऽ घर एलहुँ।

एकर बहुत दिनक बाद कृष्णचन्द्रजी सँ भेट हम जखन पत्रकारितामे एलहुँ तऽ भेल। ओ संसदीय चुनावमे पोलिङ्ग एजेन्ट रहथि।

एक गोटे सँ पुछलियन्हि हुनका विषयमे तऽ पत्ता लागल ओ आब दोकान छोडि देलथि। राजनीति करैत छथि। ओ व्यक्ति कृष्णचन्द्र जीक पडोसी छलथि। ओ हुनकर काज सँ दुखित छलथि वा की ? बडी व्यङ्ग सँ कहने छलथि। हमरा तखनो बुझाएल जे मुर्खाधिराजमे कोनो परिवर्तन नहि अएलन्हि अछि। एकर बाद भेट होइत रहल ओ हमरा चिन्हैत छला से हमरा नहि बुझल अछि मुदा हम हुनका बढिया जकाँ चिन्हैत छलियन्हि।

मधेश आन्दोलनक क्रममे तऽ सभ दिन भेट होइथ रहलथि। सभठाम कृष्णचन्द्रजी देखाइ दैत छला। आब जँ परिवर्तन भेलैक तऽ कृष्णचन्द्रजी पाछु नहि तकता हमरा मोनमे बराबर होइत छल। मुदा परिवर्तन भेलाक बादो हुनका अवसर नहि भेटलन्हि। किछु दिन पूर्व सुनलहुँ फेर सँ मधेश आन्दोलनक तैयारी कऽ रहल छथि। समाचार तऽ लिखने छलहुँ मुदा हँसी लागि गेल आ लागल फेर ओ मैथिली नाटक जकाँ नाटक शुरु होवय सँ पहिने छाएल रहता मुदा जखन नाटक हेतैक एकरबाद हुनकर चर्चो नहि हैत ! कृष्णचन्द्र जी हमरासभ लग नहि छथि मुदा एखन बुझाइत अछि जे आब कें आन्दोलन करत। आन्दोलनी तऽ अछि मुदा फेर सँ विना अवसर लेने निर्देशन कें करत ? हुनक अभाव आब लोककेँ बुझा रहल अछि।

ओ तऽ हवाकें भ्रोका छलथि

२०६७ चैत ८ गते। समय भोरक करिव ७ बजैत छल हएत। मोर्निङ्ग वाक सँ अपन घर दिस आवि रहल छलहुँ की मित्र राजेशजी(पत्रकार राजेश कर्ण) क घर लग हुनक साढु रत्तन जी भेट गेलथि। वातचित करिते रही की, राजेशजीकें मोवाइलमे फोन आएल। वसन्त कर्णजी नहि रहलथि। वसन्त नाम सँ ओतय सभ परिचित भेलाक कारण सभ गोटे एक्केवेर राजेशजी दिस तकलहुँ। राजेशजी एकदम घवरायल जकाँ लगलथि।

हमरे मुँह सँ खसि परल के वसन्त ? ओ कनैत कहय लगलथि, 'अपने वसन्त।' हमरो मोन घोर भऽ गेल। कल्पनो नहि छल वसन्त जी एना चलि जेता। दुइए दिन पूर्व वसन्त जी संग भेट भेल छल। महामूर्ख सम्मेलनमे व्यङ्ग्यात्मक कार्यक्रम पर ताली पिट-पिट कऽ वेहाल छलथि। हम टेलिभिजनक लेल फोटो खिचैत-खिचैत हुनका लग पहुँचल रही तऽ ओ अस्थिरे सँ कहला, 'केहन रहल काठमाण्डूक यात्रा ?' हम कहने रहियन्हि, 'ठिक-ठिक।'

इहे भेट हमर वसन्त जी संग अन्तिम छल।

वसन्त जी सँ वहुत अवेर सँ हमर परिचय भेल छल। जखन जनकपुरमे एफएम सभ खुजयकें क्रम चलल तऽ ओ जनकपुर एफएम ज्वाइन कएलन्हि आ हम रेडियो मिथिला। दूनु गोटेकें भोरे सँ रेडियोमे डियुटी भेलाक कारण करिव डेढ वर्षकवाद परिचय भेल छल। एक दिन पैदले-पैदले घर जाइत छलहुँ की सरहन्चिया कुट्टी लग ओ एहिना परिचय करवाक हिसाव सँ हमरा संग वातचित कएलन्हि।

फेर ओ कहलन्हि, 'हमरा अहाँ सँ वहुत दिन सँ इच्छा छल परिचय करितहुँ।' प्रसंगक क्रममे पता चलल हुनकर डेरा हमरे घर लग अछि। नाम सँ तऽ हुनका मात्र नहि हमरा अङ्गनामे हुनक राशीफल सभ सुनैत अछि से कहलाकवाद ओ वहुत प्रसन्न भेल रहथि।

वसन्त जी जनकपुर एफएममे भोरमे राशीफल पढैत छलथि। हुनकर पढल राशीफल आ हमरा सभक रेडियोमे दिपेन्द्र झाद्वारा पढल जायवला राशीफल हमरा घरमे विशेष उत्सुकता सँ सभ गोटे सुनैत छल ।

ओ परिचयकें दू महिनाकेंवाद वसन्तजीकें टिभीमे देखलहुँ। ओ तराई टिभीमे मैथिली भाषाक समाचार पढि रहल छलथि। हुनक आवाज सहीमे हमरा तराईए टिभीमे सुनयकें अवसर भेटल। गजवकें आवाज छल। सुनलाकवाद लगैत छल सुनिते रही। व्यक्तिगत रुप सँ समाचार वाचककें रुपमे हमरा अनिल , अमर, अतिश, वविता, जयन्ताकें समाचार वहुत निक लगैत छल। मुदा वसन्तकें सुनलाकवाद हुनको हम 'फैन' भऽ गेल रही।

संयोग एहन भेलै जे ओ तराई टिभी छोडि देलथि आ जनकपुर रहयकें विचार कएलथि। वसन्तक वाचनक प्रभाव हमरा मष्तिष्कमे एहि रुप सँ घेर लेने छल की ओ इच्छा प्रकट कएलथि आ हम, हुनका रेडियोमे राखि लेलहुँ। रेडियोमे वहुत दिन हमरा संगे काज करयकें अवसर नहि भेटलन्हि मुदा ओ दू महिना रहलथि एकटा अमिट छाप छोडि कऽ गेलथि। गजवकें समाचार वाचन, छुट्टी तऽ ओ लेवे नहि करथि।

हुनकर ई दूनु वात हमरा वहुत पसिन अवैत छल। मुदा समाचार मौलिक लिखु एहि वातक लेल हम हुनका वेर-वेर डटैत छलहुँ। कए दिन ओ कोना लिखवै सिखा दिअ कहथि आ हम हुनकर समाचार वना दैत छलहुँ।

मौलिक समाचार लिखय सँ ओ वेर -वेर डेराइत रहथि छलथि। आ हम हुनका खोजि-खोजि कऽ समाचार वनावयलेल दैत छलहुँ। आइ वसन्त जी हमरासभ लग नहि छथि।

ओ कोना चलि गेलथि विश्वासे नहि लागि रहल अछि। केखनो वुझाइत अछि जे ओ एक दिन भेटल रहथि आ फेर दु महिनावाद, फेर ६ महिनाकवाद अहिना ओ चलि एता। ओ तऽ हावाकें भ्रोका छलथि। केकरो वन्हने नहि वन्हायवला।

नगरपालिकाक सभा हलक कथा

युवा निर्देशक अमितेश साहकेँ एकटा डकुमेन्ट्रिक शो करबाक छलन्हि । स्थानक खोजीमे रहथि । हमरासँग हुनका बात भेलन्हि तऽ हमर एक मात्र सल्लाह छल जनकपुरमे जतय करी मुदा नगरपालिकाक सभाकक्षमे नहि ।

सहीमे सभाकक्षमे गेलाक बाद नगरपालिकाक विकास कोना भऽ रहल अछि लोक सहजहि बुझिसकैत अछि।

सभाकक्ष देखलाक बाद नगरक विकासक सम्बन्धमे बुझय विभिन्न स्थान पर जाए नहि पड़त ।

अमितेशजी नगरपालिका भितर कार्यक्रम नहि करैथ तकर अर्थ ई नहि छल जे नगरक दुरावस्था नहि देखाबी। ओतय बैसबाक स्थान, साउण्ड समस्या, गन्दा एहनमे कोना कार्यक्रम भऽ सकैत छल !

हमरा स्मरण अबैत अछि ओ दिन जहिया नगरपालिका प्रमुखमे बृशेषचन्द्र लाल आ उप प्रमुखमे लालकिशोर साह रहथि । तहिया हम क्याम्पसमे पढ़ैत रही। आ पहिल बेर नगरपालिकामे गेल छलहुँ। टोलमे बिजलीक पोल सभ पर नगरपालिके मरकरी लगबैत अछि सुनने छलहुँ। किए नहि हमहुँ सभ लाभ उठाली इएह सोचि मरकरी मांगए गेल छलहुँ। प्रमुखजीक कक्ष एतेक सफा देखलियै जे हम द्वारे पर चप्पल निकालि लेलहुँ । ओ दिन स्मरण अबैत अछि तऽ नगरपालिकाक एखुनक अवस्था देखकऽ बड़ आश्चर्य लगैत अछि जे कहिया ओ दिन फेर आओत ।

हम कथमपि ई कहबाक पक्षमे नहि छी जे बृषेशजीक कालमे भ्रष्टाचार नहि भेल रहैक !

भ्रष्टाचार दुनु कालमे भेल रहैक मुदा प्रकृति भिन्न छलैक तहिया कतबो किछु भेलाक बादो नगरपालिका हँसैत छल आ एखन कानि रहल अछि।

'जनकपुर नगरपालिका आ जिल्ला विकास समिति धनुषामे जनप्रतिनिधि रहला वा नहि रहलामे की अन्तर होइत अछि तकर परिणाम एहिसँ बढ़िया नहि भऽ सकैत अछि।' नगरपालिकाक पूर्व उपमेयर किशोरी साह एक दिन प्रसङ्गक क्रममे कहलन्हि

अपन कालमे नगरपालिकामे कोनो समस्या होइत छल तऽ डरे बजार नहि घुमैत छलहुँ। ओ स्वीकार कएलन्हि, कोनो वार्डमे समस्या होइत छल तऽ लोक गारिए पढ़ैत छल।

सहीमे आजुक अवस्था एहन अछि जे नगरपालिकाक अधिकृत दुतियाक चान भऽ गेल छथि तऽ प्रायः निमित रहल इन्जिनियर साहेब आ एकाउण्टेन्ट साहेब कार्यालय समयकेँ बादे नगरपालिकामे देखाइ दैत छथि । नेपाली काँग्रेसक युवा नेता श्याम कुमार यादवक बात जँ मानी तऽ नगरपालिका भवनक दुरावस्था तँ अछिए संगहि कार्यालयकेँ समयमे नगरपालिकामे फोन करु तऽ किओ नहि उठौता वा प्रायः इगेंज रहत।

किछुए दिन पूर्व नेपाल प्रेस युनियन धनुषाद्वारा आयोजित चाहपान समारोहमे सहभागि होबए नगर पालिका सभाकक्षमे पहुँचल नेपाली काँग्रेसक तत्कालिन महामन्त्री विमलेन्द्र निधि सभाहलक विषयमे चिन्ता व्यक्त कएलन्हि । ओ व्यंग्यात्मक स्वरमे कहलन्हि, 'केना सोफा फाटि गेल अछि।' नगरपालिकाक हाल देखिकऽ हुनक मोन जरुर विक्षुब्ध भेल हेतन्हि मुदा ओहो व्यङ्ग करय जनैत छथि !

नगरमे विशिष्ट व्यक्तिक सत्कारक लेल बनाओल गेल ओ भवनमे चारुकात झोल सहजहि देखल जा सकैत अछि। प्लास्टिकक कुर्सीक स्थान पर काठक स्टुल रखाय लागल अछि । सोफाक चारु दिसक फोम उघरि गेल अछि। एकोडियम देखलाक बाद लगैत अछि जे ओहिमे सँ किओ काठ काटि लेलक अछि।

सोफा केना फाटि गेल वा कुर्सीक स्थान पर काठक स्टुल राखल गेल बड़का भाड़ी बात नहि अछि। नगरक विकासक अवस्था की छै तकर झलक अछि। ढल्केबरसँ जनकपुर एलाक बाद हम कतय जा रहल छी बुझि सकैत छी तहिना सभाकक्ष सभ बात स्पष्ट कऽ सकैत अछि।

नगरपालिकाक सभाकक्षसँ ओकर गैर जिम्मेवारीपन झलकैत अछि। ओकर कर्मचारी सभक लाचारीपनक नमूना अछि ई।

सभसँ जरुरी अछि जे नगरपालिका अपनाकेँ सुधार करबाक लेल एतयकेँ कर्मचारीसभ जिम्मेवार भऽ काज करत तऽ जनकपुरक नीक विकास भऽ सकैत अछि मुदा ओतबे नहि जनकपुरक नागरिक समाजकेँ सेहो उठय पड़तन्हि ।

वर्तमान सरकार फेरसँ स्थानीय विकासमे जन प्रतिनिधि सभकेँ मनोनित करय लागल अछि। मनोनित हाकिम सभक अनुभव सेहो जनकपुर नगरपालिका आ जिल्ला विकास समिति धनुषाकेँ लेल बढ़ीया नहि अछि। जिल्ला विकास समितिक तत्कालीन सभापति बलराम सुवेदी सबैला सडक खण्डमे सडक बनाबय माटि खसेलक नामपर पचास लाखक फर्जी बिल बनाकऽ पैसा हजम कऽ लएने छथि । तहिना जलादि नदीमे सेहो इएह अवस्था भेल छल ।

स्थानीय विकासमे सरकार पैसा पर पैसा बढ़ा रहल अछि। मुदा काज कोना चलिरहल अछि एकर जाँच नहि करत तावरि कोना पैसाक सदुपयोग सम्भव भऽ सकैत अछि ? ई डायरीकेँ हम रेडियो मिथिलाक चर्चित कार्यक्रम 'मुँह बजैया घोघ डोलैया' कऽ एक संवाद सँ अन्त्य करय चाहैत छी। जे नगरपालिकाक कर्मचारी सभकेँ पाचनशक्तिकेँ मानय पड़त । हौ भाइ कतबो खाइत छैक ढेकाइनो ढेकार नहि होइत छैक वा कही बिना हजमोलेकेँ ओ सभ पचालैत छथि । एहन कला संसारमे कतहुँ नहि भेटतह ।

रेलमे झुठक खेती

२०६७ माघ २३ गते जयनगर जएबाक छल । भोरका रेलमे चढ़लहुँ, रेल गतियो नहि पकरने छल कि लोकसभक अलग-अलग भाषण शुरु भऽ गेल छल । मन्त्रीमण्डलपर लोकसभ ठोकुवा कऽ रहल छलथि । एकगोटे सज्जन कहला, एहिबेर गृहमन्त्री रामचन्द्र झा हेता से एमाले महासचिव ईश्वर पोखरेल हमरा रातिएमे टेलिफोन कऽ कहलथि अछि। ओ महानुभाव जेना बाजि रहल छलथि हुनकासंग एमाले महासचिवकेँ दिनमे तीनबेर बातचित करैत

होइथ। हुनकर गप्प सँ पुरे रेलक डिब्बा मोहित छल। सभक ध्यान हुनकेँ दिस छल। हुनका लग जेना मन्त्रीमण्डलक सभ लिस्ट चलि आएल होइक तेना मन्त्रीसभकेँ नाम दनदना दऽ रहल छलाह। हम चुपचाप ओहि महानुभावकेँ देखि रहल छलहुँ। बात जतेक गप्पक होइक जनकपुर रेल्वे स्टेशन सँ परवाहा स्टेशनधरि हमहुँ हुनकर हाउभाउ सँ प्रभावित छलहुँ एखन लागि रहल अछि।

परवाहा स्टेशनक बाद ओ सज्जन उतरि गेलथि। बुझयल किछु देर डिब्बा शान्त रहत मुदा किछुए देरमे प्रकाश भक्तकेँ देखयमे आएल। ओ युवक राष्ट्रिय प्रजातन्त्र पार्टीक नेता प्रकाश राणा आ रामानन्द युवा क्लवक प्रकाश मिश्राकेँ माला जपि रहल छलाह। हरचीजक समाधान जेना हुनका दूनु लग अछि तहिना ओ बाजि रहल छलाह। फेर एहि मुडमे बाहर सँ जेना लोक देखत तऽ केकरो सँ ओ झगडा करथि होइथ तेहन बुझाइत छल। एक दू स्टेशनक बाद एकटा गप्पीकेँ बातसभ जे सुनलहुँ तऽ हँसैत-हँसैत पेट फुलल छल। एखनो स्मरण करिते हँसी लागि गेल अछि।

एक गोटे अपनाकेँ एमालेक नेता कहयवला व्यक्ति कहलथि, किछुए दिन पूर्व नव निर्वाचित प्रधानमन्त्री एमाले अध्यक्ष झलनाथ खनाल जनकपुर आएल छलथि। ओ हुनका कहादून कहने रहथिन, तोहर घर कतय छौक चल हम चलबहुँ। लोकसभ हुनका चाटि रहल छल कि ओहिना जिज्ञासा राखि रहल होइथ हमरा नहि बुझल अछि मुदा लोकसभ जिज्ञासापर जिज्ञासा कऽ रहल छलथि। परवाहाकेँ सायद ओ व्यक्ति छलाह। ओ एकटा जिज्ञासाक जवावमे कहलथि, 'हम झलनाथ कमरेडकेँ फोन कऽ कऽ कहैत छी संविधान बनौक, नहि बनौक रेलकेँ सुधारु।'

ओ, 'कमरेडकेँ कहि दैत छियैन्हि अपने सभ बेरोजगारकेँ नोकरी दऽ दियौक आजीवन अपने प्रधानमन्त्री रहुँ।'

एकगोटेकेँ डिब्बामे खाली टेलिफोनेपर बातचित करैत देखलहुँ। कतौ-कतौ नेटवर्क नहि रहैक तखने ओ टेलिफोनमे बातचित छोडथि। छोडयकेँ क्रममे महिनामे २० हजार २५ हजार मोबाइलमे उठैत अछि कहल करथि। इ गप्पक बाप भेलाक कारण हुनकापर लोक ओतेक ध्यान नहि देने छल। मुदा हम बेर-बेर बाच कएलहुँ जे ओ एना किया कऽ रहल छथि।

जयनगर सँ हम जनकपुर चलि आएल छी मुदा गप्पसभ जे रेलमे सुनने छलहुँ से सुनि पेटमे गुदगुदी लागि रहल अछि। संगहि एकटा बात मोनमे बुझाइत अछि मैथिलीक चर्चित नाटककार महेन्द्र मलंगिया धनुषाक बभनगामा स्थित कार्यरत अपन विद्यालय सँ अपन गाम जाय काल रेले यात्रा किएक करैत छलथि ? जखन कि ओ बसो सँ मधुवनी जा सकैत छलथि। हुनका गप्पीसभ सँ बहुत नाटक लिखयमे मद्दत भेल हेतन्हि।

हमरा तऽ कएटा लेख लिखयकेँ यात्रा खोराकी देलक। हमरा लगैत अछि रेले अछि झूठ। एकर निर्माणक चर्चा दश वर्ष सँ भऽ रहल छैक। बात जेना चलैत छैक तेना लगैत रहैत अछि अहिबेर रेल बनि जाएत मुदा किछु नहि कारण बहुत बात गप्पे रहैत छैक। अर्थात ओतय सभ झुठे झूठ। मुदा बाट केहनो अवस्थामे यात्रीकेँ कटा दैत अछि से गुण ओ बातसभमे अवश्य रहैत अछि ई कम्तीमे सोलह अनाशत अछि।

घुर लग देश विदेशक चर्चा

जाढक क्रममे रिपोर्टिङ्ग करबाक लेल २०६७ साल पुस ३१ गते धनुषाक गंगुली गेल छलहुँ। समय भोरक छल। चारु दिस धुनि पसरल छल, मुदा लोककेँ धुनिक कोनो परवाह नहि छल। घुरक चारुदिस लोक मजमा लगौने छल। हमहुँ ओहि मजमामे बैसि गेलहुँ। पहिने घुर लग लोकसभ कि सभ बातचित करैत छैक ई सुनी। चुप चाप तऽ लोक अवश्य घुर नहि तपैत हैत।

ओतय तऽ सरकार निर्माणक बहस चलि रहल छल। सभक अपने तर्क आ अपने राग। हमरा तऽ हिम्मत नहि कएलक एहि बहसमे कोनो ढंग सँ बाजी। रेडियो आ टेलिभिजनमे अन्तर्वार्ताक नामपर नेतासभकेँ छक्का छोडबैत छी, मुदा एहि ठाम तऽ अपना बसक बात नहि छल। एक सँ एक तर्क। जनकपुरोमे सरकार गठनकेँ चर्च तऽ चलैत अछि

मुदा एहिठाम अनमिन किया देश सँ जा रहल अछि ? महँगीकेँ विषयमे भारतक प्रधानमन्त्री की कहलथि ? फेर एहि पर अनेक तर्क भेटैत छल । हम तऽ पाँच मिनेटकेँ लेल ओतह गेल छलहुँ मुदा ओतय डेढ घण्टा बैसलाक बादो उठयकेँ मोन नहि कएलक ।

खट्टर काकाक तरंगक लेखक हरिमोहन झा जँ जिबैत रहितथि आ ओतय पहुँचतथि तऽ कएटा नहि कएटा महात्म्य तैयार कऽ लितथि । बातबात पर व्यङ्ग ।

घुर हम अहि सँ पहिने नहि तपैत छलहुँ से नहि बच्चामे बहुत तपने छी । हमर गाम बभनगामामे सेहो हरेक दलान पर घुर लागल रहैत अछि । हमरो दलान पर लगैत छल, जेकरा तापयकेँ लेल भोर साँझ भीड लागल रहैत छल । बडका लोक सभक लग हमरा सभकेँ बैसयकेँ अनुमति नहि छल जखन ओसभ उठि जाइत छलथि तखन बच्चा सभकेँ बैसयकेँ पालो अबैत छल । हमरा स्मरण अछि ओहि समयमे सेहो देश विदेश नहि मुदा बच्चा सभ बीच जनकपुरक चर्चा अवश्य होइत छल । हमरा सभ सँ कनि सिनियर सभ जनकपुरक सिनेमा हलमे कोन सिनेमा लागल अछि, फलनामाक बरियातीमे ओ एतेक रसभरी खएलक । सायद सिनियर सभ लग बडका-बडका बात होइत छलैक हैत ।

गंगुलीमे घुरे लग बैसल रही की एक गोटे ४०/५० वर्षक छल हैत धोती आ स्वीटर पहिरने जाड सँ कठुवाइते आएल आ बाजल, 'सरकार सात गते भितरमे बनि जाएत बुझल अछि !' सभ एकटक ओम्हरे ताकय लागल । ओहि घुरलग ब्रेकिङ्ग न्युज छल ।

एकरबाद जे अवस्था आएल हम तऽ चकित छलहुँ । धराधर प्रश्नसभ आबि रहल छल । जेना ओ कोनो देशक बडका व्यक्ति होइथ आ हम पत्रकार सभ हुनका घेर कऽ प्रेस कन्फ्रेन्स कऽ रहल होइ । किओ पुछय, 'कोना बुझलहक भैया !'

'नेतासभ तऽ कहाँ डोलि रहल छैक सभकेँ तऽ प्र्यानेमन्त्री चाही !'

'हौ फेर ओहे बात हेतैक अर्थात माधवे जी कामचलाउ करैत रहता !'

ओ युवक माथ डोलबैत सभकेँ एक्के स्वरमे उतर देबय लगला । सरकार बनयकेँ प्रमुख कारण रामचन्द्र पौडेलकेँ उम्मेदवारी फिर्ता लेब अछि । यदि कोनो सहमति नहि भेल रहैत तऽ पौडेल दू सय बेर हारि जाइत से होइत मुदा ओ डोलय बला नहि छलथि । हमरा तऽ लगैत अछि, भारत आ चीन दुनु तंग आबि चुकल अछि । भैया हम तऽ सुनलिया टुक्रा टुक्रामे विभाजित भऽ रहल मधेशी दल सेहो कहुँना नयाँ सरकार बनैक ताहिमे लागल अछि । ओ कहि रहल छला ।

हम तऽ चकित रही गेलहुँ ओ युवक आ घुरक टोलीक बात सुनि । देशक निर्णायक स्थलमे एहि ठामक लोक जँ पहुँचल रहैत तऽ कतहुँ सँ सल्लाह नहि करय परतैक । सभ समस्याके समाधान एक्के चुटकीमे । एक गोटे बुढा हमरा दिस तकैत बजला, बाउ किम्हर अएलहुँ अछि ओ एक प्रश्नक माध्यम सँ बहुत रास उत्तर लेबयकेँ चेष्टा कएलन्हि ।

घुर लग सँ हम चलि आएल छी, लगैत अछि गंगुली वा जनकपुर क्षेत्रक हजारो घुर लग सभ दिन अहिना मजमा लगैत हेतैक । बहुतो समस्याक निकासक सूत्र सभ प्रतिपादन होइत हेतैक फेर घुरक धुँआ संग उडि जेतैक । जहिना एतयकेँ कामदारकेँ विदेश कमाय सँ रोकयकेँ सूत्र नहि अछि तहिना ई चाणक्य महराज सभकेँ जुक्ति लेबयकेँ नहि सूत्र आ नहि केकरो फुर्सत ।

गजबकें अदान-प्रदान

टिभीमे कतेको वर्ष सँ देखैत छलहुँ पाकिस्तानक बोर्डर पर गणतन्त्र दिवस मनाइत । एकटा देशक उत्सवमे दोसर देशक लोक सहभागी होइत अछि तऽ केहन होइत हेतैक ? ई उत्सुकता प्रत्येक वर्ष गणतन्त्र दिवसकें समारोहमे मनमे अवैत छल फेर अहिना समाप्त भऽ जाइत छल । कारण एहन प्रकारक समारोह नेपाली बोर्डर पर नहि होइत अछि। फेर पाकिस्तान बोर्डर पर जाएकें सम्भव नहि छल ।

नेपालमे भारतीय राजदूतावास, वीरगंज महावाणिज्य दुतावासमे कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष होइत अछि। ओहि स्थान सभ सँ निमन्त्रण नहि अवैत अछि से नहि मुदा कोनो नयाँ चिज होइत हेतैक से नहि लगैत छल । फेर ओतेक दुर कथि लेल जाउ तएँ गणतन्त्र दिवसक कार्यक्रम टिभीए पर देखैत छलहुँ । ई जानकारी छल जे ई एकटा एहन उत्सव अछि जे भारतकें गाम-गाममे होइत अछि । रेडियोमे हमसभ एहि दिवसकें प्रत्येक वर्ष विशेष कभरेज करैत छी। एहिक्रममे प्रत्येक वर्ष रिपोर्टर सभक माध्यम सँ एहि उत्सवकें प्रभाव बुझैत आएल छी।

संयोग सँ एहिबेर एकटा निमन्त्रण भेटल जाहि मे लिखल छल नेपाल भारत मैत्री संघ धनुषा सेहो बोर्डर पर कार्यक्रम रखलक अछि। जटही बोर्डर पर कार्यक्रम राखल गेल छल। जहिना निमन्त्रण पत्र भेटल सहकर्मी सभकें हम अपने जाएब कहि तैयार भऽ गेलहुँ। भोरमे २६ जनवरी २०११ कऽ बहुत जाढ छल। तैयो भोरे जटही बोर्डर पर पहुँचलहुँ।

ओतय तऽ पुरे उत्सवक माहौल छल। उमगाँवक ध्रुव तारा इङ्गलिस स्कूलक दर्जनो विद्यार्थी, शिक्षक, शिक्षिका, राष्ट्रिय जनता दलक बिहार प्रदेशक महासचिव बच्चेलाल महतो सहित विभिन्न क्षेत्रक व्यक्तिसभक उपस्थिति छल। हमसभ साढे ७ बजे धरि ओतय पहुँचल रही। ओसभ तऽ साढे ६ बजे सँ ओतय छलथि । सभमे अलग उत्साह देखबामे आएल।

नेपाल सँ सेहो सभासद रामसरोज यादव, नेपाल भारत मैत्री संघक पदाधिकारी सभ बहुत संख्यामे उपस्थिति छलाह । जनकपुर सँ भोला सिंह लाइन्स मिथिला इङ्गलिस स्कुलक सेहो विद्यार्थीक टोली ओतय पहुँचल छल। सभमे एकटा उत्साह छलैक। नेपालीयो सभकें देखि कऽ लगैत छल ओहोसभ गणतन्त्र दिवस मना रहल अछि।

सभासद रामसरोज यादव ओतय बेर-बेर कहलथि, 'हमरो देश गणतान्त्रिक भऽ गेल अछि, बडका भैया भारतकें अनुभव लेबय आएल छी। इएह अनुभव सभ नयाँ संविधान बनाबयमे काज करत।' हुनका नयाँ संविधान बनाबयमे कतेक काज करत नहि बुझल अछि, मुदा हमरा बहुत नयाँ चीजक अनुभव भेल।

जहिना पाकिस्तान बोर्डर पर भारतीय आ पाकिस्तानी झण्डा अदान- प्रदान करैत अछि तहिना जटही बोर्डर पर सेहो भेल। नेपाल-भारतक सुरक्षाकर्मी सभक सेहो ओतय भीड लागल छल। स्थानीयवासीकें तऽ बाते छोडू। धिया पुता तक ओतय भोरे सँ पहुँच गेल छल। बोर्डर पर कार्यक्रम भेलाक कारण भारतक इन्टेलिजेन्सक लोकसभ सेहो पहुँचल छल।

सभ देखबाक लेल पहुँचल छल। मुदा सभ कार्यक्रममे सहभागी भऽ गेल।

हमहुँ सभ ओहि कार्यक्रममे सहभागी भेलहुँ। शुरुमे नाटक जकाँ झण्डाक अदान-प्रदान होमय लागल, मुदा आब लगैत अछि सहीमे गजबकें अदान-प्रदान छल। ओ एहन अदान-प्रदान जे एक दोसरकें अस्तित्व स्वीकारैत, एक-दोसर देशक विकासक कामना नुकाएल नुकाएल स्वरमे।

घर(घरमे दारु भठ्ठी !

धनुषा जिल्लामे अवैध दारुक भठ्ठी सञ्चालित अछि ई बात हमरा मात्र नहि बहुतो गोटेकेँ बुझल अछि। हम स्वंय कतेको बेर अवैध दारु भठ्ठी सम्बन्धी समाचार लिखने छी। एकबेर तऽ गोरख यादवकेँ सोहनी सिंगरजोरामे रहल भठ्ठी तोडयगेल पुलिस टोली सँग रिपोर्टिङ्केलेल हमहुँ गेल छलहुँ। ओहि ठाम पुलिस दारुसभ नष्ट कऽ भठ्ठीमे आगि सेहो लगौने छल।

मुदा एहिबेर धनुषाक धनौजी गाबिसक धनौजी आ भररिया तहिना औरही कप्टैलमे जे दारु देखलहुँ से कनिक देरकेँ लेल चकित रहि गेल छलहुँ। एखनो विश्वास नहि भऽ रहल अछि जे धनुषामे अवैध दारुक कारोबार एहि रुप सँ बढि गेल अछि। हमरा एहि तीनू गाममे जाय सँ पूर्व लगैत छल गोरख यादव, सबैलाक जयसवाल, इनरवाक राजा गोइत, फुलगामाक किछु व्यक्ति मात्र ई कारोबार करैत छथि। मुदा सत्य एहि सँ फरक अछि।

कतेको घरमे पुलिस दारु नष्ट कएलक। ओ घर सभ बाहर सँ बहुत सम्भ्रान्त जकाँ लगैत छल मुदा भितर गेलाकबाद किछु आओर छल। स्वयं धनुषाक प्रहरी उपरीक्षक (एसपी)दिनेश आमात्य टोलीक नेतृत्व कएलाक कारण दारु नष्ट करब औपचारिकता नहि रहि गेल छल।

पुलिसपर जेना कि सवार छलैक ओहि गाम सँ दारु समाप्ते कऽ कऽ छोडयकेँ सप्पत खएने छल। एकटा घरमे पुलिस दारु नष्ट करयकेँ लेल पहुँचल तऽ गृहणी महिला सभ बरियातीकेँ पियाबयकेँ लेल दारु किन कऽ अनने जानकारी देलन्हि। मुदा भितर गेलाकबाद तऽ माहोले किछु आओर छल। ओहि घरमे मात्र पाँच सय लिटर सँ बेसी तैयारी दारु आ ओतबे संख्यामे कच्चा दारु भेटल छल। एकटा घरमे पूजा होइत छल ओहि घरमे तऽ दारुक अहुँ सँ भयाबय स्थिति छल।

२०६७ फागुन ११ गते दिनभरि एसपीकेँ नेतृत्वमे पुलिस सभ दारु भठ्ठी तोडैत रहल, अवैध दारु सभ नष्ट करैत रहल आ हम अपन समाचार देबाकलेल भिजुवल करैत रहलहुँ। कतेक ठाम पुलिस सँगे हमरा जाइत लोक देखलक तऽ हमर घर बचा दिय जे देबय परत देब, तकर सेहो अफर देने छल। ओना ओ बातकेँ हमसभ ओतेक ध्यान नहि देने छलहुँ।

भररियामे पुलिस भठ्ठी तोडयगेल समयमे महिला सभ ताली बजा कऽ एहि अभियानकेँ स्वागत कएने छलीह। महिला सभकेँ स्थिति सँ लगैत छल ओहो सभ भठ्ठी सँ तंग आबि गेल अछि।

ओ सभ पुलिसकेँ ताली बजा कऽ स्वागत कएलक। ओना हमरा ई बात बुझल अछि ई काज सभकेँ बहुत दिनधरि निरन्तरता नहि देल जायत। एहि सँ पहिनहो गोरख यादव सहित लोकसभकेँ भठ्ठी जराओल गेल छल।

मुदा फेर ओहे भठ्ठी खोलयकेँ लेल पुलिस पैसा देने छल। एखनो धनुषामे कडा अभियान चललाकबाद धनुषाक भठ्ठीवला सभ महोत्तरी दिस चलि गेल अछि अवैध दारु बनाबयकेँ काज रुकल नहि अछि।

किछु दिनकबाद अहुँ ठाम फेर सँ संचालन हेबे करत। एकरा सत्य मानहि पडत। हमसभ कोन युगमे जा रहल छी। जतय घर-घरमे दारु बनि रहल अछि। लोक अपनाकेँ दोसर व्यवसाय सँ फाइदा दारु बना कऽ बेचयमे बुझिरहल अछि।

ई समस्या भेल की नहि एहि पर एकबेर हमरासभकेँ चिन्तन करहे परत। नहि तऽ पुलिस दारु भठ्ठी तोडत आ फेर ओहे पुलिस सञ्चालनक लेल पैसा लगाओत।

जाहि रुपमे दारुक उत्पादन बढि रहल अछि एकर साइड इफेक्ट भंयकर होबयबला अछि।

उदास परिक्रमा

२०६७ साल फागुन २१ गते पत्रकार मित्र रामअशिष यादव जीकेँ टेलिफोन आएल। आइ कनी सबेरे मोर्निङ्ग वाकमे जायकेँ छैक, परिक्रमाकेँ रिपोर्टिङ्ग करबाक नहि अछि ? हुनकर टेलिफोन आवय सँ पहिने हम तैयार भऽ गेल छलहुँ। हमहुँ एक दिन पहिने मोर्निङ्ग वाकमे हनुमाने नगर जायकेँ कार्यक्रम बनौने छलहुँ।

ओतय पहुँचलहुँ तऽ भीड पहिलकेँ बर्ष जकाँ छल मुदा ओतयकेँ माहौल कनी उदास(उदास छल। नेपाली काँग्रेसक संस्थापक नेता कृष्णप्रसाद भट्टराईकेँ अबेर राति निधन भऽ गेलन्हि ताहिकेँलेल तऽ ओतय उदासी नहि अछि ?

कनीक कालकलेल मोनमे आएल, मुदा से वात नहि छल। किछुवे देरमे आस्वस्त भऽ गेलहुँ। तथापि मुह सँ खसि पडल अहिबेर कोनो उत्साह नहि देखाइत अछि ? एहि पर एकटा बृद्ध महिलाकेँ लागल जेना घाउ पर नून छिट देने होइक। ओ जोर(जोर सँ बाजय लगली, कोना उत्साह हेतैक जाढ सँ मरि गेलहुँ। त्रिपाल तक नहि हनुमान नगरमे टाँगल छल। घुरोकेँ व्यवस्था ओहि रुपमे नहि छल। एहन कुव्यवस्था कहियो नहि भेल छल। ओ महिला एक सुरे बाजि रहल छली। हमरा एभि न्यूजक लेल भिजुवल करबाक छल आ पत्रिकाकलेल फोटो सेहो खिचबाक छल। हम ओ महिलाकेँ नजर अन्दाज करैत आगा बढि गेलहुँ। कनी दुर बढलाकबाद पाछा तकलहुँ तऽ ओ महिला भनभनाइते छली।

लोक सभ सीमावर्ती कल्याणेश्वर जाएकेँ तैयारीमे छल। हम ओ क्षण सभकेँ अपन क्यामरामे क्याप्चर करयमे लागि गेल छलहुँ। बगलमे भोजपुरी गीत जोड सँ बाजि रहल अछि। गीत तऽ भोजपुरीयोमे धार्मिकेँ छल मुदा भोरमे चिचिय-चिचिया कऽ गायब गीतसभ बेसुरा लागि रहल छल। बेसुरा गीत सुनैत-सुनैत हमरो मोन घोर भऽ गेल छल। परिक्रमा डोला उठिते हमहुँ ओतय सँ बिदा भऽ गेलहुँ। ओतय रिपोर्टिङ्ग करयकेँ लेल पहुँचल कान्तिपुरक समाचारदाता श्याम भाइजी (श्यामसुन्दर शशि) कहि रहल छलथि परिक्रमा लम्बा समय धरि नहि खिचा सकैत अछि।

परिक्रमा डोला कल्याणेश्वर लेल प्रस्थान कएला १४ घण्टा सँ बेसी भऽ गेल अछि। मुदा परिक्रमामे देखल उदासी हमरो श्यामे भाइजी जकाँ चिन्ता बढा देने अछि। की परिक्रमा परम्परा समाप्त भऽ जायत ? नेपाल भ्रमण वर्षक नाम पर पर्यटक आनयकेँ लेल लाखो रुपैया सरकार खर्च कऽ रहल अछि मुदा आयल पर्यटक व्यवस्थापनकेँ निराशा सँ हतोत्साहित तऽ नहि भऽ रहल अछि। की जनकपुर नेपालमे नहि अछि ? अछि तऽ पर्यटन मन्त्रालयकेँ परिक्रमाक व्यवस्थापनकेँ कोनो दायित्व नहि अछि ? बृहत्तर जनकपुर क्षेत्र विकास परिषद, विदेह मिथिला पर्यटन प्रवर्द्धन विकास समितिकेँ स्थापना नेताकेँ पेट भरयकेँ लेल मात्र अछि की ? एहि पर सभकेँ चिन्तन करबाक आवश्यकता अछि।

पौर साल राम नवमीकेँ सन्दर्भमे जनकपुरक वरिष्ठ पत्रकार राजेश्वर नेपाली सँग जनक चौक पर अनौपचारिक वातचीत भेल छल।

राम नवमीमे भीड नहि अछि ताहि पर नेपाली जी कहने छलथि जे राम नवमीमे १५ दिन सँ बेसी मेला लगैत छल। तिरहुतिया गाछीमे बडका बजार लगैत छल। पहाडी आ भारतीय क्षेत्रक व्यापारीसभ एक दोसरकेँ समान किनयकेँ लेल जनकपुर राम नवमीमे अबैत छल। मुदा आयोजक सभ उदासीनता देखेलाकबाद एहन स्थिति आबि गेल अछि। अर्थात मेला एतय सँ उठिगेल।

जहिना मेला उठल राम नवमीमे लोककेँ संख्या घटैत गेल। आब रामनवमी पूर्णिमा आकार ग्रहण कऽ लेलक अछि। कही परिक्रमा सेहो समाप्त नहि भऽ जाए। एहि बात पर मन्थन करहे परत। एतय आएल कर्मचारीसभकेँ मेला सँ कोनो मतलब नहि अछि ओ सभ कमायलेल आएल छथि। यतय रहयबला व्यक्तिकेँ मात्र मेला सँ मतलब अछि बुझय पडत। जनकपुर तखने रहत जखन एतयकेँ मन्दिर, पोखरि आ मेला रहत। एहि सत्यकेँ सभकेँ बुझय परत। उदासीमे रंग भरय परत।

कमेन्ट्री करयकें अनुभव

रेडियोमे तऽ ५/६ साल सँ काज करैत छी। ३/४ बर्ष सँ विभिन्न समाचार मूलक कार्यक्रम सभ सेहो चलवैत छी मुदा क्रिकेटक कमेन्ट्रीक अनुभव नहि छल। मुदा एहिवेर अर्थात २०६७ चैत महिनामे एक दम रोमाञ्चक अनुभव रहल। जे टीमकें पसिन करैत छी ओ टीम जितल आ हम ओकर अपन रेडियोमे कमेन्ट्री कएलहुँ।

२ दिन लगातार ९/९ घण्टाक ओ कमेन्ट्री कएलहुँ। पब्लिककें रिस्पोन्स नहि पुछी। यदि एहन रिस्पोन्स भेटैत छैक ई बुझैत रहितहुँ तऽ विश्वकपक हरेक म्याचकें कमेन्ट्री कएने रहितहुँ। एकर अपसोच आब बुझा रहल अछि। क्रिकेटक कमेन्ट्री करयकें सोच हमरा सभकें अगिले विश्व कप सँ छल। रेडियो मिथिला ओहि समयमे सञ्चालनमे आवि गेल छल। हम आ ओहि समयक सहकर्मी इश्वरचन्द्र झा कमेन्ट्रीक विषयमे वेर-वेर छलफल कएने छलहुँ।

मुदा ओहि वेर विश्वकप क्रिकेट पर स्पेशल कार्यक्रम तऽ चलल मुदा ओ कमेन्ट्रीक रुप ग्रहण नहि कऽ सकल। ओना ओहुँ वेरकें विश्व कपक विशेष कार्यक्रम वेश लोकप्रिय भेल छल। २०/२० पहिल विश्व कपक फाइनल म्याचकें सेहो एक-डेढ घण्टा कार्यक्रम चलने छलहुँ। मुदा एहिवेर दोसर सेमीफाइनल आ फाइनल म्याचक पूरे खेल चलल। कमेन्ट्रीमे हमसभ एकटा अलग रुपमे प्रस्तुत करयकें प्रयत्न कएलहुँ। जेना रेडियो सभमे उमर गुल बलिङ्ग करयकें लेल तैयार भेला ओ बल फेकलथि सेहवाग जोड सँ प्रहार कएलन्हि, फिल्डर बलकें पाछु-पाछु दौड रहल, चौका भऽ गेल। तेना नहि कऽ हरेक बलक प्रतिक्रिया विशेषज्ञद्वारा करयकें प्रयत्न कएलहुँ।

मैथिली भाषाक कमेन्ट्री कोना होयबाक चाही एकर मौलिकता देखाबयकें प्रयत्न कएलहुँ।

विशेषज्ञक रुपमे जनकपुरक क्रिकेट खेलाडीसभ सुनिल कुमार प्रसाद, कुमार प्रसुन, शोभाकान्त पाण्डे, राज मोहम्मद, अभिशेष झा सेहो विशेष योगदान देलन्हि। हरेक बल पर अपन धारणा। जनकपुरक खेलाडीमे खेलयकें मात्र नहि ओकर हरेक चीजकें जानकारी अछि से देखयमे आएल। जेना बडका-बडका विशेषज्ञसभ टिप्पणी करैत छथि तहिना ओहो सभ कएलथि। हुनक सभक ठोकुवासभ तऽ कतेक गोटे भविष्य वक्तासभकें फेल कऽ देत जेना लागल।

सेमिफाइनलमे भारतद्वारा २ सय ६० रन बनविते हमरा सभक विशेषज्ञ कहि देने छलथि आब भारतकें केओ नहि हरा सकैत अछि। फेर ओकरा लेल आधार सेहो प्रस्तुत कएलन्हि।

टेलिभिजनक युगमे लाइन एखनो रेडियोकें आवश्यकता बना देने अछि। फेर यदि नीक चीज परसवैक तऽ भोजन करयवला पसिन करवे करत। जनकपुरमे मात्र नहि सीमावर्ती क्षेत्रमे सेहो जतय-ततय लोक रेडियो मिथिला खोलने छल वा कही जे मैथिलीमे कमेन्ट्री सुनि रहल छल। इएह सोच हमरा सभकें रेडियो मिथिलामे कमेन्ट्री करवाकलेल बाध्य कएलक। फेर अपन भाषामे किछु कहैत छैक तऽ नीके लगैत अछि। प्रतिक्रिया जाहि रुप सँ आएल इएह बुझा रहल अछि। कारण कमेन्ट्रीमे हमरासभकें बहुत सुधार करयकें अछि जेना लागल मुदा सभकें मुँह सँ प्रशंसे-प्रशंसे।

मैथिलीमे हरेक चीजक स्कोप छैक से कमेन्ट्री सेहो देखा देलक। किछु गोटे हिन्दी भाषामे सेहो कएलथि मुदा अपन भाषाक एकटा अलग स्वाद देखल गेल।

भण्डारी जीकें जखन

मु   ह लाल भेल !

नागरिक तथा उड्डयन मन्त्रालयक पूर्व मन्त्री शरतसिंह भण्डारीकेँ २०६८ वैशाख ९ गते जनकपुरक एक पत्रकार सम्मेलनमे मुहँ लाल भऽ गेल छल। अधिकांश समय खुशी सँ चहकयबला व्यक्तिकेँ देखि कऽ लागिए नहि रहल छल जे इएह भण्डारी जी छथि। जनकपुर एयरपोर्ट किएक नहि विस्तार भेल ? पत्रकारसभ एक दिस प्रश्नक झड़ी लगा रहल छल तऽ दोसर दिस पूर्व मन्त्री भण्डारी पत्रकारक प्रश्नकेँ की उतर देल जाए ताहिकेँ लेल शब्द खोजि रहल छलथि।

मन्त्रीमे सँ हटय सँ पूर्व भण्डारी जीकेँ जे बयान सभ आबि रहल छल जाहि सँ बुझाइत छल एहि महिना सँ एयर पोर्टक विस्तार भऽजाएत। जाधरि ओ मन्त्री रहथि ता धरि लोककेँ कनि मनि अशो छल मुदा आब तऽ हैत से चर्चो परिचर्चा नहि रहि गेल अछि। एकर आक्रोश पत्रकार सम्मलेनमे देखयमे आबि रहल छल।

सभ पत्रकार सम्मेलन जकाँ बढाइए हैत सोचि कऽ आएल रहथि मुदा एकर विपरित भण्डारीजी सँ ओतय व्यवहार भेल।

मन्त्रीक झुठ घोषणाकेँ लऽ कऽ बेचारा सोनापारा गामवासी अपन खेतीहर जमीनकेँ माटि बेचि कऽ डबरी बना लेलक अछि। एखन ओ जमीनक स्थिति ई भेल अछि जे नहि ओहिमे कोनो अनाज उपजि सकैत अछि आ नहि डबरीमे माछ पालन हैत। खेत सरकारे लऽ लेत कनि माटि बेच कमाली किसानक चलाकी साफ घुसरि रहल अछि।

मुदा एतय प्रश्न ई उठि रहल अछि मन्त्री जीकेँ झुठ घोषणा किएक करय पड़लन्हि। एहन झूठ घोषणा भण्डारी जीकेँ कोन तगमा पहिरा देलकन्हि से नहि जानि। कहल जाइत छैक एहन दर्जनो घोषणा महोत्तरी जिल्लामे भण्डारी जी कएने छथि। मुदा कोनो काज ओहि जिल्लामे नहि भेल अछि।

किछु व्यक्तिकेँ करारमे नोकरी लगा देलहुँ, काठमाण्डूमे भेट करयबलाकेँ सय पचास दऽ देलहुँ, एहि बाहेक ओ किछु नहि कएने छथि। किछु दलालसभकेँ किछु जोडि देने छथिन मुदा जनताकेँ हातमे सुन्यक बाहेक किछु नहि भेटल अछि। जहिना हेम बहादुर मल्ल किछु जनताकेँ पशुपति नाथ महादेवकेँ दर्शन करा कऽ जिल्लामे जीत लैत छलथि तहिना करीब-करीब भण्डारी जीकेँ सेहो राजनीति अछि। मुदा बेचारा जनता सभ दिन ठकाइते रहैत अछि। कहियो मल्लकेँ नामपर कहियो भण्डारीकेँ नाम पर, कहियो झा, ढुङ्गाना, यादव, साह, निधीकेँ नामपर ठगाइत रहत।

एहन ठगयबला नेतासभ सँ सचेत रहय परत। कि पोखराकेँ मात्र क्षेत्रीय एयर पोर्ट बनाबयकेँ भाग्यमे लिखल छैक ? एतयकेँ जनता सभ दिन खाली भोटे देत। ई किन्नहुँ नहि भऽ सकैत अछि।

आब विकास विरोधी नेतासभकेँ मुँह लाल आ कारी करहे परत। विकास नहि तऽ भोट नहि। विकास नहि तऽ सम्मान नहि। ई संकल्प लेबहि पड़त। हमरा बुझाइय ई सन्देश भण्डारीजीकेँ कम्तीमे बुझा गेल हेतन्हि।

हासंघक चुनाव आ सुनधराक आनन्द

नेपाल पत्रकार महासंघक राष्ट्रिय अधिवेशन २०६८ वैशाख २०/२१ गते सम्पन्न भऽ गेल अछि। केन्द्रीय पार्षदक रुपमे हमहुँ सहभागि भेल छलहुँ। पार्षदक रुपमे हमर ई पहिल सहभागिता छल से नहि मुदा जे आनन्द एहिबेर लागल से कहियो नहि लागल छल ।

एहिबेर अहूँ दुआरे जे हमरा सभक काठमाण्डू यात्राक नेतृत्व मित्र रामअशिष यादव कएने छलथि । समान्यतया जिल्ला कार्य समिति पार्षदसभकेँ अधिवेशनमे लऽ जाइत अछि। ई परम्पराक निरन्तरता अहूँबेर रहल। आन बेर जे जेना हुए, एहिबेर पुरे कार्य समिति हमरासभकेँ लऽ गेल छल। बाटमे विभिन्न तरहक स्वागत भोजन सँ लऽ कऽ अन्य चीज तक कार्यसमितिए कएलक। जखन काठमाण्डू पहुँचलहुँ तऽ नाम चलल पत्रकार सभ दासो-दास रहथि। हमसभ कनि अबेर सँ पहुँचलाक कारण सभ हमरेसभक प्रतिक्षा कऽ रहल रहथि। ओतय पहुँचलाक बाद कतय रहब सँ लऽ कऽ भोजन कि करब तकमे सभ सिनियर पत्रकारसभ सहयोग कएलन्हि। किछु गोटे एहनो रहथि जिनका सँ आन-दिन भेटबाक लेल पूर्व समय लेबय पड़ैत अछि। स्थिति एहन रहै जे हमर सभक सम्पूर्ण बायोग्राफी हुनका सभकेँ कन्ठस्थ छल। ओसभ बातो करैत तऽ हम सभ खुशी रही ताहिकेँ लेल खुब ख्याल करथि। ओ सभ हमरा सभकेँ नहि हमरा भोटक ख्याल कऽ रहल छला से हमहूँ सभ बुझैत छलहुँ आ ओहो सभ बुझि रहल छलथि। सुनधराक होटल एरियामे ओहुना राति होएबे नहि करैत अछि सुनने रही । सएह ओतय पहुँचलाक बाद लागल।

पत्रकार महासंघक चुनाव भेलाक कारण आ सभ पत्रकारकेँ ओहि एरियामे रखलाक कारण ओहि एरियामे विशेषे चहल-पहल होयब स्वभाविक छल। भोजन कएलाकबाद किछु गोटे, दाइ दोहरी हेर्न जाउँ (गीत नाद देखय चलु) कहय बला सभ सेहो भेटलथि। जे गोटे जाय बला छलथि ओ गेबो कएलथि। मुदा हमसभ आराम चाहैत छलहुँ तएँ सुतय चलि गेलहुँ। मुदा लोक मानय कहाँ, भरि राति आबाजाही बनल रहल। सभ हमरा सभकेँ पोल्हाबयमे लागल छल। किछु गोटे मुँह सँ पोलहा रहल छलथि तऽ किछु गोटे भोट देबयकेँ प्रयासमे एहनो उम्मेदवारसभ एला जे दारुकेँ बोतल लऽ कऽ आएल छलथि।

काश हमहूँ सभ दारु पिबैत रहितहुँ तऽ कतेक पिबतहुँ-कतेक पिबतहुँ। मुदा हमर होटल पार्टनरकेँ सेहो इहे हाल छल। रामअशिष जी ओहो नहि पिबैत छथि। दिनमे टेक्सीपर काठमाण्डू घुमाबयबला सभ सेहो भेटला। दोहरी डिस्को फाइवस्टारक भोजनक किछु गोटे मित्रसभ लाभ उठौलन्हि। ओहो सभ अपन-अपन खेत बेच कऽ ओना कऽ रहल छलथि से नहि। हुनको सभकेँ किओ आओर फण्डीङ्ग कएने छल। व्यापारी, तस्कर, गलत कमायबला नेतासभ दाता रहथि। काठमाण्डूमे लगैत छल एहिना भोट होइत रहितैक आ हमसभ ऐश करैत रहितहुँ मुदा आब जनकपुर चलि आएल छी। अपना आपकेँ समीक्षा करैत छी तऽ काठमाण्डूमे बितायल आनन्दक प्रश्न कऽ रहल अछि की पत्रकारक इहे काज अछि? किए एतेक महँग भऽरहल अछि पत्रकारक चुनाव? सभ्य समाजक कल्पना करयबला कलमजीविसभ स्वंम विकृति बढाबयमे तऽ नहि लागल अछि।

एकर उतर खोजय परत। एक दू दिनक ऐश अरामकलेल पत्रकार संस्था बदनाम तऽ नहि भऽ रहल अछि।

जनकपुरमे गर्मी नहि थाले(थाल

विद्यापति चौक सँ बस स्टेण्ड जायबला पीच सड़कपर २०६८ जेठ महिनामे गिट्टी रखाएल अछि। करीब एक हप्ता ओ सड़कपर पानि लगलाक बाद गिट्टी रखाएल अछि। गिट्टीकें ढेर जकाँ राखि देल गेल अछि। जाहि सँ कहुना कऽ लोककें सड़क पार करयमे सुविधा भऽ जाइक। समतल कएल गेल तऽ सयो ट्रीपर गिट्टी लागि जाएत नगरपालिका आ सड़कक कर्मचारीकें बुझल छैक। तएँ बहुत चलाकी सँ गिट्टी राखि देल गेल अछि।

सामान्य वर्षा शुरु भेलाक बाद लोक चलब फिरब छोड़ि देने अछि। मोर्निङ्ग वाकमे आइ-काल्हि लोक भेटैत नहि अछि। मोर्निङ्ग वाककें स्थानपर घरमे कपाल भातीकें सहारा लोक लेबय लागल अछि। साइकिल, मोटरसाइकिल लऽ कऽ बजार एक बेर गेल कि घर अबिते ओ सवारी सभमे पानि पटावय पड़ैत अछि अर्थात साफ करय पड़ैत छैक।

एहन समस्या कोनो एहि वर्ष भेल अछि से नहि वर्षो सँ लोककें एहनेमे जीवयकें आदत भऽ गेल अछि। तएँ किओ प्रतिकार नहि करैत अछि। प्रतिकारोकें शैली बड़ गजब अछि। नगरपालिकाक कर्मचारीसभकें किछु नहि कहत। सड़कमे चलयबला गाड़ीबला आ पत्रकार सभकें उपराग देत। हमरा अपने कतेक गोटे कहि चुकलथि जे अहाँसभ समाचारे नहि लिखैत छियैक तएँ नगरपालिकाकें एहन स्थिति अछि। आब हमसभ कतेक गोटेकें कहियन्हि नगरपालिकाक अधिकारीसभ लाज पचा लेने छथि। कतबो लिखबैक हुनका सभकें फरकें नहि पैरत छन्हि। हुनकर सभक उपरका निकाय सभ सेहो सुतल अछि। राजनीतिक दलक प्रतिनिधिकें तऽ ओसभ किनिए लेने छथि। राजनीतिक दलक प्रतिनिधि जनता आ अपन पार्टीक नहि नगरपालिकाक प्रमुख राजकिशोर साह, इन्जिनियर विरेन्द्र यादव, लेखा अधिकृत जयचन्द्र मिश्रक भाषा बजैत छथि।

एहिबेर सड़क पर थाल देखलियै तऽ हमरा लागल छल कोनो नहि कोनो आन्दोलन हेबे करतैक। आन्दोलन भेबो कएल। मुदा नगरक समस्याकें लऽ कऽ नहि, भारतक योग गुरु बाबा रामदेवद्वारा भारतमे भ्रष्टाचार समाप्त करबाक लेल संकल्प लऽ कएने आमरण अनसनकें समर्थनमे। सञ्जय कुमार साहक नेतृत्वमे गठन भेल मधेश क्रान्ति फोरमक कार्यकर्तासभ जनक चौक पर बैसि रहिले अनसन कएलन्हि।

कहियो-कहियो बुझाइत रहैत अछि राजनीतिक दल असफल भऽ गेल तऽ एहिना जनकपुर रहतैक ? नागरिक समाज, पेशागत संघ संगठनकें कोनो काज नहि छैक ? अपन-अपन पेशागत सुरक्षा मात्र आवश्यक छैक ? जनकपुरमे सभ दिन रातिए रहतैक ? भोर होवयकें कोनो सम्भावना जिवित छैक ?

एहि हप्ता काठमाण्डू गेल छलहुँ कतेको परिचित वा नयाँ व्यक्ति सँ परिचय भेल जनकपुरकें छी कहिते पुछि बैसला, 'जनकपुरमे बहुत गर्मी हेतैक ?'

हम मुस्किया कऽ हँ मे हँ मिला देत छलहुँ। मन होइत छल कहितहुँ गर्मी जे होइ ओहिमे उपरो निचा भऽ सकैत अछि मुदा थालमे कोनो नीचा उपर नहि हैत जाहि सड़क पर जाउ थालपानि स्वागतक लेल ठाढ रहैत अछि।

देशकें कतेको शहर कतय सँ कतय चलि गेल मुदा जनकपुर दिन सँ दिन समाप्त भऽ रहल अछि। जनकपुरक बाद बनल शहर इटहरी, बुटवलमे जाँ कऽ लोक देखि सकैत अछि ओ शहर कोना हँसि रहल अछि। ओ शहर बनाबयकें लेल जनता पैसा नहि देने अछि। नगरपालिका सही काज कऽ रहल अछि कि नहि तेकर दबाव मात्र बनौने अछि।

छोटका बडकामे दुःखोकें अन्तर होइत छैक !

दुःख तऽ दुःखे होइत छैक बडका पदवला लोक होइक वा छोटका लोक ! दुःख मे तऽ अन्तर नहि होइत हेतैक। हमरा अहिना लगैत छल। मुदा २०६८ जेठ महिनामे भेल एक घटनामे बडका आ छोटकामे दुखक अन्तर होइत छैक से सोचयकें लेल हमरा मजबुर कऽ देलक।

राष्ट्रपति डा. रामवरण यादवकें माय(सतवा माए) सिकवा देवी यादवकें निधन भेल छला। राष्ट्रपति यादव अपन सम्पूर्ण धियापुताकें लऽ कऽ धनुषाक सपही पहुँचल छला। चितामे परल मायकें देखलाकवाद राष्ट्रपति जीकें नोर सँ पूरे कमलाभ्फारी नदी (सपही लगक नदी) भरि जायत ओतय पहुँचल सभ गोटे कल्पना कएने छल। सभ पत्रकार ओ क्षण लेवयकें लेल पूरे प्रयासरत छल। मुदा एकटा मुस्कान लेने राष्ट्रपति जी एला चिताकें परिक्रमा कएलन्हि किछु सञ्चारकर्मी संग राजनीतिक वातचित कएलन्हि फेर फिर्ता काठमाण्डू चलि गेला। हुनका संगे हुनक पुत्र, पुत्री, भतिजा सभ सेहो आएल छल आ चलि गेल।

सञ्चारकर्मी संग वातचित करैत ओ कनिको नहि कहलन्हि जे, मायकें मृत्यु सँ हम वहुत दुःखी छी।

जेना कोनो पुल वा सडककें शिलान्यास कऽ कऽ जा रहल हो तहिना जनताकें टाटा करैत ओ काठमाण्डू चलि गेला। पत्रकार सभ जे चकित छल से तऽ छलाहे। राष्ट्रपतिक मायकें अन्तिम संस्कारमे सहभागि होवयकें लेल कमलाभ्फारी पहुँचल सयो व्यक्ति चकित छल। कतेको लोककें ई कहैत देखलगेल जेकर माय छल जेकर दाइ छल से तऽ अन्तिम संस्कारधरि रहवे नहि कएल तऽ हम किया रहूँ ? अन्तिम संस्कार पूरा होवय सँ पहिने आधा सँ वेसी व्यक्ति ओहि स्थल सँ चलि गेल छल। जखन की ओ स्थल पर भोरे सँ भीड़ लागल छल।

सपही आवय सँ पूर्व राष्ट्रपति काठमाण्डू स्थित एक कार्यक्रममे सहभागी भेल छलथि।

जँ ओ नहियो दुखीत छलथि तैयो कम्तीमे दुःखीक नाटक करितथि। मुदा सेहो नहि देखल गेल। कि सतवा माय छलन्हि तएँ एहन रहैक कि अपनो माय रहितन्हि तऽ ओ अहिना करितथि। एखन सपही क्षेत्रमे एहि वातक वेश चर्चा परिचर्चा अछि। ओ जवाना सेहो नहि छैक जे वडका लोककें विषयमे गलत चर्चा परिचर्चा नहि करैक। ओहुँ जवानामे लोकक मुहँमे जावी नहि लगाओल जाइत छल। एकटा प्रश्नक उत्तर अवश्य वडका लोककें देवय परतैक जे वडका वनयकें लेल पदे वडका होइत छैक वा व्यवहार सेहो देखावय परैत छैक ?

कि आवयवला पीढीकें इहे सन्देश देल जेतैक। वडका पदपर पहुँचला सँ लोक लोहाकें तऽ पक्के नहि होइत हेतैक। दुःख पीडा सम्वेदना अवश्य होइत हेतैक फेर इहो नहि जे डाक्टर यादवक आँखि सँ नोर नहि खसैत छन्हि। हमरा स्मरण अवैत अछि राष्ट्रपति होवय सँ पहिने ओ धनुषा निर्वाचन क्षेत्र नम्बर ५ सँ चुनाव लडल छलथि। मतगणनामे काँग्रेसक सभ नेता आगा छल ओ पाछु रहथि हम हुनकर निवास पर पहुँचल छलहुँ तखने एकगोटे वाजल रहथि, 'डाक्टर साहेव हारि जएता' ई सुनिते हुनक आँखि सँ भटाभट नोर खसय लागल। ओ किछु नहि वजने अपन रुममे चलि गेला। देश गणतन्त्र भेलाक वाद आव एहनो अवस्था नहि रहलैक जे राजा मरिते युवराजकें गद्दीपर वैसा कऽ खुशी मनाओल जाइत छैक। जखन जनताकें वेटा देशक सर्वोच्च पदपर पहुँचल अछि तऽ ओकरा जनतेकें वेटा जकाँ काज करय परतैक। जनतेकें वेटा जकाँ सम्वेदना राखय परतैक। नहि तऽ पहिलका राजा आ एखनकें राष्ट्रपतिमे कि अन्तर भऽ सकैत छैक ?

ठीके वीरेन्द्र जी अहा सफल छी

मोडेल क्याम्पसक वार्षिकोत्सव समारोहमे २०६८ असार १८ गते सहभागि भेल छलहुँ। विद्यार्थी, शिक्षक, अतिथिसभ उत्साहित छला। मुदा मोडेलक संस्थापक वीरेन्द्र साहकें एतेक खुशी हम पहिलवेर देखने छलहुँ। 'नेपाल' म्यागजिनक सर्वेक्षणमे देशक २० टा टेन प्लस टू मे मोडेल पडलाक एक हप्ता नहि वितैत ई वार्षिकोत्सव भेल छल

। कतेक खुशी रहथि एकर अनुमान अहुँ सँ लागाओल जा सकैत अछि। ओ क्याम्पसकेँ पाँच तल्लाक भवन बनावयकेँ घोषणा कएलन्हि। ओ इहो कहलन्हि, 'हमर सपना अछि मोडेल क्याम्पसकेँ विश्वविद्यालय बनावयकेँ।'

हम हुनका जतेक चिन्हैत छियैन्हि एहि हिसाब सँ ओ किछु वर्षक बाद विश्वविद्यालय नहि बना लैथि एहिपर अविश्वास नहि कएल जाए। ओ पारसमणि छथि जे पाथरोकेँ छुता तऽ सोन भऽ सकैत अछि तखन तऽ ई क्याम्पसे छुने छथि।

हमरा वीरेन्द्र साह जी सँ परिचय आइ भेल से नहि क्याम्पस खुजला किछुए दिनक बाद भेल छल। हम हुनकापर कोनो उपकार नहि कएने छी। मुदा कि जाइन अपन सभ खुशीमे ओ हमरा सहभागि होवएकेँ अवसर दैत छथि। हमसभ मिथिला डटकममे जनकपुरक सफल व्यक्तिकेँ सिरिज निकालने छलहुँ। एहिमे ओहो पड़ल रहथि। जीवनमे अधिकांश व्यक्ति सफल होइत अछि, सभकेँ सफलताक प्रभाव समाजपर नहि पड़ैत अछि। जकर पड़ल छैक वएह सफल केँ हकदार होइत छथि आ हमसभ ओहने व्यक्तिकेँ रखने छलहुँ।

जनकपुरक शिक्षा क्षेत्रक सफल व्यवसायीमे गोविन्दचन्द्र बाबू, शिवनारायण झा, डा. मिथिलेश कुमार, चन्द्र देवान, डा. रामस्वार्थ राय सहितक बहुतो छथि। मुदा वीरेन्द्र जी-वीरेन्द्र जी छथि।

गल्तीयो स्वीकारयमे हुनका समय नहि लगैत अछि। किओ हुनका प्रणाम कऽ दैत छन्हि ओहि सँ पहिनही ओ प्रणाम करयकेँ चेष्टा करैत छथि। ओ खुल्ला रुपमे गल्ती स्वीकार करैत कहैत छथि, 'पहिने क्याम्पसकेँ भवन बनावय चाही तखन अपन, आब बच्चो पढि लेलक अछि आ घरो बनि गेल, कनिक गल्ती भेल मुदा आब सभ काज क्याम्पसेकेँ लेल करब।'

अपन थिंग ट्यांककेँ जे समान ओ दैत छथि बिरले दैत हैत। बातचितक क्रममे अपन क्याम्पसक किछु व्यक्तिकेँ अनावश्यक बराई करैत रहैत छथि तऽ कहियो काल हुनकापर तामसो होइत अछि मुदा जखन हुनकर सफलता देखैत छी तऽ ओ सही छथि। टिममे विश्वास करैत छथि। तएँ सफल छथि लगैत अछि। हमरा लगैत अछि आब मोडेलमे भर्ना होवयकेँ लेल औपचारिकताक लेल मात्र इन्ट्रान्स परीक्षा नहि गुणस्तरीय विद्यार्थीकेँ इन्ट्रान्सकेँ व्यवस्था करय पड़त। देशभरिकेँ मस्तिष्ककेँ एहिमे सहभागि करावय पड़त। क्याम्पसकेँ सिनेमा हल नहि एहिमे सँ जे उत्तिर्ण हैत ओ सभ ठाम सफल हैत एकर ग्यारेन्टीक व्यवस्था करय पड़त।

हम अपन काजमे व्यस्ते रहैत छी मुदा जखन वीरेन्द्र साहकेँ देखैत छियैन्हि तऽ एहि बातेकेँ बराबर अपसोच रहैत अछि। वीरेन्द्र सरकेँ नजदिक रहि कऽ काज किएक नहि कऽ सकलहुँ। एकबेर साइतो जुड़ल छल। ओ पत्रिका निकालयकेँ सोच बनौलन्हि। हमरेसंग बातचित कएलन्हि। क्याम्पसमे पत्रिकाकेँ काजक लेल हम बैसहो लागल रही मुदा कि भेलैक ओ काज आगा नहि बढि सकल।

खैर एकटा बात सत्य अछि वीरेन्द्र जी केँ जवाब नहि अछि। शिक्षा क्षेत्रमे देखल विकृतिकेँ ओ अवश्य चिरता। जनकपुरमे पक्के एकटा शिक्षाकेँ माहौल बनत। लोक अपन धियापुताकेँ काठमाण्डू, दिल्ली, बैंग्लौर नहि जनकपुरमे सेहो पढयकेँ लेल रिश्क लेत। जनकपुरमे सेहो निक क्याम्पस छैक, एतयकेँ शिक्षक व्यापारी नहि, निक शिक्षा नीक संस्कार देवयबला अछि। ई सन्देश सिर्जना हैत।

कहियो ज्ञान प्राप्तिक लेल लोक मिथिला अबैत छल। मिथिला तऽ अछिए मुदा स्थान परिर्वतन भऽ गेल अछि। फेर सँ धार मोड़य पड़त।

एहिठाम चोरी कऽकऽ पास करयकेँ लेल नहि ज्ञान प्राप्ति करयकेँ लेल लोक आओत। एहिकेँ लेल वीरेन्द्र जीकेँ नेतृत्वदायी भूमिका खेलहे पड़तन्हि। ओहो परम्परागत वादी नहि छथि। हुनकेँ शब्द सँ ई लेखकेँ अन्त करय चाहैत छी- केँ कहैत अछि गरीब आ अनपढक बच्चा सफल नहि होइत अछि, हम एकर उदाहरण छी।

हम गरीब छलहुँ, हमर बाबु पढल नहि छला मुदा देशक एकटा प्रमुख क्याम्पसक संस्थापक छी।

बैकुण्ठ जी, नीक लोक नहि बनल जा सकैया

रत्न सागर स्थानक छोटे महन्थ बैकुण्ठ दास २०६८ असारमे जिल्ला अदालत धनुषाक एक न्यायधिशक निर्णय सँ भलेही साधारण तारेखमे रिहा भऽ गेल होइथ मुदा समाज एखनो हुनका बहुतो केशमे अपराधी मानैत अछि। जाहि व्यक्तिकेँ देखि कऽ मोनमे श्रद्धा जगबाक चाही ओ व्यक्तिकेँ देखि कऽ लोककेँ डर लगैत अछि। कहियो रत्न सागर मन्दिर दर्शनार्थीक पहिल पसिनबला मन्दिर होइत छल मुदा आब एक-दुटा लोक मात्र ओतय पहुँचैत अछि। फेर ओ मन्दिर भितर किछु छैक कि नहि ? चारुकात सँ पहरा लागल रहैत अछि।

हमरा जहिया बैकुण्ठ जी सँ परिचय भेल छल बहुत प्रसन्न भेल रही। ओ पहिले परिचयमे कहलथि, 'पाकिस्तान सँ डाक्टरी पढने छी।' डाक्टर भऽ कऽ बाबाजीबला काज कनीकाल लेल उटपटांग अवश्य लागल छल। मुदा पढल लिखल छैक कम्तिमे एहि बातक लेल प्रसन्न भेलहुँ।

आँखा अस्पताल लग जनकपुरक विषयमे एकटा विदेशीकेँ जाहि रुपमे ओ जानकारी दऽ रहल छलाह सुनि कऽ दंग भऽ गेलहुँ। हमरो एतय एहन-एहन बाबाजी छथि।

एकर बाद हुनका सँ बेर-बेर भेट होयत छल। हमरा घरमे पूजापाठ कहियो भेल रत्नसागरे स्थान सँ बेलपत्र आ फुल अनैत छलहुँ। ओ बहुतो दिन अपने सँ तोरि कऽ देला। व्यक्तिगत रुपमे ओ हमरा बहुत पसिन करैत छलाह। एभिन्यूजमे हमर कएटा समाचार देखलाक बाद अपन कमेन्टो कहने रहथि। हुनका हम एतेक दिन जे चिन्हलहुँ अछि ताहि सँ ओ वाक पटुताकेँ बहुत तेज छथि सहजहि कहि सकैत छी। एकबेर समान्यतया केकरो प्रभावित कऽ सकैत छथि। अपन जीवनकेँ जाहि दिसामे ढालता ओहिमे ओ सफल भऽसकता। हुनका जनकपुरक सर्वशक्तिमान होवयकेँ लालसा छन्हि। ई हुनका व्यक्तित्वकेँ अवनतिक कारक बनि रहल अछि जे हमरा लगैत अछि। मन्दिरमे पैसाकेँ कनेको अभाव नहि अछि। मुदा खेतपर खेत बिका रहल अछि। खेत किया बिका रहल अछि ? नहि ओ बतावयकेँ अवस्थामे छथि आ नहि मन्दिर प्रशासक। फेर ओ अपन मन्दिरक जमीन बेचैत-बेचैत जमीनक दलाल भऽ गेल छथि कतेको मन्दिर जमीनक कारण बरबाद भेल अछि। फेर ओहन बरबाद करयमे किछु महन्थमे हुनको हाथ अबैत अछि।

पहिने हुनका सँ भेट होइत छल तऽ ओ मन्दिरकेँ एना सुधार करब ओना सुधार करब कहैत छलाह मुदा बादमे बाबाजीसभपर टिप्पणी करय लगला। हुनकर दिनचर्या पुलिसमे केकरो पक्राउ, केकरो छोड़ाउमे बितय लागल अछि।

हुनका लग बहुतो रुपैया अछि ओ जे चाहता कऽ सकैत छथि। न्यायालय केँ सभ चीजकेँ प्रभावित कऽ सकैत छथि। पत्रकारकेँ अपन पक्षमे लिखावय कि, मिडिया हाउस खोलि सकैत छथि। मुदा समाज जे हुनका लऽ कऽ आर्दश सपना देखने छल ओहिमे बड़का धक्का लागत। हुनकर निवासमे दिनभरि भीड़ लगावयबला चटुकारसभ हरेक समय अनाप-सनाप करबाक लेल उकसेबे करत। कारण बैकुण्ठ जीकेँ व्यक्तित्व सँ हुनका सभकेँ कोनो लेना-देना नहि अछि। हुनकासभकेँ चाही बाबा किछु आओर जमीनकेँ बेचौथि, आओर दलाली करौथि, हमसभ ओहिठाम चटुकारितो करब आ ऐशो हैत। जनकपुरक बहुतो मन्दिर घर वा दोकानमे परिणत भऽ गेल। इहो भऽ जाएत। चटुकारसभकेँ कोनो लेनादेना नहि अछि।

मुदा एकबेर विचार करु, बाबा पूर्खा रत्न सागर वा एहन मन्दिर बनावयमे कतेक खर्च कएने हेता। आर्थिक मात्र नहि मानसिक कतेक कष्ट भेल हैत। कि रत्न सागर स्थानकेँ पर्यटकीय स्थल नहि बनाओल जा सकैत अछि ? मन्दिरकेँ उत्तरदिशामे रहल पोखरिकेँ सौन्दर्यीकरण नहि कएल जा सकैत अछि ? एना हैत तऽ एकटा विद्वान बाबा जी भेलाक फल प्राप्त हैत। एकटा डाक्टर बाबा बनलाक फल प्राप्त हैत।

सम्भवत: बैकुण्ठ जी विवाहो नहि कएने छथि। जे धियापुताकेँ बहुतो रुपैया छोड़ि कऽ जाइ एकर लोभ हेतन्हि। हुनका कृति करबाक चाही। ई लेख पढ़ि कऽ हुनका हँसी एतन्हि आ चटुकारसभकेँ ओहुँ सँ बेसी। मुदा कि जीवनकेँ इम्हर मोड़ल नहि जा सकैत अछि।

फलाँकेँ पीट, फलाँकेँ मार बला बात छोड़ि इम्हर ध्यान मात्र देला सँ देखथुन कतेक प्रसन्नता होइत छन्हि। एना कहलापर मन्दिरकेँ पहरा सेहो नहि देबय पड़तन्हि आ चटुकारसभ सेहो ओतय सँ ससरय लागत।

कृपया हास्यक पात्र नहि बनाउ

भाइ जितेन्द्र झा दिल्लीसँ आयल छल । हम निमिष, जितेन्द्र आ रोशन जनकपुरक पत्रकारिता, दिल्लीक पत्रकारिता आ टेलिभिजन च्यानल नेपाल वनक भविष्य पर मिथिला डट कमक कार्यालयमे बातचित करैत छलहुँ। तखने रोशनक मोबाइलमे एक पत्रकार मित्र फोन कऽ भानु चौक पर गोली चलल कहिकऽ जिज्ञासा केलनि।

हमरा सभक लेल बड्का समाचार छल। सहकर्मी रोशन झा समाचारक पुष्टिक लेल चारुकात टेलिफोन घुमावय लगलाह आ हम भानु चौक पर गेलहुँ । मुदा कतहुँ किछु नहि भेल छल।

फेरसँ हम अफिसमे आबि सहकर्मी सँग बातचित करिते छलहुँ कि हमर मोबाइलमे एकटा सशस्त्र समूहक फोन आयल जे जनकपुरनगर पालिका ४ क कटैया चौरीमे एक गोटेकेँ जनकारवाही कएल गेल अछि।

ककरा हत्या भेल तकर नाम पत्ता धरि नहि कहिकऽ सशस्त्र समूह मोबाइल काटि देलक। ई तऽ एकटा बड्का समाचार छल मुदा हत्या ककर भेल अछि तकर खोजीमे लागि गेलहुँ।

सहकर्मी घनश्याम मिश्र कटैया चौरी चलि गेलाह। एम्हर रोशन अस्पताल आ हम अफिससँ विभिन्न स्रोतक उपयोग करय लगलहुँ। एक बेर हम पुलिसमे फोन करी तऽ दोसर बेर पुलिस हमरा सभकेँ फोन कऽ कऽ पुछैत जे कोनो जानकारी प्राप्त भेल अछि।

इएह स्थिति जनकपुरक सभ रेडियो स्टेशन आ दैनिक पत्रिका सभक छल। कतेक रेडियो स्टेशनसभ समाचार खोजबाक लेल अपन समाचारदाताकेँ कटैया चौरी पठौने छल। ई खबर जनकपुरक लेल मात्र नहि काठमाण्डू धरि पहुँच गेल। काठमाण्डूक अधिकांश मिडियाक लेल सेहो उत्सुकताक विषय बनि गेल । हम कार्यरत एभि न्यूजसँ सेहो फोन पर फोन आबय लागल।

मधेशमे हत्या कोनो नव बात नहि छैक जे लोक एहिकेँ लेल बेहाल छल। मुदा संचार क्षेत्रमे जे प्रतिस्पर्धा आयल अछि से लोककेँ समाचार खोजबाक लेल मजबुर कऽ रहल छल। रेडियो मिथिलाकऽ प्रविधिक धीरेन्द्र यादव बेर-बेर पुछय आबय सर 'ब्रेकिङ न्यूज' कखन देबै।

मुदा जाधरि हत्याक पूर्ण रूपसँ पुष्टि नहि हैत ताधरि कोनो हालतमे रेडियोमे समाचार नहि देब आ नहिए पत्रिकामे समाचार देब से एहिमे हम दृढ छलहुँ। कारण जनकपुरक संचारकर्मीसभ सशस्त्र समूहक एहिसँ पहिने कतेक बेर धोका खा चुकल छल। आ ओही दिन इएह स्थिति छल।

हमरा स्मरण अबैत अछि ओ दिन जहिया नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी माओवादी भूमिगत छल । ओ सभ जतबे सूचना दैत छल ओकर बेर-बेर पुष्टि नहि करय पड़ैत छल। हँ ई सत्य छल ओहो सभ अपन रुचिक बात करैत छल आ एखनकेँ सशस्त्र समूह सेहो इएह रुचिक बात करैत अछि। मुदा पेशेवर अन्दाजमे आकाश जमिनक फरक अछि। अखन खाली सशस्त्र समूह मिडिया पर केन्द्रित अछि मुदा ओहि समय पचहत्तर प्रतिशत मात्र छल।

हम अखन माओवादी आ सशसत्र समूह बीच तुलना नहि करय चाहैत छी मुदा ई सत्य अछि जे अखनुक समयमे किओ सशस्त्र समूहक टेलिफोनक भर पर बात करब तऽ एहिसँ पूर्व जे जतेक प्रतिष्ठा छल से समाप्त भऽ जाएत।

हमरा कार्यालयमे सशस्त्र समूहक एकटा नेता आकाश त्यागि एक दिन टेलिफोन कऽ पुछने रहथि, 'हमरा सभक बातके अहाँ सभ किएक नहि विश्वास करैत छी ?' हमर एक मात्र जवाब छल, 'मित्र हम सभ अहिंसावादी छी, सहजहि हिंसा पर विश्वासे नहि होइत अछि आ अहुँमे बहुत धोखा खा लेने छी।'

ओ स्वयं स्वीकार केलथि जे कोनो 'मैकेनिजम' बनाबहे पड़त।

समाचारमे सभसँ बेसी विश्वासक महत्व होइत छैक मुदा पत्रकारकेँ चेक एण्ड ब्यालेन्स सेहो करबाक चाही से जनकपुरमे भेल किछु घटना सभ देखा रहल अछि। हमरा एक गोटेक शिक्षा बेर-बेर स्मरण अबैत रहैत अछि जे भारतक दिल्लीमे एकटा प्रशिक्षणमे गेल रही । ओतय वरिष्ठ पत्रकार केएम श्रीवास्तव हमरा सभकेँ प्रशिक्षणक क्रममे कहने रहैथि जे पत्रकारिता एहन पेशा होइत अछि जाहिमे चौबिसो घण्टा पत्रकारकेँ चंख रहय पड़ैत

अछि । कनिको 'मिस' ओकर कैरियर समाप्तिक कारक भऽ जा सकैत अछि।

ब्रेकिङ्ग न्यूज युगमे पत्रकारकेँ अओर चुनौति बढ़ा देने अछि।

हमरा इहो घटना स्मरण अबैत अछि जखन काठमाण्डूसँ दिल्ली जा रहल इन्डियन एयरलाइन्सक विमान अपहरण भऽ गेल छल तऽ जी न्यूजक समाचार बहुत चर्चा पौने छल। हम स्वयं १५ घण्टा तक जी न्यूज देखने रही । किछु लोक तऽ तीन चारि दिन लगातार टिभीमे सटल रहथि ।

मुदा ओहिमे एकटा समाचार आयल रहैक जे अफगानिस्तानक कन्धारमे यात्रीकेँ मुक्त कऽ देल गेलै जखन की से भेल नहि छल। तकर बाद जी न्यूजक सिधे ग्राफ घटि गेल। ओ च्यानलक बहुत बेइज्जति भेलैक। वृहस्पतिक रातिक घटनामे जनकपुरक किछु मिडियासभ सेहो हास्यक पात्र बनल । हम फेरसँ ओ सशस्त्र समूह सभकेँ आग्रह करबनि जे अपने लोकनि समाचार दिअ हम सभ सम्मानजनक स्थान देब मुदा हमरा सभकेँ हास्यक पात्र नहि बनाउ।

ई भेला पर मात्रे अपने सभक समाचारकेँ लोक गम्भीरतासँ बुझत ।

राष्ट्रपतिक चाहपान आ राजदूतक भोजन

'शनि दिन एकटा प्रोफेसर साहेब टेलिफोनकऽ पुछलन्हि, 'राजदूतक भोजनमे कखन जेबै.. राकेश सुदक कार्यक्रमक पत्र आएल अछि।'

हम कहलियन्हि, 'अहिमे तऽ समये पर जाय परत।'

प्रसंग बदलैत ओ कहलन्हि, 'राष्ट्रपतिक चाहपान समारोह जकाँ रहतै !'

हुनकर भाषामे व्यंग्य छुपल जकाँ लागल तथापि हम कहलियन्हि, 'नहि तेना तऽ कम्तीमे नहि रहतै।'

प्रोफेसर साहेबसँग बातचित समाप्त भेलाक बादो बहुत काल धरि हमरा मानसपटल पर राष्ट्रपति डा. रामवरण यादवक चाहपान घुमैत रहल। राष्ट्रपति भेलाक बाद डा. यादव पहिल बेर जनकपुर आयल रहथि आ ओहि क्रममे ओ चाहपान समारोहक आयोजना कएने रहथि।

आयोजना अपनामे कोनो खराब बात नहि छलैक मुदा ओ चाहपान करबाक लेल जनकपुर चुरोट कारखानाक कभर्ड हलक गेट टुटल, नास्ता लुटल गेल, राष्ट्रपतिक बाट निर्धारण नहि कएलाक कारण हुनक पैरमे कादो लागल, अतिथिकेँ घण्टो प्रचण्ड रौदमे ठाढ होबय पडल छल।

एतेक मात्र नहि पचहत्तर प्रतिशत अतिथिकेँ बिना चाहपान कएने घर घुरय पडलन्हि। डा. साहेबक व्यक्तिगत रुपसँ बड सम्मान करैत छियन्हि तएँ हुनकर ई आयोजना पर हमरा बड तामस भेल छल। जखन कार्यक्रम स्थलसँ जनकपुर चुरोट कारखानाक गेष्ट हाउसमे ओ पहुँचलाह तऽ एहन स्थिति हेतैक ई अपनेकेँ नहि बुझल छल से तऽ नहि छलैक तखन एहन आयोजना किया केलियै ? हम तमसाइये कऽ हुनका कहने छलहुँ ।

राष्ट्रपति डा. यादव, 'तौं सभ बड जल्दि तमसा जाइत छह' कहैत ओ गेष्ट हाउसमे चलि गेला।'

हुनका स्वयं नहि बुझारहल छलैन्हि की उत्तर दी । लोक किए बिना चाहपान कएने चलि गेलाह ?

दोबारा राष्ट्रपति यादव जनकपुर आएल छलाह तऽ चाहपान की फलाँ केँ बजाउ, चिलनाकेँ बजाउ तकर चर्चो नहि केलन्हि। हुनका चाहपान बहुत चीज सिखा देने छलन्हि। सम्भवत: जनकपुरमे एहन गल्ती दोबारा नहि करता।

एहन कतबो चाहपान आ भिआईपी भोज स्मरण अबैत अछि जे एक बेर भेलाक बाद आयोजक पुन: आयोजना कऽ गल्ती नहि करैत छथि। राजर्षि जनक विश्वविद्यालयक स्थापनाक लऽ कऽ जनकपुरक मत्स्य पालनक सभाकक्षमे एकटा कार्यक्रम भेल छलैक । कार्यक्रम समाप्त होइते अतिथि सभ इएह ले वएह ले भोजनक लेल लानि लागि गेलाह। तात्कालीन वाणिज्य मन्त्री रामविलास यादवक सेहो भोजन कऽ कऽ जल्दि गाम जेबाक छलन्हि तएँ ओहो जल्दीसँ भोजन करयके पक्षमे छलथि हुनका स्थान भेट नहि रहल छलन्हि ओ अतिथि सभ पर अत्यन्त क्रोधित भऽ गेल रहथि। बहुत मिहिनेतकेँ बाद हुनका शान्त कायल गेल छलन्हि।

किछु महिना पूर्व एकटा केन्द्रीय नेताक सम्मानमे जनकपुरमे भोज भेल छल। भोज शुरु भेलाक किछुए देरमे एकटा नेता पर दारुक नशा सवार भेलनि आ ओ अपने पार्टीक नेतासभ पर अनाप-सनाप बाजय लगला। ओ नेता एतेक आगा चलि गेल छलथि जे भोर भने दुआरे-दुआरे माफी माग्य पडलन्हि आ रातिक भोज बरबाद भऽ गेल छल। ओहि राति बहुतो गोटे बाजल रहथि, थुत एहन भोजमे नहि आयब।

मुदा मैथिल जीव ! भोजकेँ नामेसँ जी पर पानि आबय लगैत अछि । तएँ ओ कोना भोज छोडताह, तकरबादो दर्जनो भोज भेल आ लोक सभ अबैत गेलाह आ अपमानित होबाक क्रम जारी रहल।

हम एकटा आओर भोजक चर्चा करब गैर आवासीय नेपाली सभक जनकपुरमे भेल सम्मेलनक। सम्मेलनक भोजन जनकपुरवासीकेँ बेर-बेर स्मरण रहत । मानकी होटलमे तीन सय गोटेकेँ आयोजक अर्डर देने छल आ निमन्त्रण पाँच सयसँ बेसीकेँ।

संयोगसँ ओ भोजमे हमहुँ पहुँचल रही । अतिथि खाए लेल मँगैया आ होटलक कर्मचारी सभ कानि रहल। अन्तमे होटलवलाक शुक्रमानी जे कहुना तहुना लोकक इज्जत भरमा रखलक।

हमरा एतय भोजकेँ चर्चा करबाक ई तात्पर्य नहि छल जे सभकेँ देखार करी। मात्र एतबेँ कहबाक अछि जे अपनेके जतबे आँट अछि ओतबेकेँ बजाबी नहि तऽ अतिथियोकेँ बेइज्जत आ आयोजकके तऽ होइते अछि।

राष्ट्रपति डा. रामवरण यादवक चाहपान समारोहक निमन्त्रण चारुगम्मा देल गेल छल । जे भेटय ओ कहथि जे राष्ट्रपति डा. रामवरण यादवक चाहपानमे जेबाक अछि। एकटा सरलाही कागजमे निमन्त्रण बाँटयकेँ छलैक तऽ स्थानीय प्रशासन अलगे बँटलक तऽ राष्ट्रपतिक सर कुटुम्ब सभ अलगे। हमरा सभक रेडियो मिथिलामे ६ गोटेक

नामसँ निमन्त्रण आयल छल। मुदा चाहपान देबय कालमे तऽ कोनो प्रशासनिक अधिकारी चाहपान करावयमे रहल आ' ने राष्ट्रपतिक सरकुटुम्ब। राष्ट्रपति ओ समारोहमे केना एलाह आ की बजलाह ताहिक लेल लोकके टेलिभीजने देखय पड़ल।

पत्रकार मित्र रामअशीष यादवजीक बात बेर-बेर स्मरण अबैत अछि जे किनकर कार्यक्रम केहन हैत हम सभ निमन्त्रण पत्रेसँ बुझि जाइत छी। पत्रकार छी तएँ एहन कार्यक्रममे आओर अखैर कऽ जाए पड़ैत अछि जे ओतय कोनो लफड़ा नहि भऽ जाय। तएँ किछु ठाम खाए आ बहुत ठाम देखय लेल जाइत छी।

आब किछु गोटे कहय लागल छथि, प्रतिष्ठित व्यक्ति वा राजनीतिक भोजक निमन्त्रण अबैत अछि तऽ घरमे चिप्पी लगाइए लैत छी।

मुदा एकटा भोज एहनो देखयमे आएल जे सिस्टम कथीकेँ कहैत छैक। भारतीय राजदूत राकेश सुद सँगक भोजनक निमन्त्रण पहुँचल कि नहि? पहुँच गेलाक बादो राजदूतावाससँ टेलिफोन आएल छल। सीमित व्यक्तिकेँ किएक ने राजदूत सँगेक भोजन पर राजदूतावास बजौने हुए। केना लोकके बजाओल जाइत छैक ई एकटा शिक्षा दऽ सकैत अछि।

भारत केना समृद्ध एवं शक्तिशाली भऽ रहल छैक तेकर झलक सेहो छल। परोपट्टाक निमन्त्रण दऽ नाम हँसी करावय बला सभ एहिसँ किछु सिख सकैत छथि। राजदूतक भोजमे हमहुँ मोन सँ खएलहुँ।

भोजन टेबुल पर वार्ता

सौख बहुत अजिब होइत छैक । हमर एक मित्र छथि । ओ प्लेनक कारण सात दिन काठमाण्डू रुकलाह मुदा बस सँ जनकपुर नहि अयलाह । बच्चामे सुनने रही जे भारतक प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरु एतेक सौखिन रहथि जे हुनकर कपड़ाक धोआइ बेलायते होइत छल । नेहरुजीक सौखक विषयमे बहुत लम्बा-लम्बा कहानी अछि ।

मुदा हम एतय नेपाल सरकारक वार्ता टोलीक संयोजक एवं शान्ति तथा पुर्ननिर्माण मन्त्री जनार्दन शर्मा प्रभाकरक चर्च करैत छी । शनिदिन अर्थात २०६५ पुस २६ गते लागल जेना ओ भोजन करय लेल जनकपुर आयल रहथि ।

वार्ताक लेल जनकपुरमे कतेको बढ़िंया स्थल अछि । जेना नेपाल राष्ट्र बैंक, जनकपुर चुरोट कारखानाक गेष्ट हाउस, मत्स्य पालन आदि मुदा ओ स्थान छोड़ि सरकारी वार्ता टोली जनकपुरक सुविधा सम्पन्न होटल रामाकेँ वार्ताक लेल चुनाव केलथि । मन्त्री जी सभकेँ जनकपुरक भोजन करएकेँ रहनि तएँ ओही स्थानकेँ वार्ता स्थल बनाओल जाए ओहीक लेल केन्द्र सँ स्थानीय प्रशासनकेँ आदेश आएल छल ।

मन्त्रीजी सभ होटल रामामे पहुँचते शान्ति तथा पुर्ननिर्माण मन्त्रालयक कर्मचारी सभ होटलक कर्मचारी सभकेँ कहय लागल जे भोजनो शीघ्र भऽ जाए । हुनकर सभक व्यवहारमे लगैत छल जे ओ सभ भोजने करए लेल जनकपुर आएल होइ ।

कर्मचारी सभ इम्हर वार्ता टोलीक सदस्य सभकेँ भोजनक तयारीमे लागल छल तऽ सरकारी वार्ता टोलीक सदस्य एवं स्थानीय विकास मन्त्री रामचन्द्र झा दोसर कोनो सशस्त्र समूह सँ वार्ताक लेल बात कऽ रहल छलथि । हुनकर टेलिफोन करबाक अन्दाजसँ लागल ओ किन्को आदेश दऽ रहल छथि जे वार्ताकेँ लेल कोनो बढ़िंया होटलक चयन कयल जाए ।

वार्ता एक दिस सुरु भेल आ दोसर दिस होटलक कर्मचारी सभ विभिन्न अर्डर अनुसारक सामग्री सभ पहुँचाबए लागल । मन्त्रीजी सभक लेल बनल भोजनक 'सेन्ट' सँ बाहर भोरे सँ बैसल संचारकर्मी आ सुरक्षाकर्मी सभक ओतय बैसब 'हैरान' कऽ देने छल । आ हुनको सभकेँ भूख तेज कऽ देने छल ।

संयोग कही हमरा लेल नीके छल जे भोरे जनकपुर जेसिजक कार्यक्रममे सहभागी भेल छलहुँ । आ जलपान कएने रही । बहुतो पत्रकार दू घण्टा पूर्वे सँ ओतय सँ लाइभ समाचार पठारहल छलथि । हुनकर सभक स्थिति की भेल हैत सहजे अनुमान कयल जा सकैया ।

बीचमे सरकारी वार्ता टोलीक सदस्य एवं शिक्षा मन्त्री रेणु यादव बाहर निकलल रहथि तऽ ब्रेकिङ न्यूज लेबाक लेल पत्रकार सभ हुनक पछोर धऽ पुछि बैसलैन्हि, 'भितर की भऽ रहल छैक ?' होटलक भोजनक स्वाद कही हुनक मुहँ सँ खसि पड़लन्हि, 'भोजन' । सायद भोजन करु छलैक कि ओ ओहिना सुसुवा रहल होथि ।

'वार्ता' आ 'भोजन' सम्पन्न भेलाक बाद सरकारी अधिकारी सभ सञ्चारकर्मी सभकेँ भितर बजौलथि तऽ ओहिना आँठि-कुठि राखल छल । नजदिक सँ फोटो लेबाक क्रममे कतेको पत्रकारकेँ दूनु वार्ता टोलीक आँठि देहमे भीड़ल छल । ओतहि एक पत्रकार मित्र बाजल रहथि, 'इह ! हमरा तऽ मन्त्रीजीक आँठि थारीमे हात रखा गेल ।' खैर वार्ता तऽ एक दूटा समूह सँ पूरा होबय बला नहि अछि । एखनो दर्जनो सशस्त्र समूह लाइनमे अछि । आ एखन तऽ पहिल चरणक वार्ता भऽ रहल अछि ।

एखन कतेको चरण बाँकीए अछि तएँ विभिन्न अन्दाजक वार्ता नहि हैत तऽ की हैत ? किछु नयाँ नहि भेलैक तऽ की भेलैक । हँ तखन मन्त्री जी सभकेँ एतयकेँ लोक एहि बातक लेल तऽ साधुवाद अवश्य देतन्हि जे जनतान्त्रिक तराई मुक्ति मोर्चा राजन मुक्ति समूहकेँ वार्तामे आनि लेलथि । जनकपुर क्षेत्रक सुरक्षाकर्मीकेँ नाकमे दम कयने छल । जनताकेँ परेशानीकेँ बाते छोड़ू ।

कोनो चुनाव होइक वा कठिन परिस्थिति जनकपुरक होटलसभमे किए भीड़ लागि जाइत अछि आइ अनुभव भऽ रहल अछि। एकटा भोजनक रिर्पोटिङ्कें लेल नयाँ अनुभव सेहो अछि।

त की ब्राह्मणोकें शक्ति बुझौक ?

मैथिल ब्राह्मण समाजक राष्ट्रिय महाधिवेशन २०६८साल साउन महिनामे जनकपुरमे सम्पन्न भेल अछि। ओ सम्मेलनमे जाहि उत्साहकें संग ब्राह्मणसभ सहभागिता जनौलन्हि । एहि सँ ई सन्देश अवश्य आएल अछि जे ब्राह्मणसभकें नजर अन्दाज कएल जाएत तऽ आब इहो सभ चुप नहि रहत। इहो सभ चितवन जिल्लाक ब्राह्मण सभ जकाँ अलग राज्य मांगि सकैत अछि। एहि सम्मेलनमे बडका नेतामे यदुवंश झा बाहेक किओ नहि उपस्थिति रहथि । मुदा कोन रुप सँ सम्मेलन भऽरहल अछि एकर सभ खोज खबरि अवश्य लैथि ।

अन्य जातिक नेताकें सेहो रुचि देखल गेल । नेकपा एमालेक नेता गंगाराम यादव उद्घाटन समारोहमे देखल गेल छलाह । नेपाली काँग्रेसक पूर्वमहामन्त्री विमलेन्द्र निधि एहि कार्यक्रमक लेल शुभकामना सन्देश पठौने छलथि ।

संख्यागत रुपमे ब्राह्मणक संख्या बहुत कम नहि होइतो, किछु बर्ष सँ एकरा नजर अन्दाज करवाक नेपाल आ भारतमे जे खेल भेल, एकरे परिणति छैक एहन संस्थासभकें मजगुती सँ जन्म लेब । ब्राह्मणकें विषयमे मिथिलामे एकटा कहावत अछि ब्राह्मण, लौवा, कुकुर, हाथी, अपने जातिकें खाती अर्थात ई जातिसभकें दुश्मनकें ताकय नहि पडैत छैक, अपने जातिक लोक काफी अछि।

दू टा ब्राह्मण एक संगे देखलापर विहारमे झाझा स्थान वनिगेल अछि जातीय एकताक उदाहरण एकरा मानल जाइत अछि। किछु दिन पूर्वधरि ब्राह्मणसभबीच एकता बनब असम्भव मानल जाइत छल।

ब्राह्मणसभमे जातीय एकता जे बनल अछि बहुत दिन रहत से एखने कहब जल्दीवाजी हैत मुदा अन्य जाति जकाँ इहो शक्ति केन्द्र वनि रहल अछि। आब कोनो चुनाव हैत तऽ गोपाल सेवा समिति, तैलिक समाज, सुडी समाज, चित्रगुप्त सेवा समिति, मण्डल समाज जकाँ औपचारिक वा अनौपचारिक समर्थन जारी इहो कऽसकैत अछि।

एहि जातिक कोनो व्यक्तिकें अपमान भेल तऽ इहो संगठन आन्दोलनकें घोषणा कऽसकैत अछि। किछु व्यक्ति एहन जातीय संगठनसभकें अस्तित्व लम्बा समयधरि रहौक ताहीकें लेल उक्साबयबला गप्प-सप्प करब शुरु कऽदेने अछि।

मुदा की २१ अम शताब्दीमे जतय संसार गरीबी,अशिक्षा, स्वास्थ्यक लेल काज कऽरहल अछि हमसभ एहिसभमे लागल रहब ? की एकटा व्यक्ति कतबो भ्रष्ट छथि ओ फलाँ जातिक व्यक्ति छथि तएँ हुनका विरोध नहि कएल जाए ? हमरा जातिक छथि तएँ कतबो बुडबक होथि, हुनका हमसभ अबसर दैत रहूँ ?

जातीय आन्दोलनकें हवा देबयबला सभकें एक वेर चिन्तन अवश्य करय पडत । एहि सँ समाजकें की प्राप्त भऽरहल अछि ? जातीय संगठनसभ गरीबक लेल कोनो योजना लावि सकैत अछि ? अशिक्षा आ स्वास्थ्यक लेल कोनो काज कऽसकैत अछि ?

जँ शिक्षा आ स्वास्थ्यक लेल काज कऽसकल तऽ जातीय संगठनकें कनेक दिनक लेल अस्तित्व रहबाक चाही, नहि तऽ जातीय रोग एहन रुप सँ पसरल अछि एकर अस्तित्वमे रहब समाजके लेल बढिया नहि हएत । एकटा सरकारी कारखानामे सेहो जातीय संगठन निर्माण भऽगेल अछि। गैर कानुनीए गठन किया नहि भेल होउक यदि ओ जातिक संगठन कारखानाकें बचाबयकें लेल कोनो काज कएने रहति तऽ मानल जा सकैत अछि मुदा कारखाना तऽ वन्दक क्रममे पहुँच चुकल अछि।

ब्राह्मण समाजक भितर सेहो बहुत गरीबी अछि। एखनो महिलाक शिक्षा बढिया नहि ।

महिलाकें आय सँ जोडल नहि गेल अछि। दहेजक कारण कतेको महिलाकें मृत्यु होइत अछि , बहुतोकें अखनो स्वास्थ्यमे पहुँच नहि अछि। की मैथिल ब्राह्मण समाज एहिपर काज करत ? नहि करत तऽ नेतासभकें घुर्की देखाबय बाहेक एकरो कोनो शक्ति प्राप्त नहि भऽसकैत अछि। की एहिपर चिन्तन हेतैक ?

ओ तऽ मैथिली विटक समाचारदाता छलाह

२०६७ अगहन महिनामे फेसबुकमे एकटा समाचार पढलहुँ ओहिमे लिखल छल चुनचुन मिश्र नहि रहला । ई खबर पढ़िते शरीरमे करेन्ट जँका लागल, कनिकाल लेल तऽ बुझाएल हमरो शरीर सँ प्राण निकलि गेल ।

चुनचुन बाबुसँ बड़ घनिष्टता छल से नहि मुदा ओ मैथिलीकेँ बहुत बड़का आन्दोलनी भेलाक कारण हमरा हुनकाप्रति बहुत श्रद्धा छल । हम हुनकर नाम कोनो समाचारमे देखैत छलहुँ की पुरान समाचार किए नहि हुए, अपन रेडियो (रेडियो मिथिला) मे बजा दैत छलहुँ ।

कएँ दिन तऽ रेडियो मिथिलामे अपन नाम समाचारमे सुनलाक बाद ओ रहिका सँ टेलिफोन कऽकऽ धन्यवाद दैत छला । विहारक मात्र नहि भारतक कतेको स्थानपर मैथिली सँ जुड़ल कोनो कार्यक्रम होइत छल तऽ ओ अपने समाचार टिपा दैत छला । एक बेर तऽ एहन भेल रहैक जे नेपालक राजविराजमे विद्यापति पर्व समारोह भेल छल हमर रेडियो सँ ओ समाचार कोनो कारण बस नहि बाजल । ओ हमरा मोबाइलमे टेलिफोन कऽ उपराग देलन्हि । जखन की चुनचुन बाबु ओ कार्यक्रममे गेलो नहि छला । हमर रेडियोक लेल ओ अपन पैसा लगा कऽ काज करैत रहलथि ।

मधुवनी, बासोपट्टी, जयनगर, बेनीपट्टी, सहितक स्थानपर हमर सभक समाचारदाता भेलाक बादो मैथिली विटक समाचार प्राय: ओएह करैत छलथि । हमर सभक समाचारदाताकेँ बुझल छल जे मैथिलीक समाचार चुनचुने बाबु कइए दैत छथि तएँ ओ सभ सेहो चुनचुने बाबुकेँ लेल मैथिली समाचार छोड़ि दैत छलथि । हुनकासभकेँ बढ़िया जँका बुझल छलन्हि मैथिली विटक समाचारदाता तऽ चुनचुन बाबु छथि । हुनका समाचार पठाबएमे बहुत खर्च होइत छन्हि । हमरा लगैत छल कए दिन कहि दैत छलियन्हि कथिलाए एतेक सहयोग करैत छी । चुनचुन बाबु हमरा बेर-बेर कहथि, 'हम तोरा थोरहे सहयोग करैत छियह मिथिला मैथिलीकेँ लेल काज करैत छी ।' 'एहिमे जतेक सन्तुष्टि भेटैत अछि ओतेक दोसरमे नहि', ओ बेर-बेर कहैत छलथि । मिथिला मैथिलीक लेल निस्वार्थ भाव सँ काज करयवला चुनचुन बाबु बाहेक हम अपन जीवनमे दोसर किनको नहि देखने छी । चुनचुन बाबु सँ हमरा जीवनमे दू बेर मात्र प्रत्यक्ष भेट भेल छल ।

मुदा पहिल भेटमे जे हुनकाप्रति छाप बनल से एखनो कायमे अछि ।

नेपालक राष्ट्रिय अखबार स्पेसटाइम दैनिकमे काज करैत छलहुँ ओ पत्रिका सौराठ सभापर विशेष रिपोर्टिङ्क लेल सौराठ जाएकेँ लेल हमरा अढौने छल । ९ वर्ष पहिने ओतय पहुँचलहुँ तऽ सभ सँ पहिल भेट चुनचुन बाबु सँ भेल छल । चुनचुन बाबु संगे सौराठ सभापर बेस चर्चा परिचर्चा कएलहुँ फेर हुनकेँ संगे सौराठ गाम घुमलहुँ । पञ्जिकार विश्वमोहन मिश्रजी सहित विभिन्न विद्वानसभ संग बात कएलहुँ । ओहि दिन पानि पड़ल रहैक, कनी-कनी थालो भऽगेल रहैक एकर बावजुद ओ हमरा संगे घण्टो घुमलाह । हुनकर व्यवहार हमरा भितर तक प्रभावित कएलक । कनिके कालक भेट हमरासभकेँ बहुत निकटता आनि देलक ।

चुनचुन बाबुक मूल परिचय हमरा मैथिलीक अष्टम अनुसूचिक लेल भारतमे भेल आन्दोलनक समाचार सँ भेल । ताहि दिन जनकपुर क्षेत्रमे कान्तिपुर एफएमक 'हेल्लो मिथिला' विशेष रुपसँ सुनल जाइत छलैक ओहिमे धीरेन्द्र प्रेमर्षि प्रत्येक हप्ता बैजु बाबु आ चुनचुन बाबुक विशेष चर्चा करैत छलथि । बैजु बाबु मैथिलीक लेल ई कएला, चुनचुन बाबु ओ कएला समाचार सुनैत छलहुँ । एकरबाद पता चलल हमरा सौराठमे भेटल ओ महाशय एतेक बड़का लोक छथि । चुनचुन बाबु संगेक दोसर भेट जनकपुरमे एफ एम रेडियो खुजलाक बाद भेल छल । हम रेडियो मिथिलाक समाचार प्रमुख भेलहुँ तऽ ओ ओना बधाई देबय जनकपुर आएल रहथि मुदा ओ जे कहलथि ताहि सँ लागल बधाई कम मिथिला आ मैथिलीक लेल हमर की दायित्व अछि से बुझाबए बेसी । ओ जाइत-जाइत कहलथि, 'मिथिला आ मैथिलीक लेल प्रतिष्ठा नहि देखऽ लगीहऽ अपना बुते जे लागय से करीहऽ ।'

हम रेडियो मिथिलामे हुनकर किछु महत्वपूर्ण इन्टरभ्यू सेहो लेलहुँ ।

आई हमरासभ लग चुनचुन बाबु नहि छथि, कतेको गोटे बातचितक क्रममे कहलन्हि, 'चुनचुन बाबु गेला सँ अभिभावक बिहिन भऽगेलहुँ ।' मुदा हमरा तऽ ओ दोसरे बिहिन बनाकऽ चलि गेल छथि ।

हमरा तऽ चिन्ता लागल अछि रेडियो मिथिला आ मिथिला डटकमक मिथिला विटक समाचारदाता कें बनत । एतेक निस्वार्थ भाव दोसरमे कतए सँ भऽसकैत अछि । सहीमे चुनचुन बाबु अपनेक जोड़ा नहि अछि ।

कहियो लतामो(लतामो

जनकपुरक प्रमुख शाक्तिपीठ राजदेवीके कहियो लोक लताम चढेतहि ? यी बात हम कतहुँ बाजी तऽ लोक बताहे कहि सकैत अछि। कारण जतय महाअष्टमीक राति हजारो छागरके बलि चढैत अछि। लड्डु, पेरा, केरा , सेयउ, आ नारियल हजारो क्वीन्टल चढैत अछि ओहनमे लताम सन तुच्छ चीज लोक चढाबयके कोना हिम्मत करत? एहि सँ बहुत भक्तजनके प्रतिष्ठा पर परि सकैत अछि।

जनकपुरक मूल प्रसादी की ? चुरा वा चिनीया लड्डु। एकरा विषयमे बच्चा -बच्चाके बुझल छैक एहन प्रसादी बाबा धामके होइत अछि। लड्डु पेरा सेहो जनकपुरक नामी नहि होइत अछि। लड्डु पेराके गुणस्तर केहन छैक एहि बेरक बजार अनुगमन समिति सेहो पोल खोलि देलक अछि। सेयउ ,समतोला वा केराके जनकपुरमे उत्पादन तऽ नहि होइत अछि। तखन कि ओहिना काज चलावी कि किछु खोजियो करी ?

जेकरा उत्पादन सेहो जनकपुरमे होइक आ लोकके सस्ता सेहो भेटैक एकर खोजी करयमे कि हर्ज भऽ सकैत अछि ? फेर ई बड मोसकिल काज सेहो नहि छैक जे वर्षो रिसर्च करय परत। एकटा बात पर सहमति बनालिय आ ओकरा पेटेन्ट करा दियौक।

हम पौर साल (२०६७) राजदेवीक प्रसादी खपत पर एभि न्यूज टिभीक लेल रिपोटिङ्ग कएने छलहुँ। अनुसन्धानक क्रममे भेटल जे राजदेवीके मात्र दश ट्रक दशमीमे नारियल चढैत अछि। एकटा व्यापारक दृष्टि सँ देखल जाए तऽ जनकपुरक व्यापारीके कतेक फाइदा भेल हेतैक ? पक्के जनकपुरमे नारियल उत्पादन नहि होइत अछि। सीमावर्ती बिहारक स्थिति सेहो एहि सँ बढियाँ नहि अछि तखन भारतक कोनो दोसरे राज्य सँ आनल गेल हेतैक। उत्पादन मोल, गाडी भाडा, ओहिमे बहुते लागि जाइत हेतैक। यदि एहि ठामक कोनो उत्पादनक प्रसादी बनतैक तऽ कि हेतैक -कि हेतैक नहि लगैत अछि।

कृषि विशेषज्ञ रामचन्द्र यादव जे एखन जापानमे छथि हुनका सँग इन्टरनेटक चैट पर एहि बातके लऽकऽ बातचित भेल। हम लताम प्रसादीक रुपमे चढाबयके विषयमे बहस चलाबयके बात कएलहुँ तऽ ओ बहुत खुशी भेलथि। जे लतामके गाम घरमे मोजर नहि देल जाइत अछि एना भेला सँ इहो अमूल्य भऽ सकैत अछि। ओ रामदेब बाबाक सजिमन सँ लतामके जोडलन्हि।

सहीमे सजिमनके पहिने कोनो महत्व नहि देल जाइत छल। मुदा जखन रामदेब बाबा सजिमनके महत्व लऽ कऽ प्रवचन शुरु कएलन्हि ओकर मोल बढि गेल आ जनसमान्य लोकक घरमेमात्र नहि कोठा बला सभ घरमे सेहो ई जाए लागल।

सही प्रसादीक रुप जँ लताम ग्रहण कऽलए तऽ गाम-गाममे लतामक गाछ रोपाय लागत। एहि सँ जनकपुरमे प्रसादी तऽ भेटबे करत सँगहि जनकपुर क्षेत्रके ग्रीन एरिया बनयमे सेहो मदत पहुँचत। हम दू तिन वर्षक बिचमे दूबेर बिहारक समस्तीपुर एरियामे गेल छलहुँ। पहिने बहुतो खाली बन्जर जमिन देखने छलहुँ मुदा एहि बेर तऽ खाली जमीने नहि भेटल। ओ खाली जमिनमे अरनेबा रोपाएल छल। मुज्जफ्फरपुरमे अरनेबा जुसक कि कारखाना खुजल समस्तीपुरक खाली बन्जर जमीन हराभरा भऽ गेल। लताम जनकपुर क्षेत्रके सेहो हराभरा कऽ सकैत अछि। फेर ई अशुद्ध सेहो नहि होइत अछि। सरस्वतीक पुजाक प्रसादीमे लताम सेहो रहैत अछि। लताम आब सीमीत महिनाक फल सेहो नहि रहि गेल अछि। बरमसिया अर्थात बहुतो जाइतक लताम बरमसिया फरैत अछि।

एकबेर एकरा स्वीकार कऽकऽ देखियौ ने फेर ई राजदेवी पूजामे मात्र नहि जनकपुरक सभ पूजामे सभ मन्दिरमे। बहुत फाइदा आ जनकपुरके प्रतिष्ठा दऽ सकैत अछि। कोनो देवताके भात चढि सकैत अछि मुरही चढि सकैत अछि तऽ लताम किए नहि ? एहि पर जनकपुरक युवा क्लब, समाजसभ सोँचि सकैत अछि ?